माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

- कुरआने करीम की अ़ज़ीम सिफ़ात 3
- मोमिन खेती की त़रह़ होता है 6
- सूद के मफ़ासिद 16
- ज़िन्दगी कैसे बदलेगी ? 19
- ज़कात देने के फ़वाइद और न देने के नुक़्सानात 24

रोज़ी में बरक्त का वज़ीफ़ा

यकुम (1ST) रमज़ानुल मुबारक को मग़रिब की नमाज़ के बाद जो कोई 21 बार सूरतुल क़द्र पढ़े तो उस की रोज़ी में ऐसी बरकत होगी जैसे ऊंची जगह से पानी नीचे की त़रफ़ तेज़ी से आता है इस त़रह़ उस की त़रफ़ मालो दौलत तेज़ी से बढ़ेगा और यूं उस की तंगदस्ती दूर होगी।

तिलावते क़ुरआन से मरज़ में कमी होती है

ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन मुत़र्रफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरीज़ था जब उस के पास क़ुरआने पाक की तिलावत की जाती तो वोह बीमारी से इफ़ाक़ा महसूस करता, मैं उस के ख़ैमे में गया और उस से कहा कि आज मैं तुम्हें तन्दुरुस्त देख रहा हूं ! उस ने जवाब दिया कि मेरे पास क़ुरआने पाक की तिलावत की गई है। (التبیان فی آداب حملۃ القرآن للنووی، ص ۹۴)

बच्चे कीड़े मकोड़ों से महफ़ूज़ रहेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

55 बार (अव्वलो आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर ज़ैतून शरीफ़ के तेल पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नर्मी के साथ मल दिया जाए तो बेह़द मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कीड़े, मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस त़रह़ का पढ़ा हुवा तेल बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/995)

कमर के दर्द का रूहानी इलाज

फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान 41 बार सूरतुल फ़ातिह़ा पढ़िये, हर बार पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ भी पढ़िये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कमर के दर्द से नजात मिलेगी।

(बीमार आ़बिद, स. 37)

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल गुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस

कुरआने करीम की अ़ज़ीम सिफ़ात 3
मोमिन खेती की त़रह़ होता है 6

फ़ैज़ाने सीरत

आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी का इ़ज़्माई परेशानियों में अन्दाज़ 8

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

क्या ज़कात न देने वाले का सारा माल ह़राम हो जाता है ? मअ़ दीगर सुवालात 10

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

क़रीबी रिश्तेदार के जनाज़े के लिये एतिकाफ़ तोड़ना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 12

मज़ामीन

काम की बातें 14
सूद के मफ़ासिद 16
ज़िन्दगी कैसे बदलेगी ? 19
ज़िन्दगी दर्द से इ़बारत है 22
ज़कात देने के फ़वाइद और न देने के नुक़्सानात 24
जन्नत में महल दिलाने वाली नेकियां 26
नसीह़त 28
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 30

ताजिरों के लिये

अह़कामे तिजारत 31

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

अ़त़ाए नबवी बराए मौला अ़ली 33
ह़ज़रते महमूद बिन रबीअ़ और ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا 35
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 36

मुतफ़र्रिक़

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाएं (ख़जूर) 38
फ़ज़ाइले मक्का 40

क़ारिईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 42

"बच्चों का" माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

दीन आसान है / हुरूफ़ मिलाइये 46
पथ्थर मोम हो गया 47
रोज़ा क्यूं रखें ? 49
बच्चों को रोज़े की आ़दत कैसे डालें ? 51

"इस्लामी बहनों का" माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

ईवेन्ट्स और बेटियों के मामूलात 53
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 55

क़ुरआने करीम की अ़ज़ीम सिफ़ात

रब्बे रहीम की किताबे अ़ज़ीम क़ुरआने करीम की शानो अ़ज़मत के लिये इसी क़दर काफ़ी है कि येह ख़ालिक़े काइनात का कलाम है, अलबत्ता इस कलाम के औसाफ़ पर ग़ौर करें तो दिल में इस की शानो अ़ज़मत और ज़ियादा मुअक्कद हो जाती है। बाज़ औसाफ़ तो वोह हैं जो एक ही बार बयान हुए जब कि बाज़ औसाफ़ मानवी एतिबार से मुशाबहत रखते हैं लेकिन सियाक़ो सबाक़, तकरार और इख़्तिलाफ़े अल्फ़ाज़ उस के माना व औसाफ़ में इज़ाफ़ा व तनव्वोअ़ पैदा कर देते हैं।

ज़ैल में क़ुरआने करीम के चन्द औसाफ़ मुलाहज़ा कीजिये :

क़ुरआन, एक बे ऐ़ब और शको शुबा से पाक किताब

येह कलामे इलाही हर त़रह़ के ऐ़ब व शक से पाक है, क़ुफ़्फ़ारे अ़रब बड़े बड़े अदीब होने के बा वुजूद भी इस में कोई ऐ़ब न निकाल सके। क़ुरआने करीम ने इस कमाल को कुछ यूं बयान फ़रमाया : ﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛؕ فِیْهِ ۛؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं।[1]

क़ुरआने करीम में किसी क़िस्म की कोई कजी नहीं, मालूमात में हेर फेर नहीं, तालीमात में बे एतिदाली नहीं, सूरतुल कहफ़ में फ़रमाया : ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًاؕ(۱) قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَ یُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उस में अस्लन कजी न रखी (ज़रा भी टेढ़ा पन न रखा) अ़द्ल वाली किताब कि अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से डराए और ईमान वालों को जो नेक काम करें बिशारत दे कि उन के लिये अच्छा सवाब है।[2]

क़ुरआने करीम की मालूमात व तालीमात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, उन में इख़्तिलाफ़ात होते तो मुख़ालिफ़ीन कब का शोर मचा चुके होते, माज़ी क़रीब और अ़सरे ह़ाज़िर के जो नौ मौलूद मुह़क़्क़िक़ीन व मुस्तशरिक़ीन क़ुरआने करीम की एक आयत को पढ़ कर दूसरे पहलू को छोड़ कर एतिराज़ात गढ़ते हैं वोह बे बुन्याद और झूट हैं। क़ुरआने करीम ने तो खुला चेलेन्ज दिया है कि ﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَ لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَیْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِیْهِ اخْتِلَافًا كَثِیْرًا(۸۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में और अगर वोह ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते।[3]

क़ुरआन, सीधे और कामयाबी के ज़ामिन रास्ते का निसाब

क़ुरआने करीम की एक अ़ज़ीम ख़ासिय्यत है कि येह राहे रास्त की त़लब व त़म्अ़ रखने वालों को सीधे रास्ते पर लाता है, जो सच्ची त़लब रखता है उसे कामिल हिदायत देता है, यूं कहिये कि क़ुरआन सीधे और कामयाबी के ज़ामिन रास्ते का निसाब है, सूरतुल बक़रह में ﴿هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ(۲)﴾ फ़रमाया गया और सूरए बनी इसराईल में फ़रमाया :

﴿اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ یَهْدِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَقْوَمُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक येह कुरआन वोह राह दिखाता है जो सब से सीधी है।(4)

कुरआन, इज्माल व तफ़्सील का इम्तिज़ाज

हर ज़बान और तेहज़ीब में येह उस्लूब पाया जाता है कि कलाम व बयान में इख़्तिसार भी हो और जामेइय्यत भी, इज्माल भी हो और तफ़्सील भी, लेकिन येह उस्लूब जिस हुस्नो खूबी के साथ कुरआने करीम में मिलता है, इस की मिसाल नहीं, कुरआने करीम की इस खूबी को खुद कुरआन ने बयान फ़रमाया है कि ﴿الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰیٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِیْمٍ خَبِیْرٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं फिर तफ़्सील की गईं हिक्मत वाले ख़बरदार की तरफ़ से।(5) एक मक़ाम पर फ़रमाया : ﴿كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰیٰتُهٗ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : एक किताब है जिस की आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं।(6)

कुरआन, अदख़ाले बातिल से महफ़ूज़े कामिल

कुरआने करीम में कोई एक लफ़्ज़ भी न अपनी तरफ़ से शामिल कर सकता है और न ही निकाल सकता है, कुछ बद बातिन अपनी कज फ़हमी व कम अक़्ली के बाइस येह कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह कुरआन किसी ईसाई या यहूदी से मिल कर बनाया है مَعَاذَاللہ, और बाज़ बे अक़्ल तो आज भी कहते हैं कि कुरआन में ग़लती है مَعَاذَاللہ। कुरआने करीम नुज़ूल के वक़्त भी महफ़ूज़ था और बादे नुज़ूल भी, इस के अल्फ़ाज़ भी महफ़ूज़ हैं और मआनी भी, अगर कहीं भी कोई कमी होती तो इस्लाम की तालीमात दूसरे मज़ाहिबे ग़ैरे हक़्क़ा की तरह बिखरी और इख़्तिलाफ़ात से भरी होतीं, रब्बे करीम फ़रमाता है : ﴿لَا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बातिल उस के सामने और उस के पीछे (किसी तरफ़) से भी उस के पास नहीं आ सकता। (वोह कुरआन) उस की तरफ़ से नाज़िल किया हुवा है जो हिक्मत वाला, तारीफ़ के लाइक़ है।(7)

यानी कुरआने मजीद बातिल की रसाई से दूर है और किसी तरह और किसी जिहत से भी बातिल उस तक राह नहीं पा सकता, येह फ़र्क़, तब्दीली और कमी व ज़ियादती से महफ़ूज़ है और शैतान उस में तसर्रुफ़ करने की कुदरत नहीं रखता, जिस चीज़ के हक़ होने का कुरआने मजीद हुक्म फ़रमा दे उसे कोई बातिल नहीं कर सकता और जिस के बातिल होने का कुरआने करीम हुक्म फ़रमा दे उसे कोई हक़ क़रार नहीं दे सकता और कुरआने अज़ीम उस रब्बे करीम की तरफ़ से नाज़िल किया हुवा है जो हिक्मत वाला और तारीफ़ के लाइक़ है।(8)

सूरतुल कहफ़ में फ़रमाया : ﴿لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं और हरगिज़ तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे।(9)

सूरतुल हिज्र में फ़रमाया : ﴿اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद उस के निगहबान हैं।(10)

कुरआन बाइसे बरकत व रहमत

कुरआने करीम एक बा बरकत किताब है। उस की बरकात हिस्सी और ग़ैर हिस्सी दोनों तरह हैं। येह कुफ़्रो शिर्क के अमराज़ से बचा कर ईमान देता है और बद अख़्लाक़ी से बचा कर मुहज़्ज़ब बनाता है। इसी तरह येह जिस्मानी बीमारियों में भी शिफ़ा देता और असरात बद से हिफ़ाज़त करता है, सूरतुल अन्आम में है : ﴿وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी।(11) ﴿وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَ اتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह बरकत वाली किताब हम ने उतारी तो इस की पैरवी करो और परहेज़गारी करो कि तुम पर रहम हो।(12)

सूरतुल अम्बिया में है : ﴿وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह है बरकत वाला ज़िक्र कि हम ने उतारा तो क्या तुम इस के मुन्किर हो।(13)

सूरए बनी इसराईल में है : ﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम कुरआन में उतारते हैं वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है।(14)

कुरआन, कुफ़्र व गुमराही से निकालने वाला

कुरआने करीम कुफ़्र व गुमराही के अन्धेरों से निकाल कर ईमान व हिदायत के नूर की त़रफ़ ले जाता है, चुनान्चे, फ़रमाया : ﴿الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِۙ(۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को अन्धेरियों से उजाले में लाओ उन के रब के हुक्म से उस की राह की त़रफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है।(15)

सूरतुल माइदह में फ़रमाया : ﴿يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उस से हिदायत देता है उसे जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अन्धेरियों से रौशनी की त़रफ़ ले जाता है अपने हुक्म से।(16)

सूरतुल ह़दीद में फ़रमाया :

﴿هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है कि अपने बन्दे पर रौशन आयतें उतारता है कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की त़रफ़ ले जाए।(17)

सूरतुत्त़लाक़ में फ़रमाया : ﴿رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह रसूल कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अन्धेरियों से उजाले की त़रफ़ ले जाए।(18)

कुरआन, अहले अ़क़्ल के लिये अ़ज़ीम ख़ज़ाना

कुरआने करीम ऐसी ला जवाब किताब है कि जिन की अ़क़्ल सलामत है वोह उस से नसीह़त व ख़ैर पाते हैं, जो कुरआने करीम को पढ़ और समझ कर ह़क़ न जान सका वोह ह़क़ीक़तन अ़क़्ल ही से मह़रूम है, क्यूंकि ऐसे लोग कुरआन से ह़क़ की तलाश के बजाए किसी और तलाश में रहते हैं : ﴿هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَ مَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ(۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम पर येह किताब उतारी उस की कुछ आयतें साफ़ माना रखती हैं वोह किताब की अस्ल हैं और दूसरी वोह हैं जिन के माना में इश्तिबाह है वोह जिन के दिलों में कजी है वोह इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते हैं गुमराही चाहने और उस का पहलू ढूंढ़ने को और उस का ठीक पहलू अल्लाह ही को मालूम है और पुख़्ता इ़ल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब के पास से है और नसीह़त नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले।(19)

सूरतुर्रअ़द में फ़रमाया : ﴿اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰىؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِۙ(۱۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जो जानता है जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा ह़क़ है वोह उस जैसा होगा जो अन्धा है नसीह़त वोही मानते हैं जिन्हें अ़क़्ल है।(20)

सूरए ص में फ़रमाया : ﴿كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْۤا اٰيٰتِهٖ وَ لِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ(۲۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी बरकत वाली ताकि उस की आयतों को सोचें और अ़क़्लमन्द नसीह़त मानें।(21)

सूरतुल मोमिन में फ़रमाया : ﴿هُدًى وَّ ذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ(۵۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अ़क़्लमन्दों की हिदायत और नसीह़त को।(22) बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

---

(1) پ1، البقرۃ:2 (2) پ15، الکھف:1، 2 (3) پ5، النسآء:82 (4) پ15، بنیٓ اسرآءیل:9 (5) پ11، ھود:1 (6) پ24، حٰمٓ السجدۃ:3 (7) پ24، حٰمٓ السجدۃ:42 (8) صراط الجنان بحوالہ خازن، فصلت، تحت الآیۃ:42، 4/87- تفسیر کبیر، فصلت، تحت الآیۃ:42، 9/568 ملتقطاً (9) پ15، الکھف:27 (10) پ14، الحجر:9 (11) پ7، الانعام:92 (12) پ7، الانعام:155 (13) پ17، الانبیآء: 50 (14) پ15، بنیٓ اسرآءیل:82 (15) پ13، ابرٰھیم:1 (16) پ6، المآئدۃ:16 (17) پ27، الحدید:9 (18) پ28، الطلاق:11 (19) پ3، اٰل عمرٰن:7 (20) پ13، الرعد:19 (21) پ23، صٓ:29 (22) پ24، المؤمن:54۔

मोमिन खेती की त़रह़ होता है

मुस्लिम शरीफ़ में है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ. تُفِيئُهَا الرِّيَاحُ. تَصْرَعُهَا مَرَّةً وَتَعْدِلُهَا. حَتّٰى يَأْتِيَهُ اَجَلُهُ. وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ مَثَلُ الْاَرْزَةِ الْمُجْذِيَةِ الَّتِي لَا يُصِيبُهَا شَيْءٌ حَتّٰى يَكُونَ انْجِعَافُهَا مَرَّةً وَاحِدَةً

तर्जमा : मोमिन की मिसाल खेती की नर्म टहनी की त़रह़ है, जिसे हवाएं उलटती पलटती रहती हैं, कभी उस को झुका देती है और कभी उस को सीधा कर देती है यहां तक कि उसे मौत आ जाती है और मुनाफ़िक़ की मिसाल सनूबर के दरख़्त की त़रह़ है, जिसे कोई मुसीबत नहीं पहुंचती ह़त्ता कि वोह एक ही बार जड़ से उखड़ जाता है।[1]

इस ह़दीसे रसूल को इमाम मुस्लिम के इलावा इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, इमाम बुख़ारी, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, इमाम तिर्मिज़ी, इमाम इब्ने ह़ब्बान और इमाम बग़वी (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) जैसे जलीलुल क़द्र मुह़द्दिसीन ने रिवायत किया है।[2]

शर्हे ह़दीस रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (उन पर हमारे मां बाप, जानो माल और इ़ज़्ज़तो आबरू क़ुरबान) की ज़बाने अक़्दस से निकलने वाली हर बात फ़साह़त व बलाग़त की बुलन्दियों पर फ़ाइज़ होती है और हमारी ज़िन्दगियों में मुस्बत तब्दीली के लिये मश्अ़ले राह होती है। मज़्कूरा ह़दीसे पाक में भी एक ह़क़ीक़त को समझाया गया है जिस के लिये मोमिन की मिसाल खेती और ग़ैर मुस्लिम व मुनाफ़िक़ की मिसाल सनूबर से दी गई है।

क़ुरआनी व नबवी उस्लूब मिसाल दे कर समझाना क़ुरआनी और नबवी उस्लूब है जिस से बात अच्छी त़रह़ समझ में आ जाती है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुरआने पाक में तौह़ीद व कुफ़्र, ह़क़ व बात़िल, नूरे इलाही, अ़ज़्मते क़ुरआन, मुवह़्ह़िद व मुश्रिक, गुमराही, ह़ुक्मे इलाही की ना फ़रमानी करने वालों, मुख़्लिस और रियाकार के अ़मल वग़ैरा को मिसाल से बयान किया और फ़रमाया : ﴿وَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ(۲۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह समझें।[3]

इसी त़रह़ मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी बहुत से इरशादात में मिसालें बयान फ़रमाईं जैसे एक मक़ाम पर मोमिन की मिसाल खजूर के दरख़्त से दी और मुसलमानों के आपस के तअ़ल्लुक़ की मिसाल एक जिस्म से दी।

मोमिन को खेती की मिस्ल कहने की वज्ह

आप ने देखा होगा कि नर्म खेती को जब हवा उलटती है तो वोह बिछ जाती है अकड़ती नहीं और जब हवा उसे सीधा करती है तो वोह सीधी खड़ी हो जाती है इसी त़रह़ मोमिन के पास अगर ह़ुक्मे इलाही आता है तो उस की तामील करता है और उस पर राज़ी रहता है, अगर उस के पास भलाई आती है तो वोह उस पर ख़ुश होता है और रब्बे करीम का शुक्र करता है, अगर उस पर कोई मुसीबत आती है तो सब्र करता है और सवाब की उम्मीद रखता है, जब वोह मुसीबत उस से दूर हो जाती है तो वोह नोर्मल हो जाता है और शुक्र अदा करता है।[4]

मुनाफ़िक़ व ग़ैर मुस्लिम को सनूबर की मिस्ल कहने की वज्ह सनूबर, मख़रूती पत्तों वाला एक दरख़्त है जो बड़ी सुस्त रवी से (एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ 50 साल में तक़रीबन तीन फ़िट) बढ़ता है और उस की उ़म्र बसा औक़ात हज़ारों साल होती है, तेज़ हवाएं उस पर कुछ असर नहीं करतीं बल्कि वोह सीधा खड़ा रहता है लेकिन अचानक

उखड़ कर गिर जाता है, इसी त़रह़ ग़ैर मुस्लिम पर मुसीबतें नहीं आतीं बल्कि उसे दुन्या में आसानियां दी जाती हैं मगर उसे आख़िरत में शदीद दुश्वारियों का सामना होगा। अल्लाह जब ग़ैर मुस्लिम को हलाक करता है तो उस की मौत निहायत सख़्त होती है और उस की रूह़ दर्दनाक त़रीक़े से जिस्म से जुदा होती है।[5]

ह़दीसे पाक का मत़लब ह़दीस का मत़लब येह है कि मोमिन को अपने जिस्म, अहले ख़ाना या अपने माल में बहुत ज़ियादा रन्जो अलम पहुंचते हैं जो उस के गुनाहों को मिटाते हैं और दरजात की बुलन्दी का सबब बनते हैं जब कि ग़ैर मुस्लिम को बहुत कम मुसीबतें पहुंचती हैं अगर पहुंचती भी हैं तो उस के किसी गुनाह को नहीं मिटातीं बल्कि क़ियामत के दिन ग़ैर मुस्लिम के सारे गुनाह उस के आमाल नामे में मौजूद होंगे।[6]

मिरआतुल मनाजीह़ में है : मोमिन की दुन्यवी तक्लीफ़ें आख़िरत की राह़त का सबब हैं, मुनाफ़िक़ की दुन्यवी राह़तें आख़िरत की मुसीबतों का ज़रीआ़, येह भी क़ाइदा अक्सर येह है, वरना मोमिन दुन्या में कितना ही आराम से रहे اِنْ شَآءَاللہ आख़िरत के दाइमी अ़ज़ाब से बचेगा, ग़ैर मुस्लिम दुन्या में कितनी ही मुसीबत से रहे मगर आख़िरत में नजात नहीं पा सकता। रूहुल बयान में एक जगह फ़रमाया कि एक मुसीबत ज़दा काफ़िर ने किसी ऐ़श वाले मोमिन से कहा कि तुम्हारे नबी (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया है दुन्या मोमिन की जेल है और ग़ैर मुस्लिम की जन्नत। मगर यहां तुम जन्नत में हो और मैं जेल में, उन्हों ने फ़ौरन जवाब दिया कि तू आख़िरत की मुसीबतों को देख कर दुन्या की इन तकालीफ़ को जन्नत समझेगा और हम वहां की राह़तों को देख कर यहां के ऐ़श को जेल समझते हैं और समझेंगे, नीज़ हम इन ऐ़शों में दिल नहीं लगाते, जेल अगर्चे ए क्लास हो मगर जेल है और तुम यहां से जाना नहीं चाहते, हमारे नबी की ह़दीस बिल्कुल सह़ीह़ है। صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم।[7]

मुसीबत ज़दों की अक़्साम इमाम अबुल फ़रज इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुसीबत ज़दों की चार क़िस्में हैं, पहले वोह लोग जिन की नज़र मुसीबत (पर सब्र करने) के सवाब पर होती है, उन के लिये मुसीबत सहना आसान हो जाता है, दूसरे वोह लोग जो इस बात को पेशे नज़र रखते हैं मालिके काइनात ने अपनी मिल्क में तसर्रुफ़ किया है तो वोह सरे तस्लीम ख़म कर लेते हैं और मुसीबत पर शिक्वा नहीं करते, तीसरे वोह लोग जिन्हें मह़ब्बते इलाही मसाइब दूर होने के मुत़ालबे से रोकती है, येह तीसरी क़िस्म पहली दो क़िस्मों से आला होती है, और चौथी क़िस्म के लोग वोह हैं जिन्हें मुसीबत में लज़्ज़त मिलती है येह सब से आला क़िस्म है।[8] अगर हम इन बातों को पेशे नज़र रखें तो मुसीबत पर सब्र करना आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللہ

मोमिन के लिये इशारा इस ह़दीस में मोमिन के लिये इशारा है कि वोह ख़ुद को दुन्या में आ़रिज़ी समझे जिसे लज़्ज़तों और ख़्वाहिशात की तक्मील से अलग थलग रहना है, इस के बर अ़क्स ख़ुद को ह़ादिसों और आफ़ात का सामना करने के लिये तय्यार रखना चाहिये जो (सब्र करने पर) इन्सान की आख़िरत बेहतर करती हैं और उसे दाख़िले जन्नत करवाती हैं।[9]

अ़मल की कमी मुसीबत के ज़रीए़ पूरी की जाती है फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब किसी बन्दे के लिये अल्लाह पाक की त़रफ़ से कोई दर्जा मुक़द्दर हो चुका हो जहां तक येह अपने अ़मल से नहीं पहुंच सकता तो अल्लाह पाक उसे उस के जिस्म या माल या औलाद की आफ़त में मुब्तला कर देता है फिर उसे इस पर सब्र भी देता है यहां तक कि उसे उस दर्जे तक पहुंचा देता है जो अल्लाह ने उस के लिये मुक़द्दर फ़रमाया है।[10]

आ़शिक़ाने रसूल ! जिस त़रह़ हम ख़ुशी और आसानी के मुन्तज़िर होते हैं, उसी त़रह़ हमें रन्जो मुसीबत का सामना करने के लिये भी तय्यार रहना चाहिये। अल्लाह पाक हमें साबिरो शाकिर बनाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुसीबत पर सब्र के फ़ज़ाइल और त़रीक़ा जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की इन मत़बूआ़त को पढ़ लीजिये : "मेन्डक सुवार बिच्छू, ख़ुदकुशी का इ़लाज, अपनी मुसीबत दूसरे को बताना कैसा ? सब्रे जमील किसे कहते हैं ?"

---

(1) مسلم، ص1156، حدیث:7095(2) مصنف عبد الرزاق، 10/200، حدیث: 4797- مسند احمد، 13/220، حدیث:7814- بخاری، 4/3، حدیث:5643- ترمذی، 4/396، حدیث: 2875- ابن حبان، 4/251، حدیث: 2904- شرح السنہ للبغوی، 3/190، حدیث: 1431(3) پ13، ابراہیم:25(4) دیکھئے: ارشاد الساری، 12/436، تحت الحدیث: 5643(5) دیکھئے: ارشاد الساری، 12/436، تحت الحدیث: 5643(6) شرح مسلم للنووی، 17/153(7) مراٰۃ المناجیح، 2/412 (8) دیکھئے: ارشاد الساری، 12/436، تحت الحدیث: 5643(9) دیکھئے: ارشاد الساری، 12/436، تحت الحدیث: 5643(10) ابو داؤد، 3/246، حدیث: 3090۔

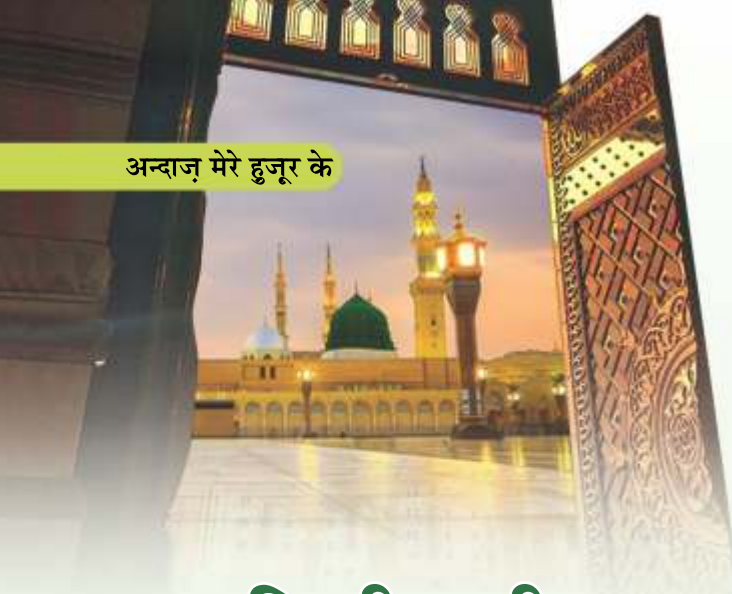

आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी ﷺ

का इज्तिमाई परेशानियों में अन्दाज़

अल्लाह के आख़िरी नबी ﷺ ने जब एलाने नबुव्वत फ़रमाया तो जैसे जैसे ईमान लाने वालों की तादाद बढ़ती गई, आज़माइशों, परेशानियों और मुसीबतों में भी उतनी ही तेज़ी से इज़ाफ़ा होता चला गया, शम्ए रिसालत के इन परवानों ने इज्तिमाई परेशानियों में रसूले अकरम ﷺ की निगाहे नबुव्वत से फ़ैज़ पा कर अन्धेरों में रौशनी देखने का हुनर सीखा, ज़बाने रिसालत से अदा होने वाले अल्फ़ाज़ बेचैन कर देने वाली मुश्किलात से नजात का सबब बने, मुसीबतों के तूफ़ानों में साबित क़दम कैसे रहा जाए ? ना उम्मीदी से नजात कैसे ह़ासिल की जाए ? और इन जैसी कई आज़माइशों के बारे में अन्दाज़े मुस्त़फ़ा से राहनुमाई मिली, आइये ! उन में से चन्द अन्दाज़ मुलाह़ज़ा करते हैं :

एलाने नबुव्वत से पांच साल पहले का वाक़िआ़

अल्लाह के आख़िरी नबी ﷺ के एलाने नबुव्वत से पांच साल पहले शदीद बारिश के सबब काबतुल्लाह शरीफ़ की इमारत को बहुत नुक़्सान पहुंचा, लिहाज़ा कुरैश के तमाम क़बाइल ने येह फ़ैसला किया कि अज़ सरे नौ इमारत बनाई जाए यूं येह काम शुरूअ़ हो गया। रसूले अकरम ﷺ भी इस नई तामीर में अ़मलन शरीक हुए। जब तामीर मुकम्मल हुई और ह़जरे अस्वद रखने का मरह़ला आया तो क़बीलों का आपस में इख़्तिलाफ़ हो गया, हर क़बीला येह चाहता था कि ह़जरे अस्वद को नस्ब करने का एज़ाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ उसे मिले और इस रास्ते में जो रुकावट बने तल्वार के ज़ोर पर बात की जाए। मुआ़मला वक़्ती तौ़र पर टालने के लिये एक शख़्स ने येह तज्वीज़ दी : कल जो शख़्स सुब्ह़ सवेरे सब से पहले ह़रमे मक्का में दाख़िल हो उसी से हम अपना फ़ैसला करवाएंगे। वोह जो फ़ैसला दे सब क़बाइल उसे तस्लीम करेंगे। चुनान्चे इस पर तमाम क़बीलों का इत्तिफ़ाक़ हो गया।

नबिय्ये अकरम ﷺ अगली सुब्ह़ सब से पहले ह़रमे मक्का में दाख़िल हुए, आप को पहले देख कर बाद में आने वालों ने बहुत ख़ुशी का इज़्हार किया, सब कहने लगे : येह अमीन हैं, येह जो भी फ़ैसला फ़रमाएंगे हम तस्लीम करेंगे।

इन लोगों की छोटी छोटी बातों पर क़त्लो ग़ारत गरी की तारीख़ को सामने लाइये और इस आज़माइश की संगीनी का अन्दाज़ा कीजिये और आज़माइश से निकलने के लिये रह़मते आ़लम ﷺ का अन्दाज़े ह़िक्मत मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे आप ने फ़रमाया : जो क़बीले ह़जरे अस्वद रखने का तक़ाज़ा करते हैं वोह अपना एक एक सरदार चुन लें। फिर आप ने अपनी चादर बिछाई, उस पर ह़जरे अस्वद रखा और सरदारों से फ़रमाया : वोह सब मिल कर इस चादर को थाम कर ह़जरे अस्वद को उठाएं। सब ने ऐसे ही किया और जब ह़जरे अस्वद अपने मक़ाम तक पहुंच गया तो आप ने बा बरकत हाथों से ह़जरे अस्वद उठा कर उस की जगह रख दिया। आप के इस अन्दाज़े ह़िक्मत की बरकत से जंगो जिदाल का ख़त़रा टल गया।[1]

जंगे बद्र कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम के सबब मुसलमानों ने मक्का से मदीना की त़रफ़ हिजरत की लेकिन इस के बा वुजूद कुफ़्फ़ार लूटमार मचा कर और कभी लड़ भिड़ कर मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते।

कुफ़्फ़ार के बड़े क़ाफ़िले की तिजारती सामान के साथ शाम से मक्का वापसी की ख़बर मदीना शरीफ़ पहुंची तो रसूले अकरम ﷺ ने कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से मुसलमानों के लिये खड़ी की जाने वाली इज्तिमाई परेशानियों का ह़ल येह तज्वीज़ फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार के उस क़ाफ़िले पर ह़म्ला किया जाए यूं शाम से आने वाला माले तिजारत रुक जाएगा जिस की वज्ह से कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े सरदार सुल्ह़ पर मजबूरन आमादा

हो जाएंगे। जंगे बद्र में अगर्चे मुसलमानों की तादाद 313 थी, इस के बा वुजूद कुफ़्फ़ार को बहुत नुक़्सान पहुंचा और मुसलमानों को उरूज नसीब हुवा।[2] आज़माइश के इस मौक़अ़ पर अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अन्दाज़ बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : 17 रमज़ान 2 हिजरी जुमुआ़ की रात थी तमाम फ़ौज तो आराम व चैन की नींद सो रही थी मगर एक सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात थी जो सारी रात ख़ुदावन्दे आ़लम से लौ लगाए दुआ़ में मसरूफ़ थी। सुब्ह़ नमूदार हुई तो आप ने लोगों को नमाज़ के लिये बेदार फ़रमाया फिर नमाज़ के बाद क़ुरआन की आयाते जिहाद सुना कर ऐसा लरज़ा ख़ेज़ और वल्वला अंगेज़ वाज़ फ़रमाया कि मुजाहिदीने इस्लाम की रगों के ख़ून का क़त़रा क़त़रा जोश व ख़रोश का समुन्दर बन कर तूफ़ानी मौजें मारने लगा और लोग मैदाने जंग के लिये तय्यार होने लगे।[3]

जंगे उहुद जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार का जो नुक़्सान हुवा उस ने उन्हें इन्तिक़ाम पर उभारा अब की बार उन्हों ने फ़ैसला किया कि मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ला किया जाए और येही ग़ज़्वए उहुद का सबब बना।

लश्कर के पीछे एक तंग रास्ता निकलता था जहां से कुफ़्फ़ार का पीछे से ह़म्ला करने का इम्कान था चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस आज़माइश से बचने के लिये वहां पचास तीर अन्दाज़ मुक़र्रर फ़रमाए थे और उन को येह ताकीद की थी कि कुछ भी हो जाए अपनी जगह से मत हटना। जब जंग शुरूअ़ हुई और जब तक तीर अन्दाज़ इस ताकीद पर अ़मल पैरा रहे तो मुसलमान ग़ालिब रहे।

ग़ज़्वए अह़ज़ाब ग़ज़्वए अह़ज़ाब का मौक़अ़ है, मुसलमानों को मिटाने के लिये कुफ़्फ़ार के कई क़बीले मुत्तह़िद हो कर आमादए जंग हुए और अपनी फ़ौज के साथ मदीने की जानिब बढ़ने लगे। सूरए अह़ज़ाब की येह आयात उस जंग की हौलनाकी वाज़ेह़ कर रही हैं : ﴿اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا (۱۰) هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا (۱۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें और दिल गलों के पास आ गए और तुम अल्लाह पर त़रह़ त़रह़ के गुमान करने लगे वोह जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई और ख़ूब सख़्ती से झन्जोड़े गए।[4]

आज़माइश की इस घड़ी में रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ عَنْه के मश्वरे से मदीना के इर्द गिर्द ख़न्दक़ खुदवाई और इस खुदाई में ख़ुद भी ब नफ़्से नफ़ीस शरीक हुए। इस सख़्त तरीन आज़माइश में रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े करम मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबा ने ख़न्दक़ खोदी तो भूक की शिद्दत से सब ने पेट पर पथ्थर बांध रखे थे। आप ने फ़रमाया : हमें सलमान के पास ले चलो। वहां गए तो एक चट्टान टूटने का नाम नहीं ले रही थी। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे लिये छोड़ दो, इस पर पहले मैं ज़र्ब लगाता हूं, आप ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर उस पर ज़र्ब लगाई तो उस का एक तिहाई ह़िस्सा टूट गया। फिर आप ने मुश्किल की इस घड़ी में ग़ैब की ख़बर देते हुए फ़रमाया : अल्लाहु अक्बर ! रब्बे काबा की क़सम ! रूम के मह़ल्लात (यानी अ़नक़रीब इसे मुसलमान फ़त्ह़ करेंगे) फिर आप ने दूसरी ज़र्ब लगाई तो एक और टुकड़ा अलग हो गया। आप ने फ़रमाया : अल्लाहु अक्बर ! रब्बे काबा की क़सम ! फ़ारिस के मह़ल्लात (यानी अ़नक़रीब इसे मुसलमान फ़त्ह़ करेंगे)।[5]

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आज़माइश के इस मौक़अ़ पर भी मुस्तक़्बिल की कामयाबियों का बयान फ़रमा कर एक नया ह़ौसला दिया, रह़मते ख़ुदावन्दी से मुसलमानों को ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मौक़अ़ पर भी कामयाबी नसीब हुई वोह दिन भी आया कि जब रूम व फ़ारिस के मह़ल्लात मुसलमानों ने फ़त्ह़ किये।

अल्लाह से उम्मीद से भरपूर येह अन्दाज़ अगर हम भी अपना लें और यूं ज़ेहन बना लें कि **"अल्लाह ने चाहा तो बुरे दिन जल्द ख़त्म हो जाएंगे"** तो बे चैन दिल को क़रार नसीब होगा। اِنْ شَآءَ الله

एक मुल्क से ले कर घर और ख़ानदान तक में कमज़ोर त़बक़ात का ख़याल रखने के येह अन्दाज़े मुस्त़फ़ा अपनाए जाएं तो वहां आज़माइशें और मुश्किलात से सब्रो शुक्र के साथ निकलना आसान होगा, ज़रूरत है तो सिर्फ़ अ़मल की, अल्लाह करीम हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

(1) سیرت ابن ہشام، ص79 ملخصاً (2) شرح الزرقانی علی المواہب، 2/326 تا 256 ملخصاً
(3) سیرت مصطفیٰ، ص218 (4) پ21، الاحزاب: 10، 11 (5) معجم کبیر للطبرانی، 11/297، حدیث: 12056۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 क्या ज़कात न देने वाले का सारा माल ह़राम हो जाता है ?

सुवाल : क्या फ़र्ज़ ज़कात न देने वाले का सारा माल ह़राम हो जाता है ? अगर ऐसा है तो क्या उस के साथ खाना पीना जाइज़ है ?

जवाब : फ़र्ज़ होने की सूरत में ज़कात न देने वाला अगर्चे सख़्त गुनहगार है, मगर उस का माल ह़राम नहीं और न उस के साथ खाना पीना ह़राम है।

2 यौमे उ़र्स के इलावा ईसाले सवाब करना ?

सुवाल : 21 रमज़ानुल मुबारक मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का यौमे शहादत है। क्या उसी दिन ईसाले सवाब करना ज़रूरी है या किसी दूसरे दिन भी कर सकते हैं ?

जवाब : पूरा साल ईसाले सवाब कर सकते हैं, अलबत्ता मुसलमानों का त़रीक़ा है कि ख़ास विसाल या शहादत वाले दिन ईसाले सवाब कर के उ़र्स मनाया जाए जो बिल्कुल जाइज़ और सवाब का बाइस है, लिहाज़ा उस दिन ख़ुसूसिय्यत के साथ ईसाले सवाब करना चाहिये।

3 क्या 12 बजे मस्जिद जाने से जिन्नात पटख़ देते हैं ?

सुवाल : कुछ लोगों का येह नज़रिय्या है कि दिन या रात में जब 12 बजें उस वक़्त कुछ लिखना, पढ़ना या मस्जिद में जाना नहीं चाहिये, वरना जिन्नात पटख़ देते हैं। क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : रमज़ान शरीफ़ में मोतकिफ़ीन दिन रात मस्जिद में रहते हैं और रोज़ाना दो मरतबा 12 बजे का वक़्त आता है। अभी तक तो किसी 12 बजे पढ़ने या लिखने वाले मोतकिफ़ को जिन्नात ने पटख़ा हो ऐसा सुना नहीं। बस येह सब लोगों की चलाई हुई बातें हैं। जिस को जो समझ आता है बोल रहा होता है।

4 जान का सदक़ा किस चीज़ से दिया जाए ?

सुवाल : सदक़ा किस त़रह़ किया जाए जिस से बीमारी दूर हो जाए ?

जवाब : फ़तावा रज़विय्या में है : शीरीनी (यानी मीठी चीज़) या खाना फ़ुक़रा को खिलाएं तो सदक़ा है और अक़ारिब को (यानी रिश्तेदारों को खिलाएं) तो सिलए रह़म (यानी रिश्तेदारों से अच्छा बरताव है) और अह़बाब को (यानी दोस्तों को खिलाएं) तो ज़ियाफ़त (यानी उन की दावत है)। और येह तीनों बातें (यानी फ़क़ीर को खिलाना, रिश्तेदारों को खिलाना और दोस्तों को खिलाना) मूजिबे नुज़ूले रह़मत (यानी रह़मत नाज़िल होने) व दफ़्ए़ बला व मुसीबत (यानी बलाएं और मुसीबतें दफ़्अ़ होने का सबब) हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं :) येही ह़ाल बकरी ज़ब्ह़ कर के खिलाने का है। मगर तजरिबे से साबित हुवा है कि जान का सदक़ा देना ज़ियादा नफ़्अ़ रखता है (यानी बकरी ज़ब्ह़ कर के खिलाएं तो ज़ियादा फ़ाएदा होता है और बलाएं तेज़ी से जाती हैं)। (देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 24/185,186) अलबत्ता येह ज़रूरी नहीं कि ख़ुद मरीज़ ज़ब्ह़ करे, बल्कि जिसे जानवर दिया उस से भी कहा जा सकता है कि वोह जानवर को ज़ब्ह़ कर दे।

5 बिजली के मीटर की रीडिंग कम करवाना कैसा ?

सुवाल : बिजली का मीटर रीडर मीटर चैक करने के लिये आता है तो बाज़ लोग माहाना तौ़र पर उसे कुछ पैसे दे कर अपने मीटर की रीडिंग कम करवाते हैं, क्या इस त़रह़ करना दुरुस्त है ?

जवाब : मीटर रीडिंग कम करने और करवाने वाले दोनों गुनाहगार हैं । लेने वाले के ह़क़ में वोह रक़म ह़राम है लिहाज़ा तौबा करे और जिस से वोह रक़म ली है उसे वापस करे और उस का जितना भी बिल बनता हो और जो पिछला मुआ़फ़ किया हो वोह सब दियानत दारी के साथ मुकम्मल बना कर दे । नीज़ जिस ने मीटर की रीडिंग कम करवाने के लिये रक़म दी है वोह भी तौबा करे और जो भी बिल आता हो उस के मुत़ाबिक़ ह़िसाब लगा कर रक़म वहां जम्अ़ करवाए जहां जम्अ़ करवानी होती है ताकि कोई ख़ुर्द बुर्द न कर सके।

6 शैत़ान की पैरवी

सुवाल : शैत़ान की पैरवी करने से क्या मुराद है ?

जवाब : शैत़ान की पैरवी करने से मुराद उस के वस्वसों पर अ़मल करना है, यानी जो शैत़ान बोले वैसा करना येह शैत़ान की पैरवी करना कहलाता है । जैसे कहा जाता है : **''नक़्शे क़दम पर चलना''** जब हम मिट्टी पर क़दम रखते हैं तो उस पर क़दम का नक़्श बन जाता है लेकिन इस से मुराद येह नहीं होता कि उस क़दम के निशान पर क़दम रख कर चलना बल्कि येह एक मुह़ावरा है जिस का मत़लब होता है जैसा अ़मल फ़ुलां शख़्स करता है वैसा अ़मल करना ।

7 चारपाई पर जूता रखना कैसा ?

सुवाल : क्या नया जूता चारपाई पर रखने से घर में लड़ाई होती है ?

जवाब : जूता नया हो या पुराना, चारपाई पर रखने से लड़ाई नहीं होती ।

8 क्या हाथ में तस्बीह़ रखना रियाकारी है ?

सुवाल : क्या हाथ में तस्बीह़ रखना रियाकारी है ?

जवाब : हाथ में तस्बीह़ रखना रियाकारी नहीं, अलबत्ता हाथ में रखने में निय्यत येह हो कि लोग नेक समझें और उन के दिल में मक़ाम पैदा हो तो ख़ाली होंट हिलाना भी रियाकारी है ।

9 क्या एडवान्स पैसे देना सूद में दाख़िल है ?

सुवाल : अगर किसी से कोई काम करवाना हो तो कुछ पैसे एडवान्स दिये जाते हैं और बाक़ी पैसे काम होने के बाद दिये जाते हैं, क्या येह एडवान्स देना सूद के जुमरे में आता है ?

जवाब : येह सूद नहीं है, क्यूंकि सूद उस वक़्त होता है जब किसी को क़र्ज़ दे कर उस से फ़ाएदा उठाया जाए । यहां ऐसा नहीं है । आप ने जो एडवान्स दिया है वोह काम न होने की सूरत में आप को वापस मिल जाएगा । न एडवान्स जम्अ़ करने वाला गुनाहगार होगा और न ही एडवान्स जम्अ़ करवाने वाला । अलबत्ता बाज़ लोग काम न होने के बा वुजूद एडवान्स वापस नहीं करते, बल्कि हड़प कर जाते हैं, ऐसा करना जाइज़ नहीं है । (देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 17/94)

10 Disposable दस्तरख़्वान इस्तिमाल कर के फेंक देना कैसा ?

सुवाल : खाने के बाद Disposable दस्तरख़्वान को फेंक देना कैसा है ? नीज़ खाने के बाद दस्तरख़्वान लपेटने के लिये येह जुम्ला कहा जाता है कि **''दस्तरख़्वान बढ़ाइये''** इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : Disposable दस्तरख़्वान, बरतन और ग्लास वग़ैरा को इस्तिमाल के बाद फेंक दिया जाता है, उस में कोई ह़रज नहीं, उ़लमा ने इस की इजाज़त दी है । दस्तरख़्वान उठाने के लिये **''दस्तरख़्वान बढ़ाइये''** नेक शुगून के तौ़र पर कहा जाता है कि इस में बरकत का पहलू है और नेक शुगून लेना अच्छी बात है ।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 निस्वार रख कर सो गए और सहरी का वक़्त गुज़र गया तो रोज़े का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि रमज़ानुल मुबारक में सहरी करने के बाद 4:20 पर एक शख़्स ने मुंह में निस्वार रखी और उस को नींद आ गई और 4:40 पे सहरी का वक़्त ख़त्म हो रहा है, जब उस की आंख खुली 5:00 बज गए थे, अब पूछना येह था कि ऐसी सूरत में रोज़े का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में रोज़े का वक़्त शुरूअ़ होने पर निस्वार के मुंह में रहने से मज़कूरा शख़्स का रोज़ा टूट गया, क्यूंकि निस्वार मुंह में रखने से आ़म तौ़र पर उस के अज्ज़ा ह़ल्क़ से नीचे उतरते हैं, लिहाज़ा उस पर एक दिन की क़ज़ा लाज़िम होगी, यानी उस रोज़े के बदले में एक रोज़ा रखना पड़ेगा, नीज़ मज़कूरा शख़्स पर बक़िय्या दिन रोज़ेदारों की त़रह़ रहना वाजिब होगा, क्यूंकि उसूल येह है कि हर वोह शख़्स जो दिन के किसी ह़िस्से में ऐसी ह़ालत में हो गया कि उस की येह ह़ालत अगर दिन की इब्तिदा में (यानी सहरी के वक़्त) होती, तो उस पर रोज़ा रखना लाज़िम होता, तो ऐसे शख़्स के लिये रोज़ा न होने के बा वुजूद बक़िय्या दिन रोज़ादारों की त़रह़ रहना वाजिब होता है, अलबत्ता कफ़्फ़ारा नहीं होगा, क्यूंकि कफ़्फ़ारा लाज़िम होने की एक शर्त़ येह है कि जान बूझ कर रोज़ा तोड़ा हो जब कि नींद की ह़ालत में निस्वार ह़ल्क़ में चले जाने की सूरत में येह शर्त़ मफ़्क़ूद है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़रीबी रिश्तेदार के जनाज़े के लिये एतिकाफ़ तोड़ना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बेटी या किसी क़रीबी ज़ी महरम रिश्तेदार की फ़ौतगी के सबब मोतकिफ़ को एतिकाफ़ तोड़ने की इजाज़त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां, अगर मोतकिफ़ का कोई ज़ी महरम रिश्तेदार फ़ौत हो जाए तो उसे जनाज़े में शिर्कत के लिये एतिकाफ़ तोड़ने की इजाज़त है, इस से मोतकिफ़ गुनाहगार नहीं होगा, अलबत्ता येह याद रहे कि जिस दिन एतिकाफ़ तोड़ा बाद में उस एक दिन की क़ज़ा करनी होगी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 सादा पानी की भाप से रोज़ा टूटेगा या नहीं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि रोज़े में सादा पानी गर्म कर के उस की भाप (Steam) लेने से रोज़ा टूटेगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रोज़े में क़स्दन पानी की भाप (Steam) लेने से रोज़ा टूट जाएगा, जब कि रोज़ादार होना याद हो, कि हालते रोज़ा में भाप लेने से पानी बुख़ारात बन कर नाक के रास्ते हल्क़ में जाता है और येह चीज़ मुफ़्सिदे रोज़ा है और भाप का हुक्म क़स्दन धुवां सूंघने की मिस्ल है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 चांदी की तस्बीह़ पर ज़िक्रुल्लाह करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या चांदी की तस्बीह़ ज़िक्रुल्लाह के लिये इस्तिमाल कर सकते हैं।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मर्द हो या औ़रत दोनों के लिये चांदी की तस्बीह़ इस्तिमाल करना ना जाइज़ो ह़राम और गुनाह है कि सोना हो या चांदी मर्द के लिये रुख़्सत की मख़्सूस सूरतों के इ़लावा इस्तिमाल मुत़लक़न ह़राम है। इसी त़रह़ से औ़रत के लिये सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ेवर के त़ौर पर सोने चांदी का इस्तिमाल जाइज़ है इस के इ़लावा औ़रत के लिये भी उन का इस्तिमाल करना ना जाइज़ है। चूंकि चांदी की तस्बीह़ न तो किसी रुख़्सते शरई में दाख़िल है और न उस से मक़्सूद ज़ेवर के त़ौर पर पहनना होता है लिहाज़ा मर्द व औ़रत दोनों के लिये ऐसी तस्बीह़ ज़िक्रुल्लाह के लिये इस्तिमाल करने की इजाज़त नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 नमाज़े जनाज़ा सुन्नते बादिया से पहले पढ़ें या बाद में ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारी मस्जिद के साथ ग्राउन्ड में नमाज़े जनाज़ा अदा की जाती है मुतअ़द्दद मर्तबा ऐसा होता है कि फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त के फ़ौरन बाद येह ऐलान किया जाता है कि बाहर ग्राउन्ड में नमाज़े जनाज़ा है उस में शिर्कत फ़रमाएं दरयाफ़्त त़लब अम्र येह है कि नमाज़े ज़ोहर और मग़रिब की बाद वाली सुन्नतें अदा करने के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए या पहले नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर फिर सुन्नतें अदा की जाएं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

वोह नमाज़ें जिन के बाद सुन्नतें अदा की जाती हैं यानी नमाज़े ज़ोहर, मग़रिब, इ़शा और जुमुआ़, इन औक़ात में अगर जनाज़ा ह़ाज़िर हो और जमाअ़त तय्यार हो तो मुफ़्ता बिही क़ौल के मुत़ाबिक़ फ़राइज़ के बाद पहले सुन्नतें अदा कर लेनी चाहियें फिर नमाज़े जनाज़ा अदा की जाए। अलबत्ता अगर नमाज़े जनाज़ा सुन्नतों के बाद अदा करने की सूरत में मय्यित का जिस्म ख़राब होने या फूल फट जाने का अन्देशा हो तो अब नमाज़े जनाज़ा पहले पढ़ लेनी चाहिये। बल्कि ऐसी सूरत में अगर फ़र्ज़ नमाज़ के वक़्त में भी गुन्जाइश हो तो नमाज़े जनाज़ा को फ़र्ज़ से भी पहले अदा किया जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

6 मय्यित की सिर्फ़ हड्डियां मिलीं तो नमाज़े जनाज़ा का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि किसी मुसलमान मय्यित की सिर्फ़ हड्डियां मिलीं और जिस्म पर गोश्त न हो तो उस की नमाज़े जनाज़ा अदा की जाएगी या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मज़्कूरा सूरत में सिर्फ़ हड्डियों पर नमाज़े जनाज़ा अदा नहीं की जाएगी, क्यूंकि शरीअ़ते मुत़ह्हरा के क़वानीन की रू से जनाज़े की अदाएगी में शर्त़ है, कि मय्यित का पूरा बदन या बदन का अक्सर ह़िस्सा या निस्फ़ मअ़ सर के मौजूद हो, और बदन, गोश्त, पोस्त और हड्डियों के मजमूए़ का नाम है, सिर्फ़ हड्डियों को बदन नहीं कहा जाता, लिहाज़ा इस सूरत में नमाज़े जनाज़ा अदा नहीं कर सकते, उन हड्डियों को किसी पाक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर दिया जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काम की बातें

اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी के तह़त क़ाइम जामिअ़तुल मदीना में बेहतर तालीम के साथ साथ ख़ुसूसी तरबिय्यती निशस्तों का भी एहतिमाम किया जाता है। जिस में इ़ल्मी, अ़मली, अख़्लाक़ी और मुआ़शरती एतिबार से मुख़्तलिफ़ गोशों पर त़लबा की तरबिय्यत की जाती है। इसी सिल्सिले में निगराने शूरा ने एक मौक़अ़ पर त़लबा की तरबिय्यत करते हुए उन की क़ाबिलिय्यत व सलाहिय्यत बढ़ाने के मदनी फूल बयान फ़रमाए जो ज़ैल में पेश किये जा रहे हैं।

1 पढ़ाई में दिल लगाने के लिये त़लबए किराम को दुरूदे पाक का मामूल बना लेना चाहिये।

2 त़ालिबे इ़ल्मे दीन को इतने ज़ियादा दुरूदे पाक याद हों कि बदल बदल कर पढ़े जाएं (ताकि नए नए अल्फ़ाज़ के साथ पढ़ने से मज़ीद शौक़ बढ़ता रहे।)

3 नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शौक़ रखने वाले के लिये दुरूदे पाक पढ़ना सब से बेहतरीन अ़मल है।

4 दीन का त़ालिबे इ़ल्म चले तो सुन्नत के मुत़ाबिक़, खाए तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ अलग़रज़ उस का हर काम सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो।

5 किसी का राज़ खोल देने से राज़ आना बन्द हो जाते हैं (यानी राज़ बताने वाला दोबारा उसे राज़ की बातें नहीं बताता।)

6 अल्लाह पाक जिस से दीन का काम लेना चाहे उस के लिये काम करने के रास्ते भी आसान बना देता है।

7 आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का सारा वक़्त दीन की तरवीजो इशाअ़त में गुज़रता था। आप अ़सर ता मग़रिब का वक़्त अपने मुह़िब्बीन मुरीदीन त़ालिबीन के मसाइल ह़ल करने के लिये वक़्फ़ किया करते थे।

8 आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बेटियों की शादी में मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने शादी के मुआ़मलात और तमाम तर लवाज़िमात ख़ुद त़ै किये ताकि आप दीन का काम करने में रुकावट महसूस न करें, इस पर आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने छोटे भाई के लिये एक तारीख़ी जुम्ला इरशाद फ़रमाया :

"ह़सन मियां जो मैं ने दीन की ख़िदमत की है उस में आप का भी ह़िस्सा है।"

9 मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه क़लम बना कर क़लमदान में रख देते ताकि आला ह़ज़रत दीन का काम छोड़ कर क़लम बनाने में वक़्त न लगाएं।

10 ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपनी किताब "**जन्नती ज़ेवर**" अपनी ज़ौजा के नाम करते हुए फ़रमाया : मेरी ज़ौजा ने मुझे इ़ल्मी व दीनी ख़िदमतों के लिये ख़ानगी (घरेलू) फ़िक्रों से आज़ाद कर दिया।

11 जो त़लबए किराम अइम्मए मसाजिद हैं उन्हें न सिर्फ़ फ़राइज़ बल्कि सुननो नवाफ़िल भी अपने मुसल्ले पे अदा करने चाहियें और मुक़्तदियों के मसाइल ह़ल करने के लिये ह़त्तल इम्कान कोशिश करनी चाहिये।

12 दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़तावाजात का दर्से निज़ामी के त़लबा को इ़ल्म होना चाहिये नीज़ जामिआ़त के त़लबा को दौरे ह़ाज़िर के फ़ित्नों से भी बा ख़बर होना चाहिये।

13 तलबा को अपने अन्दर एतिमाद पैदा करना चाहिये और येह सोच ख़त्म करनी चाहिये कि मैं नहीं कर सकता या मुझे करना नहीं आता।

14 अगर हमें किसी मौक़अ़ पर इंग्लिश के चन्द अल्फ़ाज़ न आएं तो हम शर्मिन्दगी महसूस करते हैं जब कि इस्तिलाहाते शरइय्या न आएं तो उस वक़्त शर्मिन्दगी महसूस नहीं करते।

15 तलबा को येह सोच ख़त्म कर देनी चाहिये कि फ़ारिग़ुत्तहसील होने के बाद मेरा क्या बनेगा? शोक़ और लगन से पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه आप एक अच्छे आ़लिम बन जाएंगे, क्या येह दौलत कम है।

16 जामिअ़तुल मदीना में तालीम के मेयार के साथ साथ तन्ज़ीम सिखाने के लिये पहले 41 रोज़ा नेक आमाल कोर्स करने वालों को तरजीह़ हासिल थी लेकिन अब जो असातिज़ए किराम 12 माह किये हों और इल्मी अ़मली क़ाबिलिय्यत व सलाहिय्यत के मालिक हों उन्ही को तरजीह़ हासिल होगी।

17 अभी कुछ करने का वक़्त है काम कर लें बाद में मौक़अ़ नहीं मिलेगा।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

18 मर्द वोह नहीं जो मुआ़शरे के साथ चले बल्कि मर्द वोह है जिस के साथ मुआ़शरा चले।

19 मुआ़शरे के रंग में अपने आप को न रंगें बल्कि मुआ़शरे को अपने रंग में रंग लें।

20 फ़ारिग़ुत्तहसील होने के बाद अपनी क़ाबिलिय्यत को जांचने के लिये तख़स्सुस का टेस्ट ज़रूर दें ताकि पता लग जाए कि आप कहां खड़े हैं?

21 इल्म के साथ साथ तजरिबा, हिक्मत व दानाई के अलग नम्बर हैं।

22 मुफ़्ती की इल्म और अ़मल से भरपूर गुफ़्तगू बता देती है कि येह मुफ़्ती है।

23 हमारे (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के) मुफ़्ती तो मुफ़्ती रहे बल्कि नाइब मुफ़्ती भी इल्मो अ़मल में कम नहीं हैं।

अस्लाफ़ के क़लम से

सूद के मफ़ासिद

एक मुसलमान सच्चा मुसलमान शरीअ़ते ताहिरा को अपनी जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ और प्यारा समझता है। उस पर मर मिटना फ़िदा होना अपनी आला तरीन सआ़दत एतिक़ाद करता है। ईमानी जज़्बात की उमंगें उस को शरीअ़त पर क़ुरबान होने के लिये आरज़ू मन्द बनाए रखती हैं। वोह अपने अ़मल से अपने त़रीक़े ज़िन्दगी से इस्लाम की जां निसारी का एक मुजस्सम सुबूत होता है।

शरए़ इस्लाम ने सूद को क़त़ई हराम किया

शरए़ इस्लाम सूद को क़त़अ़न हराम फ़रमाता है और इस का हलाल जानने वाला शरीअ़त के हुक्म का मुख़ालिफ़ और उस के आईन को तोड़ कर हुदूदे इस्लाम से बाहर हो जाता है और शरीअ़ते ताहिरा ऐसे शख़्स पर कुफ़्र का हुक्म देती है।

पनाह बा ख़ुदा येह सरकशी कि ख़ुदा वन्दे आ़लम जिस चीज़ को हराम फ़रमाए इस्लाम का दावेदार हो कर कोई शख़्स उस को हलाल कहे। तुफ़ हज़ार तुफ़!

और फिर येह कहना कि शरीअ़त ने तिजारती सूद को हराम ही नहीं किया, शरीअ़ते मुत़हहरा और क़ुरआने पाक पर इफ़्तिरा (बोहतान) है। अल्लाह पाक फ़रमाता है :

﴿اَلَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا یَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا یَقُوْمُ الَّذِیْ یَتَخَبَّطُهُ الشَّیْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ﴾

तर्जमा : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो।[1]

इस आयत का मत़लब येह है कि सूद ख़ोर रोज़े क़ियामत मख़्बूत़ बद हवास की त़रह़ उठेंगे और उन की येह शान होगी कि मसरूअ़ (यानी मिर्गी के मरीज़) की त़रह़ उठते हैं और गिर पड़ते हैं। उठते हैं और उठना दुश्वार है जो सूद खाया है पेटों में बार है। अहले मौक़िफ़ के लिये सूद ख़ोरों का येह उठना और गिर पड़ना सूद ख़ोरी की अ़लामत और सूद ख़ोर की ज़िल्लत है जो क़ब्र से उठते ही उस को घेरेगी। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है :

لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اٰكِلَ الرِّبٰوِ وَمُوْكِلَهٗ وَكَاتِبَهٗ وَشَاهِدَيْهِ وَقَالَ هُمْ سَوَاءٌ

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूद लेने वाले, देने वाले, लिखने वाले और इस के गवाहों पर सब पर लानत की, और फ़रमाया कि वोह सब बराबर हैं।[2]

क़ुरआने पाक में सूद ख़ोरों का येह ह़ाले बद मआल बयान फ़रमाने के बाद उस के सबब का ज़िक्र फ़रमाया है जिस से उस शख़्स का हुक्म भी साफ़ व सरीह़ मालूम होता है जो तिजारती सूद को मुबाह़ (जाइज़) कहता है, इरशाद हुवा :

﴿ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَیْعُ مِثْلُ الرِّبٰواۘ وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰواؕ﴾

तर्जमा : येह (अ़ज़ाब) इस सबब से है कि उन्हों ने कहा कि बैअ़ सूद ही की त़रह़ है और (ह़क़ीक़तुल अम्र येह है कि) अल्लाह पाक ने बैअ़ को ह़लाल किया और सूद को ह़राम फ़रमाया।[3]

इस आयते मुबारका में सूद की हुर्मत का कैसा साफ़ व सरीह़ ग़ैर मुश्तबा बयान है और जो लोग सूद को बैअ़ की त़रह़ ह़लाल क़रार देते थे उन के बुत़लान का इज़्हार है। इन आयात को देखना और नाबीना बन जाना, इन के मआ़नी के बदलने की कोशिश करना, दीन की, इस्लाम की, ख़ुदा व रसूल की मुख़ालिफ़त और कमाले जुरअत व बे दीनी है।

इस के बाद ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَؕ وَ اَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ(۲۷۵)﴾

तर्जमा : जिस के पास उस के रब की त़रफ़ से नसीह़त आई (और मुमानअ़ते सूद का हुक्म उसे मिला) पस वोह बाज़ रहा (और सूद से मुज्तनिब हुवा) तो उस के लिये है जो गुज़र चुका। (यानी हुर्मते सूद के नुज़ूल से क़ब्ल जो ले चुका उस पर मुआख़ज़ा न होगा) और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है और जो ऐसी ह़रकत फिर करें (सूद को ह़लाल समझें) वोह दोज़ख़ी उस में हमेशा रहेंगे।[4]

तफ़्सीरे मदारिक में इस आयत के तह़त में लिखते हैं : لِاَنَّهُم بِالِاسْتِحْلَالِ صَارُوا كَافِرِينَ لِاَنَّ مَن اَحَلَّ مَا حَرَّمَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ فَهُوَ كَافِرٌ۔

तर्जमा : क्यूंकि वोह लोग सूद को ह़लाल जान कर काफ़िर हो गए इस लिये कि जो शख़्स अल्लाह की ह़राम की हुई चीज़ को ह़लाल जाने वोह काफ़िर है।[5]

येह है हुक्मे क़ुरआनी और इस पर उन लोगों की येह जुरअतें हैं। العیاذ باللہ!

इस के बाद ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

﴿یَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَ یُرْبِی الصَّدَقٰتِؕ وَ اللّٰهُ لَا یُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِیْمٍ(۲۷۶)﴾

तर्जमा : अल्लाह पाक सूद को हलाक करता है। और ख़ैरात को बढ़ाता है। और अल्लाह को पसन्द नहीं कोई ना शुक्र बड़ा गुनहगार।[6]

सूद में ब कसरत मफ़ासिद हैं। अल्लाह पाक अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए तो इन्सान येह समझ सकता है कि :

1 इन्साफ़ की शरीअ़त बिला इ़वज़ किसी का माल लेने को ह़लाल नहीं कर सकती। सूद बे इ़वज़ लिया जाता है। ज़ैद ने दस रुपिये दिये थे बारह वुसूल करता है तो येह दो मह़ज़ बे इ़वज़ है। इस लिये उन का लेना ह़राम होना ही चाहिये और इस हुक्म में अ़क़्ले सलीम ज़रा भी तरद्दुद नहीं करती।

2 सूद तिजारत को नुक़्सान पहुंचाता है क्यूंकि सरमायादार जब सूद के ज़रीए़ बे मेह़नत मशक़्क़त दूसरों की दौलत पर क़ाबिज़ और उन की जाईदादों का मालिक हो जाता है तो वोह तिजारत की मशक़्क़तों को बरदाश्त करना ना गवार समझता है और जिस रुपिये को तिजारत में लगा सकता था उस को जाल बना कर दूसरों की दौलतों का शिकार खेलने का लुत़्फ़ उठाता है और तिजारतों की तरक़्क़ी के साथ आ़म्मतुन्नास के जो मनाफ़ेअ़ वाबस्ता थे उन में बहुत कमी आ जाती है।

3 इन्सान को रूह़ानी त़ौर पर भी सूद से बहुत नुक़्सान पहुंचता है। एह़सान करने और क़र्ज़े ह़सन देने की आ़दतें जाती रहती हैं। अपने कमज़ोर ग़रीब भाई को क़र्ज़ दे कर उस की दस्तगीरी करना और गिरी हुई ह़ालत से उठाना, बिगड़े हुए को संभालना येह सब मौक़ूफ़ हो जाता है और इस त़रह़ दुन्या बिरादराना रह़म की पाकीज़ा ख़स्लत से मह़रूम हो जाती है और बिरादराना हमदर्दी का ख़ून हो जाता है।

4 ह़िर्स का बदतरीन जज़्बा जो इन्सान की रूह़ानिय्यत के लिये मोहलिक बीमारी है निहायत क़वी हो जाता है और सूद ख़ोर हर शख़्स के माल, जाईदाद, मकान को ह़िर्स व त़म्अ़ की नज़र से देखता है।

अपने भाइयों के लिये मुब्तलाए मुसीबत होने की तमन्ना करता है कि वोह किसी मुसीबत व परेशानी में मुब्तला हों और मुझ से क़र्ज़ लें ताकि मैं उन की जाईदादों और इम्लाक पर क़ाबिज़ होऊं।

5 ज़ुल्म और दरिन्दा ख़सालती सूद ख़ोर इन्सान की त़बीअ़त बन जाती है और दूसरों की तबाही और बरबादी से ख़ुश हुवा करता है। एक आदमी अपने तमव्वुल (मालदार बनने) की हिर्स में एक पूरे ख़ानदान और उस के मुतवस्सिलीन को जो दुन्या में इ़ज़्ज़त व हुर्मत के साथ ऐ़शो राह़त की ज़िन्दगी बसर करते थे नाने शबीना (रोटी) का मोह़ताज और दर बदर फिरने और भीक मांगने के क़ाबिल बना देता है और इस त़रह़ इन बे कसों, मजबूरों पर ज़ुल्म करता है कि कभी उसे उन की तबाही और बरबादी और सदहा इन्सानों की मुसीबत व नकबत (ग़ुर्बत) पर तरस नहीं आता। हिन्दुस्तान में मुसलमान इस के ख़ूब तजरिबे कर चुके हैं और सियाह दिल सूद ख़ोरों के ज़ुल्मो जफ़ा के ख़ूब मज़े ले चुके हैं। सदहा नाज़ परवुर्दे (यानी बहुत से नाज़ों में पले बढ़े) आज उन ज़ालिमों के बे रह़माना सफ़्फ़ाकियों की ब दौलत धक्के खाते फिर रहे हैं।

इस्लाम उस सियाह दिली, बद बात़िनी, दरिन्दा ख़िसाली, जफ़ा शिआ़री, त़माई, हिर्स रूह़ को तारीक करने वाले जज़्बात से अपने नियाज़ मन्दों को बचाता है और रह़म, हमदर्दी, सुलूक नेक जैसे पाक जज़्बात पैदा करता है।

والحمدُللہ ربِّ العالمین

तअ़ज्जुब येह है कि इस सदी में अ़मली त़ौर पर सूद के मोहलिक असर और तबाहकुन नताइज का तजरिबा हो जाने के बाद फिर कोई शख़्स सूद को मुफ़ीद साबित करने की कोशिश करे। अल्लाह पाक उस को राहे रास्त दिखाए और गुमराही से बचाए।[7]

(1) پ3، البقرۃ:275 (2) مسلم، ص663، حدیث:4093 (3) پ3، البقرۃ:275
(4) پ3، البقرۃ:275 (5) تفسیر نسفی، ص141، البقرۃ، تحت الآیۃ:275 (6) پ3، البقرۃ:276 (7) السوادالاعظم صفر المظفر 1346ھ، ص2 تا 8 سے لئے گئے اقتباسات۔

ज़िन्दगी कैसे बदलेगी
(How to change life?)

बहुत से लोगों का लाइफ़ स्टाइल ऐसा होता है जो जल्द या ब दैर उन्हें नुक़्सान पहुंचाएगा । इस लिये उसे तब्दील करना बहुत ज़रूरी होता है, लेकिन उस का ह़क़ीक़ी शुऊ़र और इदराक कम ही लोगों को होता है कि **"ज़िन्दगी कैसे बदलेगी ?"** इस मज़मून में इसी सुवाल का जवाब देने की कोशिश की गई है कि ज़िन्दगी में मुस्बत तब्दीली का सफ़र किस त़रह़ शुरूअ़ किया जा सकता है ।

1 तब्दीली से ख़ौफ़ ज़दा न हों

बाज़ लोगों का अलमिया (Tragedy) येह भी होता है कि वोह तब्दीली से ख़ौफ़ और तश्वीश में मुब्तला हो जाते हैं । ऐसे लोग अपने कमफ़र्ट ज़ोन से निकलने के लिये तय्यार नहीं होते । उन्हें अपनी बुरी आ़दत बदलनी पड़े, शर्मनाक मामूलात तब्दील करना पड़ें, बुरे दोस्तों की सोह़बत छोड़नी पड़े या शैत़ानी लज़्ज़त पर मुश्तमिल गुनाहों को छोड़ना पड़े तो वोह समझते हैं कि ज़िन्दगी बिल्कुल बे रौनक़ (Dull) हो जाएगी, मेरे शबो रोज़ कैसे गुज़रेंगे ? कहीं आप भी तो ऐसे लोगों में शामिल नहीं ? अगर हैं तो येह ग़ौर कर लीजिये कि आप की ज़िन्दगी कई तब्दीलियों के बाद मौजूद शक्ल में ढली है । आप जिस शैत़ानी लज़्ज़त को ज़िन्दगी की रौनक़ क़रार दे रहे हैं, एक वक़्त था कि आप इस गुनाह मसलन फ़िल्में ड्रामे देखने या बद निगाही में मुब्तला नहीं थे तो भी ज़िन्दगी बा रौनक़ ही थी । इस लिये ख़ुद को तब्दील करने से ख़ौफ़ज़दा न हों । एक शख़्स जिसे दाल बड़ी पसन्द थी और वोह किसी दूसरे खाने ह़त्ता कि गोश्त को भी ख़ात़िर में न लाता था । उस का दोस्त उसे चिकन खाने की दावत देता लेकिन वोह येह कह कर उस दावत को ठुकरा देता कि इस दाल में जो लज़्ज़त है किसी और खाने में कहां ? आख़िर कार एक दिन जब उस के दोस्त ने उसे चिकन खाने की दावत दी तो उस ने सोचा कि आज चिकन भी खा कर देख लेते हैं कि इस का ज़ाइक़ा कैसा है और चिकन खाने लगा । जब उस ने पहला लुक़्मा मुंह में रखा तो उसे इतनी लज़्ज़त महसूस हुई कि अपनी पसन्दीदा दाल को भूल गया और कहने लगा : हटाओ इस दाल को, अब मैं चिकन ही खाया करूंगा । बिला तश्बीह जब तक कोई शख़्स गुनाहों की लज़्ज़त में मुब्तला रहता है, उसे येह गुनाह ही रौनक़े ज़िन्दगी महसूस होते हैं लेकिन जब उसे नेकियों का नूर ह़ासिल हो जाता है तो वोह गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाता है । जिस त़रह़ दिन की रौशनी फैल जाती है तो रात की तारीकी रुख़्सत हो जाती है इसी त़रह़ जब नेकियों का नूर इन्सान को ह़ासिल हो जाए तो उस के आज़ा से गुनाहों की तारीकी रुख़्सत हो जाती है ।

2 ज़िन्दगी को बदलने का पुख़्ता इरादा कीजिये

आप का जो भी लाइफ़ स्टाइल है वोह बनते बना है । येह ह़क़ीक़त है कि बनी हुई चीज़ को नए सांचे

(Mould) में ढालना एक मुश्किल काम है लिहाज़ा अपनी ज़िन्दगी को रीशेप करने के लिये आप को मज़बूत फ़ैसले और पुख़्ता इरादे की ह़ाजत है। जब आप ज़िन्दगी को तब्दील करने की ठान लेंगे तो दुन्या की कोई त़ाक़त आप की राह में रुकावट नहीं बनेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه। आप ने बे नमाज़ियों, सूदख़ोरों, ख़त़रनाक क़ातिलों, चालाक चोरों, मन्शियात के स्मग्लरों और करप्शन के रीकॉर्ड क़ाइम करने वालों के सुधरने की सच्ची दास्तानें (True Stories) सुनी होंगी। येह इसी लिये मुम्किन हुवा कि अल्लाह की त़रफ़ से उन के दिल में नेक बनने का ख़याल आया होगा फिर मज़बूत फ़ैसले और पुख़्ता इरादे ने उन का लाइफ़ स्टाइल बदल कर रख दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه की तौबा के बारे में मन्क़ूल है कि आप एक लड़की के इ़श्क़ में ऐसे गिरिफ़्तार हो गए थे कि किसी पल चैन ही न आता था। एक मरतबा सर्दियों की एक त़वील रात में सुब्ह़ तक उस के मकान के सामने इन्तिज़ार में खड़े रहे ह़त्ता कि फ़ज्र का वक़्त हो गया तो आप को शदीद नदामत हुई कि मैं मुफ़्त में एक मख़्लूक़ की ख़ात़िर इतना इन्तिज़ार करता रहा, अगर मैं येह रात इ़बादत में गुज़ारता तो इस से लाख दर्जे बेहतर था। चुनान्चे आप ने फ़ौरन तौबा की और इ़बादते इलाही में मसरूफ़ हो गए।[1]

3 मक़ासिद पर नज़रे सानी कीजिये

अपने मक़ासिद और मन्ज़िलों के तअ़य्युन पर नज़रे सानी (Review) बहुत ज़रूरी है। क्यूंकि इस दुन्या में किसी ने दौलत की रेल पेल, किसी ने वसीअ़ इख़्तियारात, किसी ने आ़लीशान मकान और गाड़ियां और किसी ने आसाइशात व सहूलिय्यात की कसरत ही को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद समझ रखा है। याद रखिये कि इन चीज़ों को जाइज़ व ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल कर के ज़िन्दगी का ह़िस्सा ज़रूर बनाया जा सकता है लेकिन ज़िन्दगी का मक़्सद नहीं। हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद वोह है जिसे हमारे जिस्म और रूह़ के ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने बयान फ़रमाया : ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिये) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।[2]

याद रखिये कि बन्दगी और इ़बादत का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है। नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, भूके को खाना खिलाना, ग़रीब मिस्कीन की माली मदद, दुख्यारों की हमदर्दी, बीमार की दिलजोई, राहे ख़ुदा में ख़र्च, मसाजिद की तामीरात, मां बाप की ख़िदमत, रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक, बीवी बच्चों के लिये रिज़्क़े ह़लाल कमाना, ज़ाहिरी गुनाहों से बचना, बात़िनी गुनाहों ह़सद, तकब्बुर, बुग़्ज़ो कीना और बद गुमानी वग़ैरा से बच कर आ़जिज़ी इख़्तियार करना, मुसलमानों से मह़ब्बत करना, हुस्ने ज़न रखना इ़बादत की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। अब येह हमारी ज़िम्मेदारी है कि अपनी ज़िन्दगी को ऐसा बनाएं कि हमारा मक़्सदे ह़यात (Purpose of life) पूरा हो सके।

4 मक़्सदे ह़यात की तक्मील में रुकावटें दूर कीजिये

ग़ौर कीजिये कि ह़ुसूले मक़्सद में कौनसी रुकावटें आप की राह में ह़ाइल हैं ? उन्हें हटाने की कोशिश कीजिये। बड़ी रुकावट नफ़्सो शैत़ान होता है, येह इन्सान के पुराने दुश्मन हैं जो उसे कहीं का नहीं छोड़ते। उन को कन्ट्रोल करने के लिये नफ़्स की चालों और शैत़ान की शरारतों को समझना ज़रूरी है। इस के लिये इह़याउल उ़लूम, मिन्हाजुल आ़बिदीन, शैत़ान के बाज़ हथियार जैसी किताबें और रिसाले समझ कर पढ़िये और उन में की गई नसीह़तों को अ़मली ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه कामयाबी आप का मुक़द्दर होगी। इसी त़रह़ ऐसे दोस्तों की सोह़बत (Companionship) भी रुकावट होती है जिन्हों ने ठानी होती है कि सुधरेंगे न सुधरने देंगे। उन के ग्रूप का कोई फ़र्द जैसे ही मक़्सदे ह़यात को पाने के लिये क़दम उठाता है येह फ़ौरन तब्दीली की कोशिशों की ह़ौसला शिकनी (Discourage) कर देते हैं कि तुझ से नहीं होगा, इस पर होटिंग करते हैं कि **"नौ सौ चूहे खा के बिल्ली ह़ज को चली"**। बाज़ मन्फ़ी तबसरे और तास्सुरात लोग हमारे बारे में देते हैं और कुछ तबसरे हम अपने बारे में ख़ुद कलामी (self-talk) की सूरत में करते हैं, येह मन्फ़ी ख़ुद कलामी छोड़ कर मुस्बत ख़ुद कलामी की त़रफ़ आ जाइये और ख़ुद से कहिये : मैं कर सकता हूं (I can do), اِنْ شَآءَاللّٰه आप की कुव्वते इरादी मज़बूत हो जाएगी। यूंही एक रुकावट बुरे मामूलात भी हैं जब तक उन मामूलात को तब्दील नहीं किया जाएगा तब्दीली के कामयाब सफ़र का सिर्फ़ ख़्वाब ही देखा जा सकता है। जो शख़्स दलदल में फंसा हुवा हो वोह अपने कपड़े गन्दे होने का शिक्वा करे तो अ़जीब लगेगा।

5 तब्दीली के रास्तों का इन्तिख़ाब कीजिये

सफ़र कोई भी हो रास्ते का इन्तिख़ाब बड़ा अहम होता है येही मुआ़मला तब्दीली के सफ़र का भी है। उस के लिये गुनाहों (बिल ख़ुसूस वोह जिन में आप मुब्तला हैं) के नुक़्सानात और अ़ज़ाबात पर ग़ौर कीजिये और सोचिये क्या आप उन नुक़्सानात व अ़ज़ाबात का सामना कर सकते हैं? यक़ीनन नहीं क्यूंकि जहन्नम के अ़ज़ाबात इस क़दर ख़ौफ़नाक और देहशत नाक हैं कि हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, कई अ़हादीस व रिवायात में येह मज़ामीन मौजूद हैं कि दोज़ख़ियों को ज़िल्लतो रुस्वाई के आ़लम में दाख़िले जहन्नम किया जाएगा, वहां दुन्या की आग से सत्तर गुना तेज़ आग होगी जो खालों को जला कर कोइला बना देगी, हड्डियों का सुर्मा बना देगी, उस पर शदीद धुवां जिस से दम घुटेगा, अन्धेर इतना कि हाथ को हाथ सुझाई न दे, भूक प्यास से निढ़ाल बेड़ियों में जकड़े जहन्नमी को जब पीने के लिये उबलती हुई बदबूदार पीप दी जाएगी तो मुंह के क़रीब करते ही उस की तपिश से मुंह की खाल झड़ जाएगी, खाने को कांटेदार थूहड़ मिलेगा, लोहे के बड़े बड़े हथोड़ों से उसे पीटा जाएगा। इसी क़िस्म के बे शुमार रन्जो अलम और तक्लीफ़ों से भरपूर जगह होगी येह जहन्नम!

इसी त़रह़ नेकियों के फ़वाइद और इन्आ़मात पर नज़र कीजिये कि अगर आप नेकियां करने में कामयाब हो गए तो येह फ़ाएदे और इन्आ़मात पा कर आप के वारे न्यारे हो जाएंगे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी ऐसी नेमतें तय्यार कर रखी हैं कि जिन को न तो किसी आंख ने देखा, न उस की ख़ूबियों को किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उन की माहिय्यत का ख़याल गुज़रा।[3]

6 तब्दीली की क़ीमत भी अदा कीजिये

जो चीज़ क़दर रखती है वोह क़ीमत भी मांगती है येही ह़ाल तब्दीली का भी है। उस की क़ीमत अदा करने के लिये तय्यार रहिये। वोह क़ीमत येह है कि आप को अपनी रूटीन और ख़्वाहिशात की क़ुरबानी देना होगी।

7 मुस्तक़िल मिज़ाज रहिये

किसी भी काम में कामयाबी के लिये मुस्तक़िल मिज़ाजी अहम किरदार अदा करती है अगर आप थक हार कर बैठ गए तो तब्दीली का सफ़र रुक जाएगा। मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی اَدْوَمُھَا وَاِنْ قَلَّ यानी अल्लाह पाक के यहां सब से पसन्दीदा अ़मल वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे क़लील हो।[4]

8 अपनी फ़ेमेली को एतिमाद में ले लीजिये

फ़ेमेली का सपोर्ट मिल जाए तो मुश्किलात आसान हो जाती हैं। अगर आप को लगे कि फ़ेमेली आप की निय्यत और इरादों को समझ सकती है तो तब्दीली के इस मुश्किल सफ़र में अपनी फ़ेमेली को एतिमाद में ले लीजिये। अलबत्ता मुख़ालिफ़त का अन्देशा हो तो ह़िक्मते अ़मली से अपना सफ़र जारी रखिये। उम्मीद है कि जब उन्हें तब्दील हो कर दिखा देंगे तो वोह भी तब्दीली की इफ़ादिय्यत के क़ाइल हो जाएंगे और ऐन मुम्किन है कि आप को देख कर वोह भी तब्दीली के इस सफ़र पर रवाना होने के लिये तय्यार हो जाएं।

9 मह़ज़ नतीजे पर नहीं अ़मल पर भी फ़ोकस करें

जिन्होंने पहाड़ की चोटी तक पहुंचना हो वोह मह़ज़ चोटी पर नज़र नहीं रखते बल्कि रास्तों पर भी फ़ोकस करते हैं, इस लिये नतीजे और मन्ज़िल पर ही नहीं राहे अ़मल पर भी नज़र रखिये। हर क़दम उठाने से पहले येह ग़ौर कर लीजिये कि इस का रुख़ तब्दीली की मन्ज़िल की जानिब है या किसी और त़रफ़? मोह़तात़ हमेशा सुखी रहता है।

10 अच्छी सोह़बत का इन्तिख़ाब

अच्छे और नेक लोगों की सोह़बत मिल जाए तो किरदार में तब्दीली जल्द और देर पा होती है। फ़ी ज़माना येह सोह़बत नेक बनाने वाली तन्ज़ीम दावते इस्लामी भी फ़राहम करती है।

आप को लाखों अफ़राद मिल सकते हैं जिन्हों ने अपने किरदार व अ़मल में तब्दीली का कामयाब सफ़र दावते इस्लामी के साथ किया।

---

(1) تذکرۃ الاولیاء، 1/166 (2) پ27، الذّٰریٰت: 56 (3) مسلم، ص 1162، حدیث: 1732 (4) مسلم، ص 307 حدیث: 1830۔

ज़िन्दगी दर्द से इबारत है

ग़ालिबन रात का एक बज रहा था, अचानक एक कमरे से गोश्त जलने की बू आने लगी। गेलेरी में मटर गश्त और ख़ुश गप्पियों में मसरूफ़ दो अफ़राद बतौरे तजस्सुस उस कमरे की जानिब बढ़े, जब बार बार खटखटाने पर भी कोई जवाब न आया तो किसी अ़जीब ख़याल ने उन्हें लोक तोड़ने पर मजबूर किया, दरवाज़ा खुला तो अन्दर के दर्दनाक मन्ज़र ने पथरीली आंखों से भी चश्मे जारी कर दिये। एक नीम माज़ूर नौजवान बेड पर सो रहा था मगर जलता हुवा हीटर गिरने के सबब उस की टांगें और कम्बल आग में सुलग रहे थे। बेचारे की टांगें किसी ह़द तक काम तो करती थीं मगर एक सानेह़ा उस का आसाबी निज़ाम सुन कर गया था, जिस के सबब जिस्म के बाज़ ह़िस्से दर्द को मह़सूस नहीं कर सकते थे।

येह सच्चा "**दर्दनाक**" वाक़िआ़ बताता है कि दर्द ख़त़रे का साइरन है, जो इन्सान को इब्तिदाअन ही ख़त़रे से ख़बरदार कर के होशियार कर देता है और पानी सर से गुज़र जाए उस से क़ब्ल इस नुक़्सान की रोक थाम का मौक़अ़ देता है। यूं "दर्द" ज़िन्दगी के लिये एक लिह़ाज़ से नेमत ठहरा कि मामूली दर्द व तक्लीफ़ किसी बड़ी तक्लीफ़ से बचाने में मददगार साबित हो सकती है। इस वाक़िए़ से येह भी पता चलता है कि जहां शुऊ़र व एह़सास होगा, वहां दर्द व तक्लीफ़ भी पाए जाएंगे। येही वज्ह है कि दर्द कुश (Painkillers) अदवियात उ़मूमन शुऊ़र कुश भी होती हैं, बाज़ ऑपरेशन्ज़ मुकम्मल बेहोशी के आ़लम में ही किये जाते हैं ताकि किसी भी क़िस्म की जराह़त (चीर फाड़, Surgery) का असर, दर्द व तक्लीफ़ की सूरत में जिस्म को न पहुंचे।

सब्र करें और अज्र पाएं जब तक ज़िन्दगी है, दुख दर्द, परेशानी और मुसीबतें आती रहेंगी सो इन मुश्किलात में सब्र का दामन हाथ से न छूटने पाए और सुख व चैन की घड़ियों में ज़बान शुक्र से तर रहे। ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक बिन अबजर رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : लोगों को ख़ुशह़ाली अ़त़ा की जाती है ताकि देखा जाए कि शुक्र कैसे अदा करते हैं या फिर मुसीबत में गिरिफ़्तार किया जाता है ताकि जांच हो कि उस पर कैसे सब्र करते हैं।(1) और कसीर अह़ादीसे मुबारका में सब्र करने पर अज्रो सवाब की ख़ुश ख़बरियां आईं, चुनान्चे नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान को कोई तक्लीफ़, फ़िक्र, बीमारी, मलाल, अज़िय्यत और कोई ग़म नहीं पहुंचता यहां तक कि कांटा जो उसे चुभे मगर अल्लाह करीम इन के सबब उस के गुनाहों को मिटा देता है।(2) आ़लिमे कबीर अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رحمۃ اللہ علیہ ने परेशान ह़ालों की ढारस बन्धाने वाली, माना खेज़ बात इरशाद फ़रमाई : किसी इन्सान का दुन्या में मुसीबत और बलाओं में मुब्तला होना इस बात की अ़लामत है कि अल्लाह पाक उस शख़्स से भलाई का इरादा रखता है। जभी उसे गुनाहों की सज़ा दुन्या ही में (किसी मुसीबत वग़ैरा के ज़रीए) दे दी और उसे आख़िरत पर मुअख़्ख़र न किया कि वहां की सज़ा दाइमी है।(3)

ह़िकायत ह़ज़रते फ़त्ह़ अल मूसिली की ज़ौजा رحمۃ اللہ علیہما का पांव फिस्ला, जिस के सबब नाख़ुन टूट गया मगर वोह मुस्कुराने लगीं। पूछा गया : क्या आप को दर्द नहीं हो रहा ? फ़रमाया : इस दर्द पर सब्र करने के इवज़ मिलने वाले सवाब ने मेरे दर्द की तल्ख़ी दूर कर दी है।(4)

सब्र बेहतरीन ज़िन्दगी की ज़मानत है अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ ने इरशाद फ़रमाया : "وَجَدْنَا خَيْرَ عَيْشِنَا بِالصَّبْرِ" यानी हम ने अपनी बेहतरीन ज़िन्दगी सब्र के साथ पाई है।(5)

ज़िन्दगी में पुर सुकून रहने के नुस्ख़े पीर महर अ़ली शाह चिश्ती गीलानी رحمۃ اللہ علیہ का हिम्मत अफ़्ज़ा इरशाद : इन्सान ह़वादिस का मह़ल है। उसे चाहिये कि मायूसी और घबराहट को आ़दत न बनाए। जल्द बाज़ आदमी येह चाहते हैं कि उन की मुरादें फ़ौरन पूरी हो जाएं लेकिन जिस त़रह़ फूल अपने मौसम ही में खिलते हैं उसी त़रह़ मुरादें भी अपना वक़्त आने पर ही बर आती (यानी पूरी होती) हैं।(6) इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ आयते मुबारका ﴿وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا (۱۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।(7) ज़िक्र करने के बाद फ़रमाते हैं : इन्सान अपने क़दमों के नीचे देखता है आगे नज़र नहीं करता ! यहां (दुन्या) के आराम को आराम समझता है और यहां की तक्लीफ़ को तक्लीफ़ ह़ालांकि बहुत से आराम यहां के वहां (आख़िरत) की तक्लीफ़ हैं और बहुत सी यहां की तक्लीफ़ वहां के आराम हैं।(8)

अल्लाह पाक हमें अपना शुक्र गुज़ार और साबिर बन्दा बनाए, मुसीबत में ज़बान बल्कि किसी भी उ़ज़्व व ह़रकत से गिले शिक्वे ज़ाहिर न हों, ख़ुशियों और नेमतों की फ़रावानी में अपनी शुक्र गुज़ारी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। उस की बारगाह में हम दुन्या और आख़िरत की भलाइयों और राह़तों का सुवाल करते हैं।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !
आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके(9)

---

(1) دیکھئے: حلیۃ الاولیاء، 5/98 - اللہ والوں کی باتیں، 5/109 (2) بخاری، 4/3، حدیث: 5642 (3) دیکھئے: فیض القدیر، 5/626 (4) احیاء العلوم، 4/90 (5) بخاری، 4/239 (6) ملفوظاتِ مہریہ، ص104 (7) پ15، بنی اسرآءیل: 11 (8) ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت، ص468 (9) وسائلِ بخشش (مرمم)، ص412۔

ज़कात देने के फ़वाइद और न देने के नुक़्सानात

ज़कात देने के फ़वाइद

ज़कात की अदाएगी से मुआ़शी, मुआ़शरती, अख़्लाक़ी और दीनी फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। जैल में इस के चन्द फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 ईमान की तक्मील एक मुसलमान के लिये सब से क़ीमती असासा उस का ईमान है, अह़ादीसे करीमा में तक्मीले ईमान के बहुत से अस्बाब व आमाल तालीम किये गए हैं, ज़कात की अदाएगी उन में से एक सबब है, नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना येह है कि तुम अपने अम्वाल की ज़कात अदा करो।[1] मज़ीद फ़रमाया : जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखता हो उसे लाज़िम है कि अपने माल की ज़कात अदा करे।[2]

2 सबबे नुज़ूले रह़मत अगर किसी अ़क़्लमन्द शख़्स से पूछा जाए कि सारी मख़्लूक़ की नेकियां तुझे मिल जाएं येह पसन्द है या अल्लाह पाक की एक ख़ास रह़मत तुझ पर नाज़िल हो जाए ? तो वोह यक़ीनन अल्लाह पाक की एक ख़ास रह़मत को तरजीह़ देगा। यक़ीनन किस क़दर ख़ुश बख़्त हैं वोह लोग जो हर साल ज़कात की अदाएगी कर के ख़ुद को अल्लाह पाक की रह़मत का ह़क़दार बना लेते हैं। पारह 9 सूरतुल आराफ़ आयत नम्बर 156 में है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़नक़रीब मैं नेमतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं।

3 कामयाबी का ज़रीआ़ ज़कात देने वाले को एक बरकत येह भी मिलती है कि क़ुरआने करीम में अहले ईमान की कामयाबी की एक निशानी ज़कात देना बताया गया है, पारह 18, सूरतुल मोमिनून, आयत नम्बर 4 में इरशाद होता है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं।

4 मुसलमान का दिल ख़ुश करने का ज़रीआ़ ज़कात की अदाएगी से ग़रीब मुसलमान की ज़रूरत पूरी होती है और उस का दिल ख़ुश होता है। ह़दीसे पाक में मुसलमान का दिल ख़ुश करना अ़ज़ीम कारे सवाब और अफ़्ज़ल अ़मल है, नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक के नज़दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बाद सब से अफ़्ज़ल अ़मल मुसलमान को ख़ुश करना है।[3] मज़ीद फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल अ़मल मोमिन को ख़ुश करना है, ख़्वाह उस की सत्र पोशी कर के हो या उसे शिकम सैर कर के या उस की ह़ाजत पूरी करने के ज़रीए हो।[4]

5 भाई चारे का क़ियाम उ़मूमन अमीर लोग मालो दौलत की बिना पर ग़रीबों को ज़िल्लतो ह़क़ारत की नज़र से देखते हैं मगर ज़कात देने की सूरत में ग़रीब मुसलमान भाई से मह़ब्बत और उन के दरमियान इत्तिह़ाद की फ़ज़ा क़ाइम होती है और उन के दरमियान मज़बूत भाई चारा क़ाइम रहता है जिस से इस्लामी मुआ़शरे को फ़रोग़ मिलता है। अगर हम आपस में मुत्तह़िद और प्यार मह़ब्बत से रहें तो बड़े से बड़े चेलेंज से निमट सकते हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सारे मुसलमान एक इमारत की त़रह़ हैं, जिस का एक ह़िस्सा दूसरे को ताक़त पहुंचाता है।[5] मज़ीद फ़रमाया : मुसलमानों की आपस में दोस्ती और रह़मत और शफ़्क़त की मिसाल जिस्म की त़रह़ है, जब जिस्म का कोई उ़ज़्व बीमार होता है तो बुख़ार और बे ख़्वाबी में सारा जिस्म उस का शरीक होता है।[6]

6 दुआएं मिलती हैं ज़कात का एक फ़ाएदा येह भी है कि ग़रीबों मोह़ताजों और ज़रूरत मन्दों की दुआएं मिलती हैं, ज़ाहिर है कि हम जब किसी की मुश्किल में मदद करेंगे तो उस का दिल ख़ुश होगा और वोह दिल से हमें दुआएं भी देगा और ऐसे लोगों की दुआएं क़बूल भी होती हैं। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हें अल्लाह पाक की मदद और रिज़्क़ ज़ईफ़ों (की बरकत और उन की दुआओं) के सबब पहुंचता है।[7] इस ह़दीसे पाक का माना येह है कि तुम में कमज़ोर लोगों के मौजूद होने की

बरकत से तुम्हें हिस्सी और मानवी रिज़्क़ दिया जाता है और तुम्हारे ज़ाहिरी व बातिनी दुश्मनों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद की जाती है।[8]

ज़कात न देने के दुन्यावी और उख़रवी नुक़्सानात

अगर कोई हुक्मे शरई पर अमल करने में सुस्ती करे और अपने अम्वाल की ज़कात अदा न करे तो उसे दुन्या व आख़िरत में कई नुक़्सानात का सामना करना पड़ सकता है। ज़कात न देने के चन्द नुक़्सानात येह हैं :

1 ज़कात न देने से बन्दा इन फ़ज़ाइल और फ़वाइद से महरूम हो जाता है जो ज़कात की अदाएगी की सूरत में हासिल होते हैं। 2 ज़कात न देने वाला अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हुक्म अदूली की बिना पर उन की ना फ़रमानी का मुर्तकिब होता है। 3 ज़कात न देने वाला शख़्स माल की महब्बत और बुख़्ल जैसी बुरी सिफ़त में मुब्तला हो कर सख़ावत, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही वग़ैरा अच्छी सिफ़ात की बरकतों से महरूम रह जाता है। 4 जिस माल की ज़कात अदा न की जाए, वोह माल जलने, चोरी हो जाने, आन्धी, ज़लज़ला, सैलाब या किसी भी आफ़ते समावी की वज्ह से बरबाद हो जाता है। बड़े बड़े कारोबारी और फ़ेक्ट्री मालिकान अचानक दीवालिया का शिकार हो कर क़र्ज़ तले दब कर बरबाद हो जाते हैं। मुम्किन है येह तबाही माल की ज़कात न देने की वज्ह से हुई हो मगर किसी के बारे में येह बद गुमानी नहीं कर सकते कि ज़कात न देने की वज्ह से उस का कारोबार तबाह हुवा होगा। 5 ज़कात न देने की नहूसत से इन्फ़िरादी नुक़्सान के साथ साथ इज्तिमाई नुक़्सान का सामना भी हो सकता है, आज हम तरह तरह के इज्तिमाई मसाइल का शिकार हैं, मसलन मेहंगाई, बे रोज़गारी, बीमारी, गर्मी की शिद्दत, पानी की क़िल्लत वग़ैरा मसाइल का शिकार हैं मुम्किन है कि येह सब ज़कात न देने का नतीजा हो क्यूंकि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ौम ज़कात न देगी अल्लाह पाक उसे क़हत में मुब्तला फ़रमाएगा।[9] एक और मक़ाम पर फ़रमाया : जब लोग ज़कात की अदाएगी छोड़ देते हैं तो अल्लाह पाक बारिश को रोक देता है अगर ज़मीन पर चौपाए मौजूद न होते तो आस्मान से पानी का एक क़तरा भी न गिरता।[10] 6 ज़कात न देने वाले को न सिर्फ़ दुन्या में मुश्किलात व मसाइब उठाना पड़ती हैं बल्कि मरने के बाद भी दर्दनाक अज़ाब की सूरत में उस की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, आला हज़रत, मौलाना इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़कात न देने वालों के लिये कुरआनो हदीस में बयान कर्दा अज़ाबात का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं : खुलासा येह है कि जिस सोने चांदी की ज़कात न दी जाए, रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग में तपा कर उस से उन की पेशानियां, करवटें, पीठें दाग़ी जाएंगी। उन के सर, पिस्तान पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि छाती तोड़ कर शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ता सीने से निकल आएगा, पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा, गुद्दी तोड़ कर पेशानी से उभरेगा। जिस माल की ज़कात न दी जाएगी रोज़े क़ियामत पुराना खूंख़्वार अज़्दहा बन कर उस के पीछे दौड़ेगा, येह हाथ से रोकेगा, वोह हाथ चबा लेगा, फिर गले में तौक़ बन कर पड़ेगा, उस का मुंह अपने मुंह में ले कर चबाएगा कि मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना। फिर उस का सारा बदन चबा डालेगा। والعیاذ باللہ ربّ العلمین[11]

नोट अवामी तौर पर लोगों का येह ज़ेहन होता है कि ज़कात की अदाएगी माहे रमज़ान में करनी चाहिये, क्यूंकि उस माहे मुबारक में जिस तरह दीगर नेकियों का सवाब बढ़ जाता है, इसी तरह राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने का अज्र भी बढ़ जाता है। इस में कोई शक नहीं, मगर येह ज़रूरी नहीं कि सिर्फ़ माहे रमज़ान में ही ज़कात देनी होती है, बल्कि जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है उस को मालूम होना चाहिये कि मुझ पर ज़कात फ़र्ज़ होने की कौन सी इस्लामी तारीख़ और कौन सा इस्लामी महीना है, अगर इस के बारे में इल्म नहीं है तो याद रखिये ! जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है, उस को ज़कात से मुतअल्लिक़ ज़रूरी मसाइल सीखना भी फ़र्ज़ है, अगर नहीं सीखेगा तो गुनाहगार होगा। ऐसा न हो कि ज़ियादा सवाब के इन्तिज़ार में हम ज़कात की अदाएगी में ताख़ीर कर के अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी कर रहे हों। अल्लाह पाक हमें अपने इस हुक्म पर अमल की सआदत नसीब फ़रमाए और इस की बरकतों से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

(1) الترغیب والترہیب، 1/301، حدیث: 12 (2) معجم کبیر، 12/324، حدیث: 13561 (3) معجم کبیر، 11/59، حدیث: 11079 (4) الترغیب والترہیب، 3/85، رقم: 3 (5) بخاری، 2/127، حدیث: 2446 (6) مسلم، ص 1071 حدیث: 6586، (7) بخاری، 2/280، حدیث: 2896 (8) مرقاۃ المفاتیح، 9/99، تحت الحدیث: 5246 (9) معجم اوسط، 3/275، حدیث 4577 (10) ابن ماجہ، 4/367، حدیث: 4019 (11) فتاوی رضویہ، 10/153۔

कुछ नेकियां कमा ले

जन्नत में महल दिलाने वाली नेकियां

उम्मते मुहम्मदिया को अल्लाह करीम ने एक ख़ास शरफ़ व फ़ज़्ल येह अ़ता फ़रमाया है नेकियों का अज्र दस गुना से कई सौ गुना तक अ़ता फ़रमाया है। येही वज्ह है कि इस उम्मत की उ़म्रें अगर्चे कम हैं लेकिन ब रोज़े महशर अज्रो सवाब में येह उम्मत सब से ज़ियादा होगी। अहादीसे करीमा में ऐसे कसीर आमाल का बयान है जिन के करने वालों को कई त़रह़ की ख़ुश ख़बरियां दी गई हैं, उन्ही में से एक दरगुज़र कर देना यानी किसी से बदला न लेना और मुआ़फ़ कर देना है। दरगुज़र करने के जहां दीगर कई फ़ाएदे और अज्रो सवाब हैं वहीं एक अज्र येह भी है कि दरगुज़र करने वाले को अल्लाह करीम जन्नत में महल अ़ता फ़रमाता है, आइये ! ज़ैल में तीन अहादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 मुसलमान भाई को मुआ़फ़ कर देना

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक रोज़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया (यानी मुस्कुराए) । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! आप ने किस लिये तबस्सुम फ़रमाया ? इरशाद फ़रमाया : मेरे दो उम्मती अल्लाह पाक की बारगाह में दो ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम ! इस से मेरा इन्साफ़ दिला कि इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया था। अल्लाह पाक दावा करने वाले से फ़रमाएगा : अब येह बेचारा (यानी जिस पर दावा किया गया है वोह) क्या करे, उस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं। मज़्लूम (यानी दावा करने वाला) अ़र्ज़ करेगा : मेरे गुनाह उस के ज़िम्मे डाल दे इतना इरशाद फ़रमा कर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गिर्या फ़रमाने लगे । फ़रमाया : वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा। क्यूंकि उस वक़्त (यानी क़ियामत के दिन) हर एक इस बात का ज़रूरत मन्द होगा कि उस का बोझ हल्का हो। अल्लाह पाक मज़्लूम से फ़रमाएगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम ! मैं अपने सामने सोने के बड़े शहर और बड़े बड़े महल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं। येह शहर और उ़म्दा महल्लात किस पैग़म्बर या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ? अल्लाह पाक फ़रमाएगा : येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे । बन्दा अ़र्ज़ करेगा : इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है ? अल्लाह पाक फ़रमाएगा : तू अदा कर सकता है। वोह अ़र्ज़ करेगा : वोह किस त़रह़ ? अल्लाह करीम फ़रमाएगा : इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने सब हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये । अल्लाह पाक फ़रमाएगा : अपने भाई का हाथ पकड़ो और दोनों इकठ्ठे जन्नत में चले जाओ । फिर सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक से डरो और मख़्लूक़ में सुल्ह़ करवाओ क्यूंकि रब्बे करीम भी क़ियामत

के दिन मुसलमानों में सुल्ह़ करवाएगा ।[1]

❷ गुस्सा पी जाना और दरगुज़र करना

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने मेराज की रात जन्नत में ऊंचे मह़ल्लात देखे तो पूछा : ऐ जिब्रील ! येह किस के लिये हैं ? अ़र्ज़ की : उन के लिये हैं जो गुस्सा पी जाते हैं और लोगों से दरगुज़र करते हैं ।[2]

❸ तीन आ़दतों के सबब जन्नत में मह़ल

रह़मते आ़लमिय्यान صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो उसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो उस से क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नाता़ जोड़े ।[3]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन्तिक़ाम का ज़ाइक़ा बहुत लज़ीज़ मह़सूस होता है, लेकिन इस्लामी तालीमात की रौशनी में हमारा येह त़र्ज़े अ़मल मुनासिब नहीं । बदला लेना, मुआ़फ़ न करना, गुस्से को क़ाबू में न रखना, रिश्ते नाते़ तोड़ना इन सब चीज़ों की इस्लाम में ह़ौसला शिकनी की गई है जैसा कि आप अह़ादीसे मुबारका पढ़ चुके । लिहाज़ा लोगों को मुआ़फ़ कीजिये बिल ख़ुसूस जब आप बदला लेने पर क़ादिर हों, जो आप का ह़क़ खाए उस के साथ भी ख़ैर ख़्वाही का मुआ़मला कीजिये, जो आप से मुंह मोड़े उस के साथ भी मिलनसारी से पेश आइये । मह़ब्बतें बांटिये, सुन्नतें आ़म कीजिये । अल्लाह पाक हमें इस्लामी इक़्दार के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1)مستدرک،5/795،حدیث:8758(2)مسند الفردوس، 1/405، حدیث: 3011(3)مستدرک للحاکم،3/12،حدیث:3215۔

रमज़ानुल मुबारक की मुनासबत से इन कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिये ।

नसीहत

इस्लाम की रौशन तालीमात का एक इन्तिहाई ह़सीन पहलू दूसरे का भला चाहना और उसे मुम्किना नुक़्सान से बचाने की सई करना भी है, चूंकि हम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मख़्लूक़ हैं और उसी के हुक्म के पाबन्द हैं तो उस ने इस दुन्या को हमारे लिये दारुल अ़मल बनाया और आख़िरत को दारुल जज़ा। चुनान्चे जो दुन्या में बुरे अ़मल करेगा तो आख़िरत में सज़ा का ह़क़दार ठहरेगा, इस्लाम ने ऐसे में हमें तालीम दी है कि अपने दोस्तों, हमसायों, मा तह़तों बल्कि अजनबियों को भी नसीह़त करें और उन्हें अच्छे अ़मल की दावत दें और बुराई से मन्अ़ करें। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि नसीह़त के अन्दाज़ व उस्लूब की भी तरबिय्यत की है चुनान्चे अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से।[1] एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ عِظْهُمْ وَ قُلْ لَّهُمْ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِیْغًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम उन से चश्म पोशी करो और उन्हें समझाओ और उन के मुआ़मले में उन से रसा (असर करने वाली) बात कहो।[2]

इन आयाते बय्यिनात में अल्लाह पाक ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी राह की त़रफ़ बुलाने, समझाने और नसीह़त करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। नसीह़त करना जहां हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है वहीं दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की भी सुन्नत है। क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का अपनी अपनी उम्मतों को नसीह़त करने का ज़िक्र मिलता है जैसा कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ﴿اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं अल्लाह की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते।[3]

ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ﴿اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِیْنٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मोतमद ख़ैर ख़्वाह हूं।[4]

ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : ﴿یٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّیْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ وَ لٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِیْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी (पसन्द करने वाले) ही नहीं।[5]

ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के क़ौल की ह़िकायत बयान करते हुए अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा और वोह नसीह़त करता था ऐ मेरे बेटे अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।[6]

इस आयत से चन्द मस्अले मालूम हुए : एक येह कि इन्सान पहले अपने घर वालों को वाज़ो नसीह़त करे फिर दूसरों को। दूसरा येह कि नसीह़त नर्म अल्फ़ाज़ में होनी चाहिये जैसा कि ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने बेटे से ऐ मेरे बेटे फ़रमा कर ख़िताब फ़रमाया। तीसरा येह कि आमाल की इस्लाह़ से पहले अ़क़ाइद की दुरुस्ती की जाए जैसा कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने फ़रज़न्द को पहले येह

नसीह़त की, कि शिर्क न करना । चौथा येह कि गुज़श्ता बुज़ुर्गों की तालीम याद दिलाना और उन के अक़्वाल नक़्ल करना सुन्नते इलाहिय्या है ।[7] मालूम हुवा कि नसीह़त करना अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام और सालिह़ीन का त़रीक़ए कार है ।

नसीह़त करना मुसलमान का ह़क़ है । ह़दीसे पाक में एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर जो हुक़ूक़ बयान फ़रमाए गए उन में से एक येह भी है : وَاِذَا اسۡتَنۡصَحَکَ فَانۡصَحۡ لَہٗ जब तुम से नसीह़त त़लब करे तो उसे नसीह़त करो ।[8] इस ह़दीसे पाक के तह़त ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : नसीह़त आ़म ह़ालात में सुन्नत है मगर जब कोई नसीह़त की बात सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर करे तो फिर उसे नसीह़त करना वाजिब व ज़रूरी है ।[9]

नसीह़त वोह कलाम है जो राहे दीन में ना रवा और ना मुनासिब बातों से रोकने का फ़ाएदा दे ।[10] नसीह़त की हर एक को ह़ाजत होती है और नसीह़त ज़िन्दगी में बेहतरी लाने में बहुत अहम किरदार अदा करती है । बसा औक़ात नसीह़त तासीर का ऐसा तीर बन कर दिलों में पैवस्त हो जाती है जिस से पथ्थर दिल भी पिघल कर मोम हो जाते हैं । येह उसी वक़्त मुम्किन है जब नसीह़त करने वाले के दिल में सामने वाले की हमदर्दी का जज़्बा हो और उस का नसीह़त करने का अन्दाज़ भी इन्तिहाई मुश्फ़िक़ाना और ह़कीमाना हो । ह़िक्मते अ़मली और नर्मी के साथ की जाने वाली नसीह़त ज़रूर फ़ाएदा देती है जैसा कि अल्लाह पाक का फ़रमाने आ़लीशान है । ﴿وَ ذَكِّرۡ فَاِنَّ الذِّكۡرٰى تَنۡفَعُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है ।[11] इस आयते करीमा में जहां समझाने और वाज़ो नसीह़त करने का ज़िक्र है वहीं इस के मुअस्सर होने का भी ज़िक्र है कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है ।

नासेह़ को चाहिये कि वोह जिस को नसीह़त करना चाहता है उसे सब के सामने न समझाए कि इस से जहां उस की दिल आज़ारी हो सकती है वहीं नसीह़त के बे असर हो जाने का भी क़वी इम्कान है, लिहाज़ा मौक़अ़ पा कर तन्हाई में समझाए । ह़ज़रते उम्मे दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : जिस ने अपने भाई को एलानिया नसीह़त की उस ने उसे ऐ़ब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी ।[12]

याद रखिये ! तन्हाई में समझाना नसीह़त और सब के सामने समझाना फ़ज़ीह़त यानी रुस्वा करना कहलाता है ह़ज़रते शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : सलफ़े सालिह़ीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ का त़रीक़ा येह था कि जब वोह किसी की कोई ना पसन्दीदा ह़रकत देखते तो तन्हाई में उसे समझाते या इस ह़वाले से उसे मक्तूब लिखते, क्यूंकि नसीह़त व फ़ज़ीह़त में येही फ़र्क़ है यानी ना पसन्दीदा बात पर तन्हाई में समझाना नसीह़त और सब के सामने समझाना फ़ज़ीह़त कहलाता है और ऐसा बहुत ही कम होता है कि लोगों के सामने किसी को समझाते हुए रिज़ाए इलाही की निय्यत भी दुरुस्त हो, क्यूंकि येह इन्तिहाई बुरा त़रीक़ा है ।[13]

नसीह़त करना अगर्चे सुन्नत और कारे सवाब है मगर नसीह़त करने में बत़ौरे ख़ास इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि इस से किसी मुसलमान की तज़लील व तह़क़ीर न हो और न ही उसे किसी गुनाह पर शर्मो आ़र दिलाई जाए जिस से उसे नदामत व शर्मिन्दगी का सामना करना पड़े । ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मोमिन पर्दा पोशी और नसीह़त करता है जब कि फ़ासिक़ो फ़ाजिर बदनाम करता और शर्मो आ़र दिलाता है ।[14]

नसीह़त करना आसान है, मगर उसे क़बूल करना बहुत मुश्किल काम है लिहाज़ा नसीह़त करने वाला बा अ़मल हो और जिस बात की नसीह़त कर रहा है ख़ुद भी उस पर अ़मल पैरा हो ताकि उस की ज़बान में तासीर पैदा हो । ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जब आ़लिम अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे तो उस की नसीह़त लोगों के दिलों से ऐसे फिसलती है जैसे साफ़ पथ्थर से पानी का क़त़रा फिसल जाता है ।[15]

अल्लाह पाक हमें अच्छी नसीह़त करने और उसे क़बूल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)پ14، النحل:125(2)پ5، النسآء:63(3)پ8، الاعراف:62(4)پ8، الاعراف: 68(5)پ8، الاعراف:79(6)پ 21، لقمٰن: 13 (7)دیکھئے: نور العرفان، پ 21، لقمٰن، تحت الآیۃ:13(8)مسلم، ص 919، حدیث: 5651 (9)اشعۃ اللمعات، 1/673 (10) تفسیر کبیر، پ 4، اٰلِ عمرٰن، تحت الآیۃ:138، 3/370(11)پ27، الذّٰریٰت:55(12)شعب الایمان، 6/112، رقم:7641 (13)قوت القلوب، 2/371 (14)جامع العلوم والحکم، ص 109(15)الزھد للامام احمد بن حنبل، ص325، رقم:1884۔

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

पहले आज़्माओ बाद में अपनाओ

किसी शख़्स के साथ भाई बन्दी क़ाइम करना चाहते हो तो उसे ग़ुस्सा दिला कर देखो कि अगर वोह ग़ुस्से में भी तुम्हारे साथ इन्साफ़ करे तो ठीक है वरना उसे छोड़ दो। (इरशादे हज़रते लुक़्मान हकीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (عیونُ الاخبار، 1/405)

नादानी

बिग़ैर किसी अ़मल के जन्नत की ख़्वाहिश रखना ख़ता है, बे सबब शफ़ाअ़त का मुन्तज़िर रहना धोका है और जिस की ना फ़रमानी की उस की मेहरबानी की उम्मीद रखना नादानी व बे वुक़ूफ़ी है। (इरशादे मारूफ़ बिन फ़ीरोज़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (الکواکب الدُّرِّیہ، 1/717)

हुज़ूरे अकरम की पसन्द को मेयार बना लीजिये

मह़ब्बत करने वाले को जो चीज़ें गवारा नहीं होतीं उन्हें भी वोह अपने मह़बूब की पसन्द की वज्ह से उस की ख़ुशी की ख़ात़िर अपना लेता है। (इरशादे अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) (طبقات الصوفیہ للسلمی، ص358)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

अम्र बिल मारूफ़ की अहमिय्यत

اَمر بِالمعروف و نہی عَنِ الْمُنْکَر उ़म्दा तमग़ाए मुसलमानी है। (फ़तावा रज़विय्या, 11 / 109)

बदतरीन शैत़ानी बहकावा

शैत़ान के तुर्क़े अग़वा (यानी गुमराह करने के त़रीक़ों में) से एक बदतर त़रीक़ा येह भी है कि आदमी को ह़सनात (नेकियों) के ह़ीले से हलाक करता है।

(फ़तावा रज़विय्या, 11 / 109)

जान हैं वोह जहान की

जिस त़रह़ बरात के मज्मअ़ का मग़ज़ व सबब दूल्हा होता है यूंही तमाम मम्लुकते इलाही के वुजूद का सबब और इस के अस्ली राज़ व मग़ज़ व माना सिर्फ़ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 15 / 286)

जब तक है रूह़ जिस्म में चलते हैं हाथ पांव
दूल्हा के दम के साथ येह सारी बरात है

अ़त्त़ार का चमन कितना प्यारा चमन !

दियानत दारी से कस्ब व तिजारत कीजिये

झूट, धोके और लूटमार से माल कमाने का आख़िरत में तो वबाल उठाना ही पड़ेगा बारहा दुन्या में भी नुक़्सान उठाना पड़ जाता है।

अ़क़्ल मन्दी की बात कोई भी करे क़बूल कीजिये

बच्चों की बात को भी नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिये बसा औक़ात बच्चे ऐसी अ़क़्ल मन्दी की बात कर जाते हैं कि बड़ों की अ़क़्ल भी ह़ैरान रह जाती है।

ईमानदारी से तिजारत, गाहकों में इज़ाफ़े का ज़ामिन है

तिजारत में सच्चाई और ईमानदारी अपनाने से गाहकों में इज़ाफ़ा होता है, लोगों का एतिमाद भी बर क़रार रहता है और अल्लाह पाक बरकत भी अ़त़ा फ़रमाता है।

अह़कामे तिजारत

1 वेब डेवेलोप मेन्ट के काम में शिर्कत की एक सूरत

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम दो बन्दे पहले अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा वेब साइट वग़ैरा बनाने का काम करते थे अब हम ने मिल कर पार्टनर शिप की है इस बात पर कि हम दोनों मिल कर कम्पनियों और दीगर लोगों को जाइज़ वेब साइट बना कर दिया करेंगे लोगों से काम लेने और काम करने में दोनों बराबर शरीक होंगे पैसे कोई भी नहीं मिलाएगा और जो भी नफ़्अ़ हुवा करेगा वोह आधा आधा तक़्सीम होगा, अख़राजात जो भी होंगे वोह काम की एडवान्स रक़म से पूरे किये जाएंगे शरीक अपनी रक़म नहीं लगाएंगे । बराहे करम राहनुमाई फ़रमा दें क्या हमारा इस त़रह़ काम करना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप दोनों का बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ बाहम शिर्कत करना बिल्कुल जाइज़ है ।

तफ़्सील येह है कि सुवाल में शिर्कत का जो त़रीक़ा बयान किया गया है उस का तअ़ल्लुक़ शिर्कते अ़क़्द की क़िस्म शिर्कते अ़मल से है जिस में दो लोग मिल कर काम में शिर्कत करते हैं यानी लोगों से काम वुसूल करते हैं और मिल कर काम करते हैं और जो नफ़्अ़ होता है वोह आपस में तै़ शुदा फ़ीसद के ह़िसाब से तक़्सीम कर लेते हैं नीज़ शिर्कते अ़मल में शुरका एक दूसरे के लिये बराबर नफ़्अ़ भी रख सकते हैं । लिहाज़ा पूछी गई सूरत में आप दोनों का मिल कर वेब साइट के काम में शिर्कते अ़मल करना और एक दूसरे के लिये आधा आधा नफ़्अ़ रखना जाइज़ है ।

शिर्कते अ़मल किसे कहते हैं इस के मुतअ़ल्लिक़ सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शिर्कते बिल अ़मल येह है कि दो कारीगर लोगों के यहां से काम लाएं और शिर्कत में काम करें और जो कुछ मज़दूरी मिले आपस में बांट लें ।"

(बहारे शरीअ़त, 2 / 505)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क्लाइन्ट से काम ले कर किसी दूसरे से करवाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं एक Software Engineer हूं । मेरे पास कई ऑर्डर्ज़ आते हैं और वक़्त न होने के बाइ़स मैं येह ऑर्डर्ज़ दूसरे डेवलपर्ज़ को दे देता हूं । एक ऑर्डर मुझे मसलन 1000 डॉलर का मिलता है तो मैं जिस डेवलपर से काम करवाता हूं उस से 400 डॉलर में बनवाता हूं । ऑर्डर लेते वक़्त क्लाइन्ट मुझे ख़ास नहीं करता कि येह आप को ही बनाना है, लेकिन क्लाइन्ट येही समझ रहा होता है कि येह मैं ने बनाया है । जब येह डेवलपर सोफ़्टवेर बना लेते हैं तो फिर मैं चेक करता हूं, कुछ इज़ाफ़ा करना होता है या कमी करनी होती है तो वोह करने के बाद क्लाइन्ट के ह़वाले

भी मैं ही करता हूं। मेरी राहनुमाई फ़रमाएं कि क्लाइन्ट से काम ले कर दूसरे से करवाना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : आई टी की लाइन में जो प्रोजेक्ट कम्पनी सत्ह़ पर लिये जाते हैं उन का उ़र्फ़ येही है कि मुतअ़य्यन फ़र्द की तख़्सीस वहां नहीं होती। जब तक मुतअ़य्यन फ़र्द की तख़्सीस के साथ काम न पकड़ा हो कि फ़ुलां ही करेगा तो काम किसी से भी करवाया जा सकता है कि गाहक को अस्ल में मेयारी काम दरकार होता है जब तक तख़्सीस न करे उस के मफ़ाद में कोई ख़राबी वाक़ेअ़ नहीं होती। लिहाज़ा आप ख़ुद बनाएं या अपने वर्कर्ज़ से बनवाएं या किसी दूसरे डेवलपर से उजरत पर बनवाएं जाइज़ है और दूसरे से कम उजरत पर बनवाएं येह भी जाइज़ है। अलबत्ता अगर कोई क्लाइन्ट आप से यूं कहता है कि किसी और से येह सोफ़्टवेर नहीं बनवाना बल्कि आप को ख़ुद ही बनाना है तो इस सूरत में आप का दूसरे से बनवाना जाइज़ न होगा।

अ़ल्लामा कासानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : "استاجر انسانا علی خیاطۃ ثوب بدرھم، فاستاجر الاجیر من خاطہ بنصف درھم، طاب لہ الفضل" यानी किसी शख़्स को एक दिरहम के बदले कपड़ा सीने पर रखा, अजीर ने दूसरा शख़्स निस्फ़ दिरहम के बदले रख लिया तो उस पहले शख़्स का ज़ियादा उजरत लेना ह़लाल है। (بدائع الصنائع، 6/97)

बहारे शरीअ़त में है : "अगर येह शर्त़ नहीं है कि वोह ख़ुद अपने हाथ से काम करेगा दूसरे से भी करा सकता है अपने शागिर्द से कराए या नौकर से कराए या दूसरे से उजरत पर कराए सब सूरतें जाइज़ हैं।"

(बहारे शरीअ़त, 3 / 119)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 मर्हूम वालिद के माल पर ज़कात का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि मेरे वालिद साह़िब ने अपने माले तिजारत वग़ैरा पर लाज़िम ज़कात अदा करने के लिये पैसे अलग किये थे लेकिन ज़कात अदा करने से पहले बीमार हो गए और उसी बीमारी में उन का इन्तिक़ाल हो गया और फ़र्ज़ ज़कात अदा न कर सके और इस के मुतअ़ल्लिक़ कोई वसिय्यत भी नहीं की, अब इन पैसों के मुतअ़ल्लिक़ हमारे लिये क्या हुक्म है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप के वालिद साह़िब पर ज़कात अदा करना लाज़िम हो चुका था जिसे अदा करने के लिये पैसे भी वालिद साह़िब ने अलग कर लिये थे लेकिन अदा करने से पहले वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो गया है जिस की वज्ह से ज़कात अदा करने के लिये अलग किये हुए पैसे और दीगर माल, माले विरासत बन गए अब येह पैसे वुरसा की रिज़ामन्दी के बिग़ैर ज़कात की मद में नहीं दिये जा सकते।

हां अगर वालिद साह़िब अपनी ज़कात अदा करने की वसिय्यत कर जाते, तो उन की येह वसिय्यत एक तिहाई माल में नाफ़िज़ करना वाजिब होता लेकिन उन्हों ने वसिय्यत भी नहीं की जिस की वज्ह से अब येह ज़कात अदा करना वुरसा पर वाजिब तो नहीं है लेकिन अगर आ़क़िल व बालिग़ वुरसा अपने अपने ह़िस्सों से ज़कात की अदाएगी की इजाज़त दे दें, तो सिर्फ़ उन्ही के ह़िस्सों से वालिदे मर्ह़ूम की ज़कात की अदाएगी की जा सकती है येह उन की जानिब से वालिद साह़िब के साथ भलाई है जिस पर येह सवाब के ह़क़दार होंगे, मगर जो वुरसा इजाज़त न दें या फिर इजाज़त देने के अहल ही न हों जैसे ना बालिग़ या ग़ैर आ़क़िल वुरसा तो उन के ह़िस्से से ज़कात की अदाएगी नहीं हो सकती।

सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़्मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : "जिस शख़्स पर ज़कात वाजिब है अगर वोह मर गया तो साक़ित़ हो गई यानी उस के माल से ज़कात देना ज़रूर नहीं, हां अगर वसिय्यत कर गया तो तिहाई माल तक वसिय्यत नाफ़िज़ है और अगर आ़क़िल बालिग़ वुरसा इजाज़त दे दें तो कुल माल से ज़कात अदा की जाए।" (बहारे शरीअ़त, 1 / 892)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

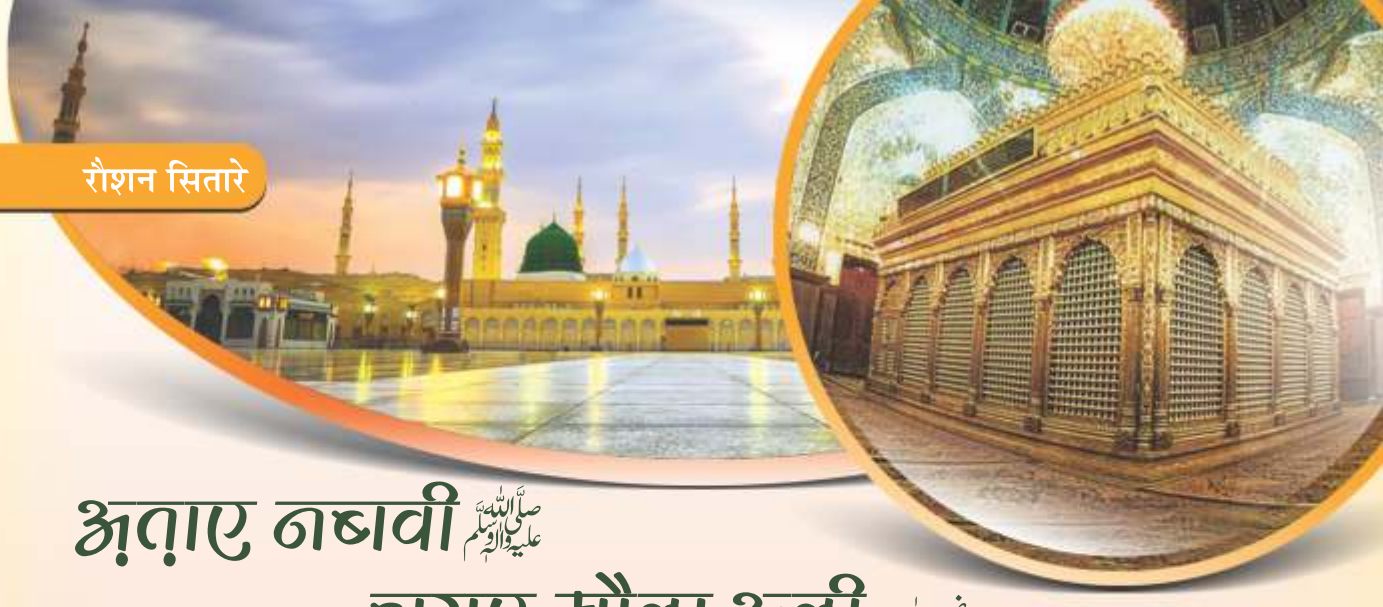

अ़ताए नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم बाराए मौला अ़ली رضی اللہ عنہ

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को बारगाहे रिसालत से यूं तो वक़्तन फ़ वक़्तन कुछ न कुछ इन्आ़मात और अश्या मिलती रहीं, मगर सब से बढ़ कर और सब से क़ीमती इन्आ़म येह रहा कि दुन्या ही में जन्नत की बिशारत पाई और जिगर गोशए रसूल ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا आप की ज़ौजिय्यत में आईं। इस मज़मून में आप बारगाहे रिसालत से मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को मिलने वाली कुछ चीज़ों के बारे में पढ़ेंगे।

कभी तल्वार जुल फ़िक़ार अ़ता की एक मौक़अ़ पर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को अपनी ज़िरह़ पहनाई, अपना इ़मामा बांधा और अपनी तल्वार जुल फ़िक़ार अ़ता फ़रमाई।[1]

कभी झन्डा अ़ता किया सिने 3 हिजरी माहे शव्वाल जंगे उहुद में मुहाजिरीन का झन्डा ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के पास था उन की शहादत के बाद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह झन्डा ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के ह़वाले कर दिया।[2] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ग़ज़्वए बद्र में भी प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन का झन्डा मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को दिया था।[3] ग़ज़्वए ख़ैबर में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई सह़ाबा को ख़ैबर का क़ल्आ़ फ़त्ह़ करने के लिये भेजा मगर कोशिश के बा वुजूद क़ल्आ़ फ़त्ह़ न हो पाया, आख़िरे कार रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कल मैं येह झन्डा उस शख़्स के हाथ में दूंगा जो अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत करता है, अल्लाह उस के हाथ से क़ल्आ़ फ़त्ह़ करवाएगा, ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ उस वक़्त आशूबे चश्म के मरज़ में मुब्तला थे फिर (अगले दिन) रसूले करीम ने आप को बुलवाया और आप की आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया फिर झन्डे को तीन मरतबा हिलाया और आप को अ़ता किया, फिर तारीख़ में एक रौशन बाब का इज़ाफ़ा हुवा और ख़ैबर का क़ल्आ़ आप के हाथ पर फ़त्ह़ हो गया।[4] एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब भी जंग पर रवाना फ़रमाया तो लश्करे इस्लाम का झन्डा आप को अ़ता फ़रमाया।[5]

कभी नालैन ठीक करने के लिये दी एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नालैने मुबारका का तस्मा टूट गया, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ उस वक़्त अपने घर में थे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नालैने मुबारक आप को दी ताकि वोह नालैने मुबारका का तस्मा ठीक कर दें।[6] एक बार रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ गिरौहे क़ुरैश ! तुम (ना पसन्दीदा कामों से) ज़रूर बाज़ आ जाओगे या फिर अल्लाह तुम पर ऐसा शख़्स भेजेगा जो दीन की वज्ह से तुम्हारी गर्दनों को मारेगा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! क्या वोह मैं हूं ? फ़रमाया : नहीं ! ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! क्या वोह मैं हूं ? फ़रमाया नहीं ! बल्कि वोह नालैन गांठने वाला है, उस वक़्त नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी नाले मुबारक मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ को दी हुई थी और मौला अ़ली नाले मुबारक गांठ रहे थे।[7]

कभी गुलाम तोहफ़े में दिया एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा और मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا को एक गुलाम तोह़फ़े में दिया और फ़रमाया : इस के साथ अच्छा सुलूक करना मैं ने इसे नमाज़ पढ़ते देखा है ।[8]

कभी नेज़ा अ़ता किया नज्जाशी बादशाह ने बारगाहे रिसालत में तीन नेज़े (या अ़सा) भेजे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक अपने लिये रख लिया जब कि दूसरा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه को और तीसरा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को अ़ता फ़रमाया ।[9]

कभी कंघी अ़ता फ़रमाई बारगाहे रिसालत में एक मरतबा दो कंघियां पेश की गईं तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन में से एक ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ عَنْه को और दूसरी कंघी मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को दी ।[10]

कभी याकूत कन्दा करने के लिये दिया एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को याकूत का एक टुकड़ा दिया और उस पर "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" नक़्श करवाने का हुक्म दिया आप ने ऐसा ही किया। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने याकूत देख कर पूछा : तुम ने अल्फ़ाज़ **"मुह़म्मद रसूलुल्लाह"** को मज़ीद क्यूं बढ़ाया ? आप ने अ़र्ज़ की : आप ने जिस बात का हुक्म दिया था मैं ने वोही किया है, इतने में जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : बेशक ! अल्लाह करीम आप से इरशाद फ़रमाता है : आप हम से मह़ब्बत करते हैं लिहाज़ा (इस याकूत पर) हमारा नाम लिखवाया और हम भी आप से मह़ब्बत करते हैं लिहाज़ा हम ने आप का नाम लिख दिया ।[11]

कभी लोगों की अमानतें रखवाईं हिजरत से पहले मक्का के लोग अपनी अमानतें नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास रखवाया करते थे, रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्का से मदीने की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई तो वोह अमानतें ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को सिपुर्द कर दीं कि वोह मक्का में ठहर कर लोगों की अमानतें उन तक पहुंचा दें फिर हिजरत कर के मदीने पहुंच जाएं, आप ने ऐसा ही किया ।[12]

कभी दिरहम अ़ता किये एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास दस दिरहम थे, रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार दिरहम ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को दिये (और फ़रमाया : मेरे लिये क़मीस ख़रीद लाओ) आप رَضِیَ اللهُ عَنْه चार दिरहम की क़मीस ख़रीद लाए, एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरे पास कोई क़मीस नहीं है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह क़मीस उसे अ़ता कर दी, फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को दोबारा चार दिरहम अ़ता फ़रमाए तो उन्हों ने नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये एक और क़मीस ख़रीद ली ।[13]

कभी दियत अदा करने के लिये रक़म दी एक मौक़अ़ पर किसी मुसलमान सिपह सालार की ग़लत़ फ़हमी की बिना पर बनी जज़ीमा के कुछ मुसलमान शहीद हो गए तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को रक़म सिपुर्द की और फ़रमाया : जो नुक़्सान हुवा है, तुम उस की दियत अदा कर दो, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه वोह रक़म ले कर बनी जज़ीमा पहुंचे और रक़म उन्हें दी लेकिन पूरा ह़क़ अदा न हो पाया, आप ने ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه को बारगाहे रिसालत में भेज कर मज़ीद रक़म मंगवाई तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद रक़म ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه को भिजवा दी ।[14]

वफ़ात व वसिय्यत सिने 40 हिजरी 17 रमज़ान को इब्ने मुल्जम ख़ारिजी ने कूफ़ा में आप पर क़ातिलाना ह़म्ला किया, ज़ह़र में बुझी हुई तल्वार का वार आप के दिमाग़ तक पहुंच गया, आप के पास नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बची हुई ख़ुश्बू मौजूद थी एक वसिय्यत येह की, कि मुझे (रसूले करीम की) वोही ख़ुश्बू लगा कर दफ़्न किया जाए। तीन रात के बाद (21 रमज़ान को) आप ने शहादत पाई ।[15]

बादे ख़ुलफ़ाए सलासा सब सह़ाबा से बड़ा
आप को रुत्बा मिला मौला अ़ली मुश्किल कुशा[16]

---

(1)سیرت حلبیہ، 2/427 (2)تاریخ ابن عساکر، 42/74 (3)زرقانی علی المواہب، 2/261 (4)مسند احمد، 1/708، حدیث:3062-سیرت ابن ہشام، ص440 (5)معجم کبیر، 3/79، حدیث:2720 (6)فضائل الصحابہ، ص637، حدیث:1083 (7)ترمذی، 5/399، حدیث: 3735-مصنف ابن ابی شیبہ، 17/104، حدیث:32744 ملخصاً (8)مسند ابی یعلیٰ، 3/202، حدیث:3370 (9)معجم کبیر، 6/41، حدیث:5454 (10)احکام القرآن لابن العربی، 3/538 (11)تحفۃ المنہاج لابن حجر ہیتمی، 1/124 (12)تہذیب الاسماء واللغات، 1/345 (13)تاریخ ابن عساکر، 4/89 (14)مغازی للواقدی، 3/882 ملخصاً (15)تہذیب الاسماء واللغات، 1/349-مرقاۃ المفاتیح، 1/271، تحت الحدیث:85 (16)وسائلِ بخشش، ص522۔

ह़ज़रते मह़मूद बिन रबीअ़ और ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमा رضی اللہ عنہما

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जिन ख़ुश नसीब बच्चों ने ह़ाज़िरी दी उन में ह़ज़रते मह़मूद बिन रबीअ़ और ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا भी शामिल हैं, आइये! इन के बचपन की मुख़्तसर सीरत पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सह़ाबए किराम से रौशन करते हैं :

ह़ज़रते मह़मूद बिन रबीअ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ की विलादत 6 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में हुई, आप जमीला बिन्ते अबी सअ़सआ़ के बेटे हैं और अन्सारी ख़ज़रजी हैं।[1]

रिवायते ह़दीस : आप से ह़दीस शरीफ़ भी मरवी है।

बचपन का यादगार वाक़िआ़ : आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे याद है जब मैं पांच साल का था तो रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे घर तशरीफ़ लाए और हमारे घर के कुंवें से एक डोल पानी लिया और मेरे चेहरे पर (बत़ौरे मिज़ाह़ के) पानी से कुल्ली फ़रमाई।[2]

मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से साबित हुवा कि छोटे बच्चों के साथ ख़ुश त़बई मस्नून है, नीज़ येह भी साबित हुवा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लुआ़ब मुबारक और पस ख़ूरदह से बरकत ह़ासिल करना भी मस्नून है।[3]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप तक़रीबन 5 साल के थे।[4] आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने 93 साल की उ़म्र में 99 हि. में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई।[5]

ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا

आप ह़ज़रते अबू सलमा अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रते उम्मे सलमा हिन्द رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के बेटे हैं, आप 2 हि. में ह़बशा में पैदा हुए, आप के वालिद साह़िब के विसाल फ़रमाने के बाद रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की वालिदा ह़ज़रते उम्मे सलमा से निकाह़ फ़रमाया तो आप हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परवरिश में आ गए थे।[6]

तादादे रिवायात : आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ से 12 अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं।[7]

प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ यादगार खाना : एक रिवायत में आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बचपन में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परवरिश में था, मेरा हाथ (खाना खाते हुए) प्याले में इधर उधर घूमता था, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लड़के! अल्लाह का नाम लो (यानी बिस्मिल्लाह पढ़ो), सीधे हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (ह़ज़रते उ़मर बिन अबू सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं :) इस के बाद से मैं हमेशा इसी त़रीक़े से खाना खाता रहा।[8]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ 9 साल के थे, आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने 83 हि. में मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई।[9]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) تہذیب التہذیب، 8/76- تاریخ ابن عساکر، 57/110 (2) بخاری، 1/45، حدیث: 77- زرقانی علی المواھب، 6/75 (3) نزہۃ القاری، 1/429 (4) معجم کبیر، 18/32 (5) الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 8/36 (6) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/245 (7) تہذیب الاسماء واللغات، 2/335 (8) بخاری، 3/521، حدیث: 5376 (9) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/246۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार हज़रते हाफ़िज़ गुलाम मुहम्मद नक़्शबन्दी भिकरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

रमज़ानुल मुबारक इस्लामी साल का नवां महीना है। इस में जिन सहाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 12 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

1 हज़रते हारिसा बिन सुराक़ा ख़ज़रजी अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه के फूफीज़ाद भाई हैं, येह मैदाने बद्र के हौ़ज़ से पानी पी रहे थे कि एक मुश्रिक ने आप को तीर मार कर शहीद कर दिया। आप उस ग़ज़्वे के पहले शहीद हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की वालिदा को उन के जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी देते हुए फ़रमाया : ऐ उम्मे हारिसा ! एक जन्नत नहीं कई जन्नतें हैं और हारिसा उन में से अफ़्ज़ल जन्नत (अल फ़िरदौस) में है।[1]

2 जुश्शिमालैन अबू मुहम्मद उ़मैर बिन अ़ब्द अम्र ख़ुज़ाई رَضِیَ اللهُ عَنْه दोनों हाथों से काम करने की वज्ह से जुश्शिमालैन मश्हूर हुए। आप मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम लाए और मदीनए मुनव्वरा हिजरत की, अव्वलन आप का क़ियाम हज़रते सअ़द बिन ख़ुज़ैमा के यहां हुवा। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को हज़रते यज़ीद बिन हारिस अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه का (मुवाख़ाती) भाई बना दिया। आप को उसामा जश्मी ने ग़ज़्वए बद्र में शहीद किया।[2]

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

3 हज़रते सय्यिद यह़या ज़ाहिद ह़सनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 17 शाबान 340 हि. में हुई और 24 रमज़ान 420 हि. को विसाल फ़रमाया आप आ़लिमे दीन और वलिय्ये कामिल थे।[3]

4 मज्जूबे ज़माना हज़रते शैख़ अ़मादुद्दीन अशरफ़ लकड़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه साहिबे जज़्ब कामिल थे। आप का विसाल 19 रमज़ान 1290 हि. को किछौछा मुक़द्दसा, यूपी हिन्द में हुवा। आप को महबूबे यज़्दानी हज़रत सय्यिद अशरफ़ जहांगीर अशरफ़ी से अज़राहे उवैसिया इरादत हासिल थी।[4]

5 शैख़े त़रीक़त हज़रते मौलाना ख़्वाजा हाफ़िज़ गुलाम मुहम्मद नक़्शबन्दी भिकरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आ़लिमे बा अ़मल, ख़लीफ़ए अव्वल हज़रते ख़्वाजा अ़ब्दुर्रसूल क़िस्वरी इब्ने ख़्वाजा गुलाम मुह़यिद्दीन क़िस्वरी दाइमुल हुज़ूरी और बानिये क़दीमी मर्कज़ी ईद गाह जुनूबी व मद्रसए ह़नफ़िया ग़ौसिया अन्वारुल क़ुरआन भिकर हैं। विसाल 21 रमज़ान 1355 हि. को हुवा, मज़ार मज़्कूर ईदगाह से मुत्तसिल है।[5]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

6 अ़ज़ीम मुह़द्दिस इमामे ह़सन बिन रबीअ़ बजली बोरानी कूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का विसाल रमज़ान की इब्तिदा में 221 हि. को हुवा, आप के असातिज़ा में इमाम अ़ब्दुल्लाह

बिन मुबारक और शागिर्दों में इमाम बुख़ारी और इमाम इब्राहीम राज़ी शामिल हैं।[6]

7 इमाम सईद बिन कसीर अन्सारी मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की पैदाइश 146 या 147 हि. और वफ़ात रमज़ान 226 हि. में हुई। आप तारीख़ व नसब के बहुत बड़े आ़लिम, हुस्ने बयान और अदब व फ़साहत की सिफ़त से मालामाल और अपनी ख़ूबियों की वज्ह से अहले इ़ल्म को मुतअस्सिर व हैरान करने वाली शख़्सिय्यत थे।[7]

8 शैख़ुल क़ुर्रा ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन सईद मुरादी मुर्सी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का तअ़ल्लुक़ यूरपियन मुल्क स्पेन (Spain) के शहर मुरसिया (Murcia) से है, आप की विलादत 542 हि. और वफ़ात जुमुआ़ की रात 21 रमज़ान 606 हि. को मुरसिया में हुई, आप बेहतरीन क़ारी, राविये ह़दीस, कसीरुल फ़ैज़, उस्ताज़ुल क़ुर्रा और जय्यिद आ़लिमे दीन थे।[8]

9 अ़ल्लामा शैख़ मुस्तफ़ा बिन मुह़म्मद सफ़वी क़ल्आवी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़ाज़िल व उस्ताज़ जामिअ़तुल अज़्हर क़ाहिरा, मिस्र, अ़ल्लामए ज़मां, फ़क़ीहे शाफ़ेई, मुअर्रिख़े मिस्र, शाइ़रे अ़रबी, मिलनसार व ख़ुश अख़्लाक़ और मक़्बूले ख़ासो आ़म थे, आप की पैदाइश रबीउ़ल अव्वल 1158 हि. को हुई। आप ने 17 रमज़ान 1230 हि. को विसाल फ़रमाया, नमाज़े जनाज़ा जामिअ़तुल अज़्हर में अदा की गई, आप की तुर्बत ज़ाविया शैख़ सिराजुद्दीन बलक़ीनी में है। अहम तसानीफ़ में शअ़री दीवान اِتحافُ النَّاظِرِیْن فِیْ مَدْحِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن اور صَفْوَۃُ الزَّمَان فِیْمَن تَوَلّٰی عَلٰی مِصْرَ مِنْ اَمِیْرٍ وَ سُلْطَان हैं।[9]

10 सुल्ताने नात ह़ज़रते मौलाना सय्यिद किफ़ायत अ़ली काफ़ी मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बिजनोर, यूपी, हिन्द के सादात घराने से थे। आप फ़ारिग़ुत्तह़सील आ़लिमे दीन, नात गो शाइ़र, मुजाहिदे जंगे आज़ादी 1857 ई, और आठ कुतुब के मुसन्निफ़ हैं। बहारे ख़ुल्द मन्ज़ूम तर्जमा शमाइले तिर्मिज़ी और दीवाने काफ़ी यादगार हैं। आप ने 22 रमज़ान 1274 हि. को जामे शहादत नोश किया, तदफ़ीन अ़क़्ब जेल मुरादाबाद, यूपी हिन्द में की गई, 30 साल के बाद तामीरे सड़क के लिये ज़मीन खोदने पर क़ब्र खुल गई, जिस्म बिल्कुल सलामत था।[10]

11 सिराजुल्लाह फ़िल बलदिल ह़राम शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान सिराज ह़नफ़ी मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की पैदाइश मक्कए मुकर्रमा में 1249 हि. में हुई और विसाल मिस्र में 4 रमज़ान 1314 हि. में हुवा। क़िराफ़ा क़ब्रिस्तान नज्द मज़ारे इमाम शाफ़ेई मदफ़ून हैं। आप ह़ाफ़िज़ व मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुह़द्दिसे ज़मां, दाइये इस्लाम, माहिरे फ़िक़्हे ह़नफ़ी, मुदर्रिस मस्जिदुल ह़राम, अदीब व शाइ़र और मुफ़्तिये मक्कए मुकर्रमा थे। इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने 1295 हि. में पहले ह़ज के मौक़अ़ पर उन से सनद ली जो 23 वासितों से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिल जाती है।[11]

12 ह़ज़रते मौलाना मोह़र्रम अ़ली चिश्ती लाहौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की पैदाइश लाहौर के एक इ़ल्मी व रूह़ानी चिश्ती ख़ानदान में 1280 हि. को हुई और आप ने यकुम रमज़ान 1353 हि. मुत़ाबिक़ 8 दिसम्बर 1934 ई. को वफ़ात पाई, लाहौर में दफ़्न किये गए। आप दीनी और दुन्यावी तालीम से आरास्ता, अ़रबी, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी से वाक़िफ़, माहिरे क़ानून, साह़िबे दीवान शाइ़र, अन्जुमने नोमानिया लाहौर के बानी रुक्न, ज़हीनो फ़त़ीन, हमदर्दे क़ौमो मिल्लत, मुह़िब व मुस्तफ़्तिये आला ह़ज़रत थे।[12]

---

(1) دیکھئے: طبقاتِ ابن سعد، 3/387- بخاری، 3/12، حدیث:3982- عمدۃ القاری، 12/31، تحت الحدیث:3982 (2) دیکھئے: طبقاتِ ابن سعد، 3/124، 125- الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/52 (3) اتحاف الاکابر، ص160- تذکرۂ مشائخِ قادریہ، ص55 (4) حیات مخدوم الاولیاء، ص68، 69- صحائف اشرفی، 1/264 (5) تفصیل از کتبہ مزار (6) التاریخ الکبیر للبخاری، 2/277- تہذیب الکمال، 2/554، 555- تہذیب التہذیب، 2/258- کتاب الثقات لابن حبان، 5/111، 112- طبقات ابن سعد، 6/374 (7) التعدیل والتجریح، 3/1079، 1080- تذکرۃ الحفاظ، 2/13- سیر اعلام النبلاء، 9/241، 242 (8) غایۃ النہایۃ فی طبقات القراء، 2/129- الموسوعۃ المیسرۃ فی تراجم ائمۃ التفسیر... الخ، 3/2098، رقم:2930 (9) صفوۃ الزمان فیمن تولی علی مصر من امیر و سلطان، ص26 تا 30- تاریخ عجائب الآثار فی التراجم والاخبار، 3/498 (10) تذکرہ علمائے اہل سنت، ص219 وغیرہ (11) مختصر نشر النور، ص243- ماخوذ از الاجازات المتینۃ، ص5، 6- فیض الملک المتعالی، ص766، 2058، https://www.alhejaz.org/torath/079001.htm (12) امام احمد رضا اور علمائے لاہور، ص35 تا 53- تجلیات مہر انور، ص817- فتاویٰ رضویہ، 29/591 تا 611- صد سالہ تاریخ انجمن نعمانیہ لاہور، ص102، 194۔

खजूर

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन ग़िज़ाओं को तनावुल फ़रमाने का शरफ़ बख़्शा उन में से एक "खजूर" भी है। खजूर का शुमार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महबूब तरीन ग़िज़ाओं में होता है।

खजूर के दरख़्त की ऊंचाई चालीस से पचास फ़िट तक होती है और उस में दो से छे फ़िट की लम्बी डालियां लगती हैं, उस का फल (खजूर) जब कच्चा हो तो रंग में हरा, लम्बाई में एक इंच तक होता है और फिर पक जाने के बाद लाल / पीले रंग का हो जाता है।[1]

खजूर का मिज़ाज

खजूर का मिज़ाज दूसरे दर्जे में गर्म और पहले दर्जे में ख़ुश्क होता है।[2]

कुरआने पाक में खजूर का ज़िक्र

कुरआने पाक में कई मक़ामात पर खजूर के दरख़्त, बाग़ और खजूर का ज़िक्र आया है, आइये ! चन्द मक़ामात मुलाहज़ा कीजिये, चुनान्चे कुरआने करीम में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

1 ﴿اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम में कोई येह पसन्द करेगा कि उस के पास खजूर और अंगूरों का एक बाग़ हो जिस के नीचे नदियां बहती हों।[3]

2 ﴿یُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَ الزَّیْتُوْنَ وَ النَّخِیْلَ وَ الْاَعْنَابَ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ(۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस पानी से वोह तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, बेशक इस में ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के लिये निशानी है।[4]

3 ﴿وَ هُزِّیْۤ اِلَیْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَیْكِ رُطَبًا جَنِیًّا(۲۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, वोह तुम पर उम्दा ताज़ा खजूरें गिराएगा।[5]

इस आयत में हज़रते मरयम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से कहा गया कि आप जिस सूखे तने के नीचे बैठी हैं उसे अपनी तरफ़ हरकत दें तो इस से आप पर उम्दा और ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरेंगी। मालूम हुवा कि हम्ल की हालत में औरत के लिये खजूर खाना फ़ाएदे मन्द है। खजूर में आयरन बहुत होता है जो बच्चे की सेहत व तन्दुरुस्ती में बहुत मुआविन होता है, अलबत्ता इस हालत में खजूरें अपनी तबई हालत को पेशे नज़र रख कर ही कम या ज़ियादा खाई जाएं।[6]

खजूर से मुतअल्लिक़ अहादीस

1 हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने एक रात ख़्वाब देखा गोया कि हम उक़्बा बिन राफ़ेअ़ के घर में हैं, पस हमारे आगे तर खजूरें लाई गईं, जिस को इब्ने ताब की खजूर का नाम दिया जाता है। मैं ने उस (ख़्वाब) की ताबीर येह की है कि हमारा दर्जा दुन्या में बुलन्द होगा, आख़िरत में नेक अन्जाम होगा और यक़ीनन हमारा दीन बेहतर और उम्दा है।[7]

2 हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी जिन औरतों के हां बच्चा पैदा हो उन को ताज़ा खजूरें खिलाओ और अगर ताज़ा खजूरें मुयस्सर न हो तो ख़ुश्क खजूरें खिलाओ।[8]

3 हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि मेरी वालिदा हज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने मेरे हाथ खजूरों का एक टोकरा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा। आप मुझे (घर में) न मिले। आप क़रीब ही अपने एक आज़ाद कर्दा गुलाम के हां तशरीफ़ ले गए थे। उस ने आप को दावत दी थी और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये खाना तय्यार किया था। मैं हाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप खाना तनावुल फ़रमा रहे थे। आप ने मुझे अपने साथ खाना खाने की दावत दी। उन साहिब ने कद्दू और गोश्त डाल कर सरीद बना रखा था। मैं ने देखा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कद्दू अच्छा लगता है तो मैं कद्दू के टुकड़े (बरतन के अत्राफ़ में से) जम्अ कर के आप के क़रीब करने लगा। जब हम लोगों ने खाना खा लिया तो आप वापस घर तशरीफ़ ले गए। मैं ने (खजूरों का) टोकरा आप के सामने रख दिया। आप ने खजूरें खाना और तक़्सीम करना शुरूअ कर दीं हत्ता कि ख़त्म कर के फ़ारिग़ हो गए।(9)

4 हज़रते इकराश बिन ज़ुवैब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक थाली लाई गई जिस में बहुत सा सरीद और रौग़न था, हम सब उस में से खाने लगे, मैं अपना हाथ प्याले में हर त़रफ़ फेर रहा था तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ इकराश ! एक जगह से खाओ, इस लिये कि येह पूरा एक ही खाना है, फिर एक त़बक़ लाया गया जिस में मुख़्तलिफ़ अक़्साम की ताज़ा खजूरें थीं तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ त़बक़ (थाल) में चारों त़रफ़ घूमने लगा, फिर आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ इकराश ! जहां से जी चाहे खाओ, इस लिये कि इस में कई त़रह़ की खजूरें हैं।(10)

5 हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا बयान करती हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा ! जिस घर में खजूरें न हों वोह लोग भूके हैं, ऐ आइशा ! जिस घर में खजूरें न हों वोह लोग भूके हैं, आप ने येह कलिमात दो या तीन बार इरशाद फ़रमाए।(11)

6 हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि एक दफ़्आ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्हाब में खजूरें तक़्सीम फ़रमाईं तो मुझे भी सात खजूरें अ़त़ा फ़रमाईं, उन में से एक खजूर सख़्त थी।(12)

7 हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले चन्द तर खजूरों पर रोज़ा इफ़्त़ार करते थे। अगर तर खजूरें न होतीं तो छुवारों पर और अगर छुवारे भी न होते तो पानी के चन्द घूंट नोश फ़रमा लेते थे।(13)

इस ह़दीसे पाक से दो मस्अले मालूम हुए : एक येह कि रोज़ादार इफ़्त़ार नमाज़ से पहले करे, नमाज़े मग़रिब के बाद इफ़्त़ार करना जाइज़ मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ है। दूसरा येह कि चन्द खजूरें इफ़्त़ार के वक़्त खाना मस्नून है तीन या पांच। ❁ हां अगर कुछ मौजूद न हो तो बादे नमाज़ इफ़्त़ार कर ले। ❁ इस तरतीब से पता लगा कि तर खजूर पर रोज़ा इफ़्त़ार करना बहुत अच्छा है, फिर अगर येह न मिलें तो ख़ुश्क छुवारों पर इफ़्त़ार करना, हमारे रमज़ान शरीफ़ में कसरत से बाज़ार में खजूरें आ जाती हैं और आ़म त़ौर पर लोग ख़रीदते हैं, मस्जिदों में भेजते हैं उन सब का माख़ज़ येह ह़दीस है। ❁ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोटी, चावल या किसी पुर तकल्लुफ़ चीज़ पर रोज़ा इफ़्त़ार न फ़रमाते थे।(14)

खजूर के फ़वाइद

खजूर एक ग़िज़ाइय्यत से भरपूर ग़िज़ा है जिस के बे शुमार त़िब्बी फ़वाइद भी हैं, आइये ! उन में से कुछ फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिये : ❁ मेदे और जिगर को क़ुव्वत देती है ❁ खाने को हज़्म करती है ❁ बदन को मोटा करती है ❁ खून पैदा करती है।(15) ❁ बलग़म को ख़त्म करती है। ❁ इमाम ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हामिला को खजूरें खिलाने से اِنْ شَآءَاللّٰہ लड़का पैदा होगा जो कि खूबसूरत, बुर्दबार और नर्म मिज़ाज होगा।(16)

नोट : तमाम ग़िज़ाएं और दवाएं अपने त़बीब (डॉक्टर या ह़कीम) के मश्वरे से ही इस्तिमाल कीजिये।

---

(1)خزائن الادویہ، 3/415 (2)خزائن الادویہ، 3/415 (3)پ3، البقرۃ:266 (4)پ14، النحل، 11 (5)پ 16، مریم، 25 (6)صراط الجنان، 6/89 (7)مسلم، ص960، حدیث:5932 (8)جامع صغیر، ص88، حدیث:1432 (9)ابن ماجہ، 4/28، حدیث:3303 (10)ابن ماجہ، 4/15، حدیث:3274 (11)مسلم، ص871، حدیث:5337 (12)بخاری، 3/538، حدیث:5441 (13)ابوداؤد، 2/447، حدیث:2356 (14)مرآۃ المناجیح، 3/155 (15)خزائن الادویہ، 3/415 (16)مدنی پنج سورہ، ص356۔

फ़ज़ाइले मक्का

मक्कतुल मुकर्रमा को इस्लामी तारीख़ में और दुन्या की तारीख़ में बड़ी अहमिय्यत ह़ासिल है। इस शहरे मुबारक का ज़िक्रे ख़ैर क़ुरआनो ह़दीस और क़ुतुबे साबिक़ा में मौजूद है। मक्कतुल मुकर्रमा के ज़िक्रे ख़ैर को इस की मज़हबी, तारीख़ी जोग़्रोफ़ियाई अहमिय्यत और बिल ख़ुसूस रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत के पेशे नज़र दर्जे ज़ैल अहम निकात में तक़्सीम कर सकते हैं :

1. फ़ज़ाइले मक्का क़ुरआने करीम की रौशनी में
2. फ़ज़ाइले मक्का अह़ादीस की रौशनी में
3. मक्कए मुकर्रमा का तआ़रुफ़, तारीख़ और नाम
4. मक्कए मुकर्रमा का जोग़्राफ़िया और इस की अहमिय्यत
5. मक्कए मुकर्रमा में दुआ़ए इब्राहीमी के असरात मअ़ मक्कए मुकर्रमा कैसे आबाद हुवा ?
6. मक्कए मुकर्रमा इस्लाम से पहले और इस्लाम के बाद
7. मक्कए मुकर्रमा के ख़साइस
8. मक्का में दुआ़ क़बूल होने के मक़ामात
9. मक्कए मुकर्रमा के अहम तारीख़ी वाक़िआ़त
10. तारीख़े ख़ानए काबा
11. मक्कए मुकर्रमा के अहम मक़ामात
12. मक्का की जलीलुल क़द्र हस्तियां
13. मक्कए मुकर्रमा में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादें

फ़ज़ाइले मक्का क़ुरआने करीम की रौशनी में

शहरे मक्का की अ़ज़्मत व तक़द्दुस और बरतरी का एलान क़ुरआनो ह़दीस में जगह जगह मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात और मुख़्तलिफ़ पहलूओं से किया गया है। चन्द आयात की रौशनी में फ़ज़ाइले मक्का मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

1 मक्कए मुकर्रमा बरकत और अम्न की जगह है, अल्लाह करीम इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَۚ(۹۶) فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा इस में खुली निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो।(1)

एक जगह इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने उस घर को लोगों के लिये मर्जअ़ और अमान बनाया।(2)

एक जगह इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे।(3)

एक जगह फ़रमाया : ﴿اَوَ لَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا یُّجْبٰۤى اِلَیْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَیْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ(۵۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम ने उन्हें जगह न दी अमान वाली ह़रम में जिस की त़रफ़ हर चीज़ के फल लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं।(4)

2 मक्कए मुकर्रमा की फ़ज़ीलत और अ़ज़्मत के क्या कहने ! अल्लाह पाक ने क़ुरआन में इस शहर की क़सम

याद फ़रमाई। फ़रमाने इलाही है : ﴿لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۱)﴾ ﴿وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे उस शहर की क़सम कि ऐ महबूब तुम उस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।[5]

3 येह मक्कए मुकर्रमा की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत ही है कि अल्लाह पाक ने अपने जलीलुल क़द्र नबी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को इस की सफ़ाई सुथराई का हुक्म दिया। फ़रमाने इलाही है : ﴿وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِیْمَ مَكَانَ الْبَیْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِیْ شَیْــٴًـا وَّ طَهِّرْ بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَ الْقَآىٕمِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ(۲۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब कि हम ने इब्राहीम को इस घर का ठिकाना ठीक बता दिया और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुथरा रख त़वाफ़ वालों और एतिकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिये।[6]

4 शहरे मक्का हुर्मत वाला है, क़ुरआने करीम में है : ﴿اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِیْ حَرَّمَهَا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे तो येही हुक्म हुवा है कि पूजों इस शहर के रब को जिस ने इसे हुर्मत वाला किया है।[7]

इन आयात के इलावा भी मुतअ़द्दद मक़ामात पर शहरे मक्का और काबतुल्लाह की फ़ज़ीलत बयान हुई है। अहादीसे मुबारका भी इस मुक़द्दस सर ज़मीन के फ़ज़ाइल से मालामाल हैं। अपने दिलों में मक्कए मुकर्रमा की अ़ज़मत बेदार करने के लिये 5 अहादीस मुलाहज़ा कीजिये :

फ़ज़ाइले मक्का अहादीस की रौशनी में

1 अल्लाह पाक ने मक्के और मदीने को कैसी कैसी ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा है कि दज्जाल जो क़ुर्बे क़ियामत सारी ज़मीन में फ़ितना फैलाने के लिये घूमेगा लेकिन वोह अपने नापाक क़दम मक्के शरीफ़ और मदीने शरीफ़ में नहीं रख सकेगा, यक़ीनन येह मक्कए पाक और मदीनए पाक की अ़ज़मत की वज्ह से है। चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है : मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के इलावा कोई शहर ऐसा नहीं जिसे अ़नक़रीब दज्जाल रौंदता हुवा न जाए, जब कि उन शहरों के हर रास्ते पर फ़िरिश्ते सफ़ें बांधे पहरा दे रहे होंगे, लिहाज़ा वोह एक दलदली ज़मीन पर पड़ाव डालेगा फिर शहरे मदीना 3 मरतबा लरज़ेगा तो अल्लाह पाक कुफ़्र व निफ़ाक़ में मुब्तला हर शख़्स को वहां से निकाल देगा।[8]

2 शहरे मक्का वोह शहर है जिस को आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बेहद पसन्द फ़रमाया है। चुनान्चे जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत फ़रमाई तो ह़ज़वरह के मक़ाम पर खड़े हो कर काबए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ मुंह कर के फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! मैं जानता हूं कि तू अल्लाह के शहरों में से मुझे सब से ज़ियादा महबूब है और तू अल्लाह के नज़्दीक तमाम ज़मीन से ज़ियादा महबूब है और तू रूए ज़मीन पर सब से ज़ियादा ख़ैर वाला और अल्लाह को सब से ज़ियादा प्यारा है। अगर तेरे रहने वाले (कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम) मुझे जाने पर मजबूर न करते तो मैं कभी न जाता।[9]

3 मक्का ही को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि येह अल्लाह पाक का महबूब तरीन शहर है। ह़दीसे पाक में है कि रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रूए ज़मीन पर सब से ख़ैर वाला और अल्लाह को महबूब तरीन शहर मक्कए मुकर्रमा है।[10]

4 मक्का ही वोह शहर है जिस में मौजूद **"मस्जिदे ह़राम"** में नमाज़ पढ़ने की सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत बयान की गई है। आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में एक लाख नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[11]

5 येह मक्कए पाक की अ़ज़मत है कि अल्लाह पाक ने जब आस्मानो ज़मीन पैदा फ़रमाए तो उसी दिन से उस को हुर्मत व अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई है। जैसा कि ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते शीबा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने फ़रमाया कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के दिन ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया : ऐ लोगो ! इस शहर को उसी दिन से अल्लाह ने ह़रम बना दिया है जिस दिन आस्मानो ज़मीन पैदा किये लिहाज़ा येह क़ियामत तक हुर्मत वाला है।[12]

अल्लाह पाक हमें मक्कए पाक और मदीनए पाक की सच्ची महब्बत नसीब फ़रमाए और बार बार ह़ज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1) پ4، اٰلِ عمرٰن:96 (2) پ1، البقرۃ:125 (3) پ1، البقرۃ:126 (4) پ20، القصص:57 (5) پ30، البلد:1، 2 (6) پ17، الحج:26 (7) پ20، النمل:91
(8) بخاری، 1/619، حدیث: 1881 (9) ترمذی، 5/486، حدیث: 3951، فضائل مکہ للحسن بصری، 1/18 (10) فضائل مکہ للحسن بصری، 1/19 (11) مسند احمد، 5/108، حدیث:14700 (12) ابن ماجہ، 3/519، حدیث:3109۔

नए लिखारी
(New Writers)
नए लिखने वालों के इन्आम याफ़्ता मज़ामीन

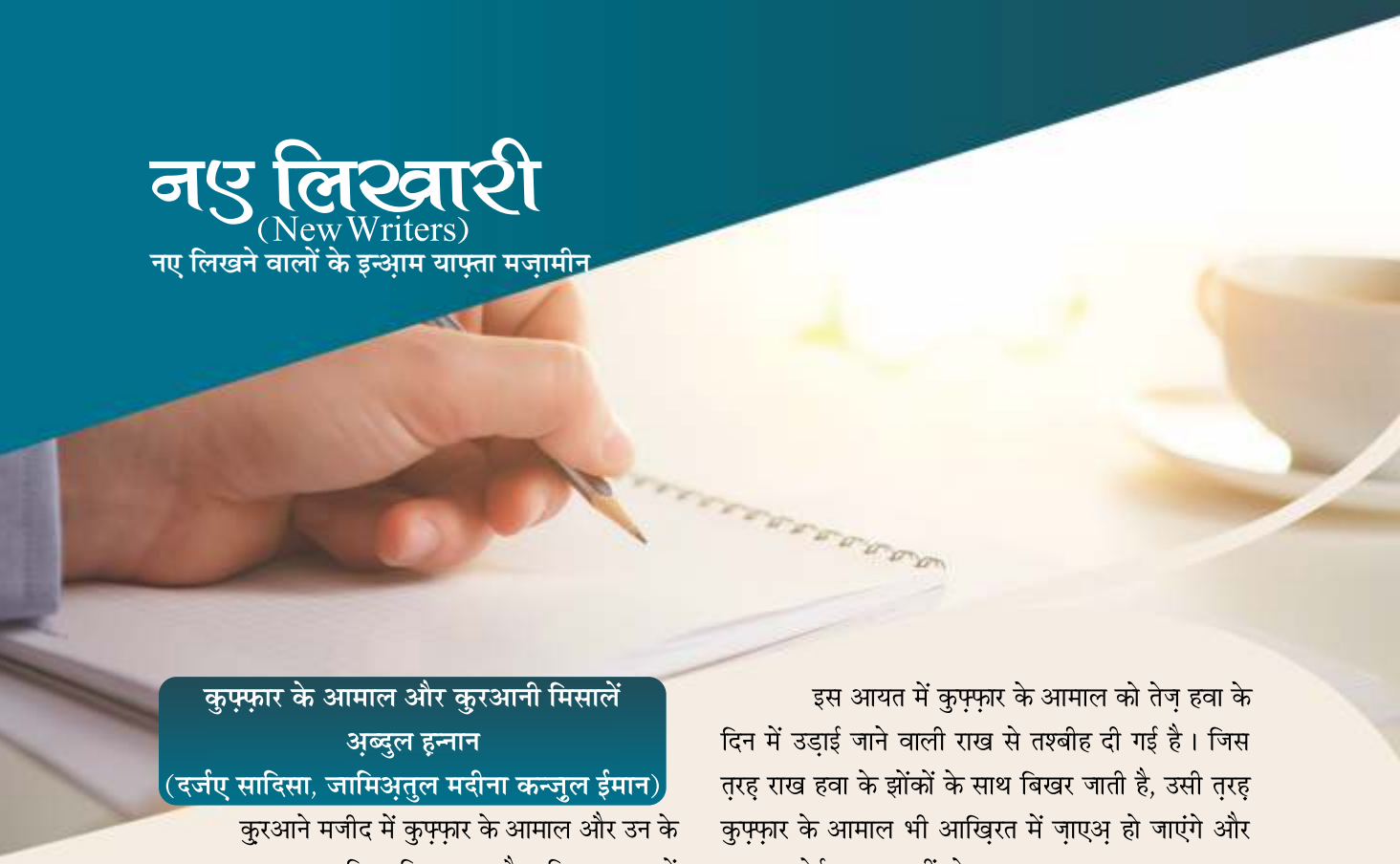

कुफ़्फ़ार के आमाल और क़ुरआनी मिसालें

अ़ब्दुल ह़न्नान
(दर्जए सादिसा, जामिअ़तुल मदीना कन्ज़ुल ईमान)

क़ुरआने मजीद में कुफ़्फ़ार के आमाल और उन के अन्जाम का बार बार ज़िक्र किया गया है ताकि मुसलमानों को नसीह़त और सबक़ ह़ासिल हो, अल्लाह पाक ने कुफ़्फ़ार के आमाल को मुख़्तलिफ़ मिसालों के ज़रीए़ वाज़ेह़ किया है ताकि उन के बुरे असरात को समझा जा सके। कुफ़्फ़ार के आमाल को बाज़ औक़ात बेकार, बे वज़्न और अ़ज़ाब का सबब क़रार दिया गया है। ज़ैल में क़ुरआने करीम में बयान कर्दा कुफ़्फ़ार के आमाल की कुछ मिसालें पेश की जा रही हैं :

1 राख की मिसाल (आमाल की बरबादी)

अल्लाह पाक ने कुफ़्फ़ार के आमाल को उस राख से तश्बीह दी जो तेज़ हवा के दिन उड़ा दी जाए, येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि कुफ़्फ़ार के आमाल आख़िरत में बे फ़ाएदा और ज़ाएअ़ हो जाएंगे : ﴿مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ (۱۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब से मुन्किरों का ह़ाल ऐसा है कि उन के काम हैं जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आन्धी के दिन में सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा येही है दूर की गुमराही। (پ13، ابراہیم:18)

इस आयत में कुफ़्फ़ार के आमाल को तेज़ हवा के दिन में उड़ाई जाने वाली राख से तश्बीह दी गई है। जिस त़रह़ राख हवा के झोंकों के साथ बिखर जाती है, उसी त़रह़ कुफ़्फ़ार के आमाल भी आख़िरत में ज़ाएअ़ हो जाएंगे और इन का कोई फ़ाएदा नहीं होगा।

2 सराब की मिसाल (धोका)

अल्लाह पाक ने कुफ़्फ़ार के आमाल को एक ऐसे सराब से तश्बीह दी है जो प्यासे को पानी की त़रह़ दिखाई देता है, लेकिन जब वोह उस के क़रीब जाता है तो उसे कुछ भी नहीं मिलता, चुनान्चे इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْــٴًـا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (۳۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो काफ़िर हुए उन के काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब उस के पास आया तो उसे कुछ न पाया और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उस ने उस का ह़िसाब पूरा भर दिया और अल्लाह जल्द ह़िसाब कर लेता है। (پ18، النور:39)

कुफ़्फ़ार के आमाल को सराब से तश्बीह दी गई है, जो पानी की त़रह़ नज़र आता है, लेकिन ह़क़ीक़त में वोह

कुछ भी नहीं होता। इस आयत में येह वाज़ेह़ किया गया है कि कुफ़्फ़ार दुन्या में अपने आमाल को अच्छा समझते हैं, लेकिन आख़िरत में उन्हें कोई फ़ाएदा नहीं होगा।

3 बहते पानी की सत्ह़ पर झाग (बातिल)

बातिल की मिसाल उस झाग से दी गई जो पानी की सत्ह़ पर ज़ाहिर होता है, चुनान्चे इरशादे रब्बे करीम है :

﴿اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَدًا رَّابِیًا ؕ وَ مِمَّا یُوْقِدُوْنَ عَلَیْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْیَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَیَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ اَمَّا مَا یَنْفَعُ النَّاسَ فَیَمْكُثُ فِی الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपनी अपनी गुन्जाइश की ब क़दर बह निकले तो पानी की रौ उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और ज़ेवर या कोई दूसरा सामान बनाने के लिये जिस पर वोह आग दहकाते हैं इस से भी वैसे ही झाग उठते हैं। अल्लाह इसी त़रह़ ह़क़ और बातिल की मिसाल बयान करता है तो झाग तो ज़ाएअ़ हो जाता है और वोह (पानी) जो लोगों को फ़ाएदा देता है वोह ज़मीन में बाक़ी रहता है। अल्लाह यूंही मिसालें बयान फ़रमाता है। (پ13، الرعد:17)

इस मिसाल का ख़ुलासा येह है कि बातिल उस झाग की त़रह़ होता है जो नदियों में उन की वुस्अ़त के मुत़ाबिक़ बहते पानी की सत्ह़ पर और सोना, चांदी, तांबा, पीतल वग़ैरा पिघली हुई मादनियात की माएअ़ सत्ह़ पर ज़ाहिर होती है जब कि ह़क़ झाग के इ़लावा बाक़ी बच जाने वाली अस्ल चीज़ की त़रह़ होता है तो जिस त़रह़ बहते पानी या पिघली हुई मादनियात की सत्ह़ पर झाग ज़ाहिर हो कर जल्दी ज़ाइल हो जाता है ऐसे ही बातिल अगर्चे कितना ही उभर जाए और बाज़ ह़ालतों और वक़्तों में झाग की त़रह़ ह़द से ऊंचा हो जाए लेकिन अन्जाम कार मिट जाता है और ह़क़ अस्ल चीज़ और साफ़ जौहर की त़रह़ बाक़ी व साबित रहता है। (सिरातुल जिनान, 5 / 101)

4 बेकार खेती (ज़ाएअ़ शुदा आमाल)

कुफ़्फ़ार के ख़र्च और दिखावे के लिये किये गए ख़र्च की मिसाल कुरआने पाक में यूं बयान की गई :

﴿مَثَلُ مَا یُنْفِقُوْنَ فِیْ هٰذِهِ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا كَمَثَلِ رِیْحٍ فِیْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَ مَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ لٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ(۱۱۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : इस दुन्यावी ज़िन्दगी में जो ख़र्च करते हैं इस की मिसाल उस हवा जैसी है जिस में शदीद ठन्ड हो, वोह हवा किसी ऐसी क़ौम की खेती को जा पहुंचे जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया हो तो वोह हवा उस खेती को हलाक कर दे और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। (پ4، ال عمرٰن:117)

इस आयत में काफ़िर के ख़र्च और रियाकारी के त़ौर पर ख़र्च करने वाले की मिसाल बयान फ़रमाई गई कि उन के ख़र्च को उन का कुफ़्र या रियाकारी ऐसे तबाह कर देती है जैसे बरफ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है और उन के साथ येह मुआ़मला कोई ज़ुल्मो ज़ियादती नहीं बल्कि येह उन के कुफ़्र या निफ़ाक़ या रियाकारी का अन्जाम है तो येह ख़ुद इन का अपनी जानों पर ज़ुल्म है। (सिरातुल जिनान, 2 / 40)

5 अन्धेरों की मिसाल (गुमराही)

कुफ़्फ़ार की ह़ालत को कुरआन में गहरे समुन्दर की तारीकियों से तश्बीह दी गई है, जहां रौशनी की कोई किरन नहीं पहुंचती, जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ یَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ یَدَهٗ لَمْ یَكَدْ یَرٰىهَا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ(۴۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या जैसे अन्धेरियां किसी कुन्डे के दरिया में उस के ऊपर मोज, मोज के ऊपर और मोज उस के ऊपर बादल अन्धेरे हैं एक पर एक जब अपना हाथ निकाले तो सूझाई देता मालूम न हो और जिसे अल्लाह नूर न दे उस के लिये कहीं नूर नहीं। (پ18، النور:40)

येह मिसाल कुफ़्फ़ार के दिलों, उन की गुमराही और जहालत की त़रफ़ इशारा करती है। जैसे गहरे समुन्दर में कोई रौशनी नहीं होती और इन्सान अपनी ही उंगली को नहीं देख सकता, इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार के दिल भी अन्धेरों में डूबे होते हैं।

अल्लाह पाक हमें ईमान पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाए और क़ुरआने पाक पढ़ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लफ़्ज़ "اُمُرُکُم" से तरबिय्यत फ़रमाना

मुह़म्मद मूईद अ़ली अ़त्तारी
(दर्जए सालिसा जामिअ़तुल मदीना)

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस दुन्या के लिये सरापा रह़मत है और हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام का हर फ़रमान ह़िक्मत व बसीरत का मज़्हर है। करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत की इस्लाह़, तरबिय्यत और राहनुमाई के लिये ऐसे अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब फ़रमाया जो निहायत जामेअ़, बलीग़ और दिल में उतर जाने वाले होते हैं।

लफ़्ज़ "اُمُرُکُم" के ज़रीए आप ने अपने फ़रामीन में न सिर्फ़ हुक्म दिया बल्कि मह़ब्बत, शफ़्क़त और इख़्लास का पहलू भी नुमायां फ़रमाया। येह लफ़्ज़ उम्मत को उन के आमाल और ज़िम्मेदारियों की त़रफ़ मुतवज्जेह करने का एक मुअस्सर ज़रीआ़ था, जिस के ज़रीए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीन की असास को मज़बूत़ किया और उम्मत के अख़्लाक़ व किरदार को संवारा।

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन ऐसे उसूलो ज़वाबित़ पर मुश्तमिल हैं जो न सिर्फ़ इन्फ़िरादी इस्लाह़ के लिये हैं बल्कि एक इज्तिमाई निज़ाम की तश्कील के लिये भी संगे मील हैं। आइये! चन्द ऐसे फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िये जिन में हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने लफ़्ज़ "اُمُرُکُم" के ज़रीए तरबिय्यत फ़रमाई :

1 तौह़ीद हर कामयाबी की बुन्याद

اٰمُرُکُمْ اَنْ تَعْبُدُوا اللّٰہَ وَلَا تُشْرِکُوا بِہٖ شَیْئًا وَّتَعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰہِ جَمِیْعًا وَّلَا تَتَفَرَّقُوْا तर्जमा : मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि अल्लाह की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रखो, इख़्तिलाफ़ात व तफ़र्क़ा बाज़ी में न पड़ो।

(صحیح ابن حبان، 7/44، حدیث:4542)

येह फ़रमान इस ह़क़ीक़त को वाज़ेह़ करता है कि तौह़ीद और मुसलमानों का बाहमी इत्तिह़ाद तमाम तर कामयाबियों की बुन्याद है। इस नसीह़त में दीनो दुन्या की कामयाबी का राज़ पोशीदा है, जहां अल्लाह की इ़बादत के साथ साथ इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ की अहमिय्यत को भी उजागर किया गया है।

2 ईमान और आमाले सालिह़ा की तल्क़ीन

एक मौक़अ़ पर जब वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जन्नत में दाख़िले के आमाल के बारे में सुवाल किया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया :

اٰمُرُکُمْ بِالْاِیْمَانِ بِاللّٰہِ وَھَلْ تَدْرُوْنَ مَا الْاِیْمَانُ بِاللّٰہِ شَھَادَۃُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاِقَامُ الصَّلَاۃِ وَاِیْتَاءُ الزَّکَاۃِ وَتُعْطُوْا مِنَ الْمَغْنَمِ الْخُمُس तर्जमा : मैं तुम्हें अल्लाह पर ईमान लाने का हुक्म देता हूं, क्या तुम जानते हो अल्लाह पर ईमान लाना क्या है? इस बात की सिद्क़े दिल से गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात देना और माले ग़नीमत से पांचवां ह़िस्सा अदा करना। (بخاری، 4/597، حدیث:7556)

3 पांच चीज़ों का हुक्म

وَاَنَا آمُرُکُمْ بِخَمْسٍ اللّٰہُ اَمَرَنِیْ بِھِنَّ السَّمْعُ وَالطَّاعَۃُ وَالْجِھَادُ وَالْھِجْرَۃُ وَالْجَمَاعَۃُ तर्जमा : मैं तुम्हें उन पांच चीज़ों का हुक्म देता हूं जिन का मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है यानी सुनना, इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करना, राहे ख़ुदा में जिहाद करना, हिजरत करना और जमाअ़त को इख़्तियार करना।

(ترمذی، 4/394، حدیث:2872)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लफ़्ज़ "اُمُرُکُم" फ़रमाना उम्मत के लिये एक राहनुमाई का मीनार है, जो इन्फ़िरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी के हर पहलू को संवारने के उसूल फ़राहम करता है।

येह फ़रामीन एक ऐसे कामिल निज़ाम की अ़क्कासी करते हैं जो दुन्यावी व उख़रवी कामयाबी की ज़मानत देता है। अल्लाह पाक हमें अपने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उन के ज़रीए अपनी ज़िन्दगियों को रौशन व मुनव्वर करने की सआ़दत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मस्जिद के हुक़ूक़

अ़लीशान रज़वी अ़त्तारी
(दर्जए सानिया मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

लुग़त में मस्जिद का माना है सज्दा गाह, इ़बादत की जगह और इस्तिलाहे़ शरअ़ में मस्जिद नाम है इस्लामी इ़बादत गाह का या वोह जगह जो नमाज़ के लिये वक़्फ़ हो। मस्जिद की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और अफ़्ज़लिय्यत व अहमिय्यत मुसलमानों के नज़दीक एक अहम अम्र है।

जो मक़ाम इतना अहम है उस के हुक़ूक़ की पासदारी करना भी उतना ही अहम है, मस्जिद के चन्द हुक़ूक़ पढ़िये और अ़मल की निय्यत कीजिये :

1 मस्जिद की हाज़िरी के लिये ज़ीनत इख़्तियार करना

मस्जिद की हाज़िरी के लिये ज़ीनत इख़्तियार करने का तो अल्लाह पाक ने हुक्म इरशाद फ़रमाया है :

﴿یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ। (پ8، الاعراف:31)

2 मस्जिद की सफ़ाई रखना

मस्जिद की सफ़ाई सुथराई का ख़ुद अल्लाह पाक ने हुक्म इरशाद फ़रमाया :

﴿وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَالْعٰكِفِیْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ(۱۲۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और एतिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये।

(ابوداؤد، 1/197، حدیث:455)

3 मस्जिद ख़ुश्बूदार रखना

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने और उन्हें साफ़ और ख़ुश्बूदार रखने का हुक्म दिया। (ابوداؤد، 1/197، حدیث:455)

4 मस्जिद को शोर से बचाना

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपनी मस्जिदों को बच्चों, दीवानों, बद ख़स्लत लोगों, ख़रीदो फ़रोख़्त, झगड़ों, शोरो ग़ोग़ा, ह़दें लगाने और तल्वारें खींचने से दूर रखो। (ابن ماجہ، 1/410، حدیث:750)

5 मस्जिद में न हंसना

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मस्जिद में हंसना क़ब्र में अन्धेरा (लाता) है।

(جامع صغیر، ص322، حدیث:5231)

6 मस्जिद को बदबूदार चीज़ों से बचाना

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो लहसन, प्याज़ और गन्दना (लहसन से मिलती जुल्ती तरकारी) खाए तो वोह हमारी मस्जिदों के क़रीब न आए क्यूंकि फ़िरिश्तों को उस चीज़ से तक्लीफ़ होती है जिस से इन्सान तक्लीफ़ महसूस करते हैं। (دیکھئے: نسائی، ص123، حدیث:704)

7 मस्जिद में गुमशुदा चीज़ न ढूंडना

जो किसी को मस्जिद में बा आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने तो वोह कहे : अल्लाह वोह गुमशुदा चीज़ तुझे न मिलाए क्यूंकि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गईं। (مسلم، ص224، حدیث:1260)

अल्लाह पाक हमें मस्जिदों को आबाद करने, उन के हुक़ूक़ अदा करने, उन की सफ़ाई सुथराई का ख़याल रखने, ख़ुश्बूदार रखने और मस्जिदों को शोर से बचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

दीन आसान है

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ الدِّیْنَ یُسْرٌ यानी दीन आसान है। (بخاری،۲۶/۱،حدیث:۳۹)
यानी दीन पर अ़मल करना इन्तिहाई आसान है।

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे दीने इस्लाम के तमाम अह़कामात हमारी त़बीअ़तों के मुवाफ़िक़ और इन्तिहाई आसान हैं, येह आसानी मर्द, औ़रत, बूढ़े और बच्चों सब के लिये है जैसे नमाज़ पढ़ना, जिस त़रह़ हम स्कूल, कोचिंग वग़ैरा पाबन्दी से जाते हैं और बर वक़्त पहुंचते हैं उसी त़रह़ हम थोड़ी सी कोशिश से पांच वक़्त की नमाज़ पाबन्दी से अदा कर सकते हैं।

दीने इस्लाम का एक हुक्म सदक़ा व ख़ैरात और ज़कात देना भी है कि जो माल अल्लाह पाक ने हमें दिया है उसी में से अल्लाह की राह में कुछ देना, छोटे ना बालिग़ बच्चे अपने पैसों से नहीं बल्कि अपने अम्मी अब्बू से ले कर राहे ख़ुदा में देने की आ़दत बनाएं।

अभी माहे रमज़ान जारी है, इस में मुसलमानों को रोज़ा रखने का हुक्म है, अगर्चे छोटे बच्चों पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं लेकिन इन को भी चाहिये कि अभी से आ़दत बनाने के लिये कभी कभी रोज़ा रखें।

छोटों पर शफ़्क़त, बड़ों का अदबो एह़तिराम करना, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटाना, वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना वग़ैरा तमाम बातें हमारे दीने इस्लाम के अह़कामात हैं जो कि इन्तिहाई आसान हैं।

अच्छे बच्चो ! हमारे दीन में कोई भी ऐसा हुक्म नहीं है कि जिस पर अ़मल करना ना मुम्किन हो, अल्लाह पाक हमें दीने इस्लाम के अह़कामात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हुरूफ़ मिलाइये !

माहे रमज़ान माहे क़ुरआन है कि इसी महीने में क़ुरआन नाज़िल हुवा। यूं तो तिलावते क़ुरआन की बड़ी फ़ज़ीलत और बरकतें हैं लेकिन माहे रमज़ान में इस का सवाब मज़ीद बढ़ जाता है। लिहाज़ा इस मुक़द्दस महीने में आप भी तिलावते क़ुरआन ज़ियादा से ज़ियादा कीजिये। तिलावत की फ़ज़ीलत पर दो अह़ादीस पढ़िये : 1 क़ुरआन पढ़ो क्यूंकि वोह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये शफ़ाअ़त करने वाला हो कर आएगा। (مسلم، ص314،حدیث:1874) 2 मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते क़ुरआन है। (شعب الایمان،2/354،حدیث:2022) तिलावत के चन्द आदाब भी पढ़ लीजिये : ❁ क़ुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से और ठहर ठहर कर पढना सुन्नत है। (इह़याउल उ़लूम, 1 / 371) ❁ बा वुज़ू क़िब्ले की जानिब रुख़ कर के अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत कीजिये। ❁ क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तह़ब है। (सिरातुल जिनान, 5 / 256) ❁ तरतील के साथ इत़मीनान से और ठहर ठहर कर तिलावत कीजिये। (अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 238) ❁ तिलावत के लिये सब से अफ़्ज़ल वक़्त साल भर में रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस (10) दिन और ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई 10 दिन हैं। (अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 239)

م	ز	ہ	ع	ن	ی	ز	و	ر
ب	ت	و	ا	ل	ت	ص	ی	م
ج	ز	د	ن	ج	ق	ع	ب	ض
د	ح	ش	ل	ز	ا	ن	ر	ا
ہ	چ	ف	ا	و	ث	ج	ا	ن
ث	ل	ا	ت	غ	ف	ن	م	ش
و	د	ع	ع	ف	د	م	ح	ف
ا	ل	ت	ر	ب	ن	ا	ر	ق
ب	ک	ذ	س	ل	ی	ت	ر	ت

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े **"नाज़िल"** तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 رمضان 2 ثواب 3 تلاوت 4 ترتیل 5 شفاعت۔

पत्थर मोम हो गया

अल्लाह पाक ने हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सर से पांव तक मोजिज़ाना शान अ़त़ा फ़रमाई थी, आप के मोजिज़ों को पढ़ने सुनने से न सिर्फ़ अ़क़्ल दंग रह जाती है बल्कि येह मोजिज़े हुज़ूरे अक़्दस से हमारी अ़क़ीदत व मह़ब्बत में इज़ाफ़े का सबब भी बनते हैं।

आइये ! आज एक बहुत दिलचस्प मोजिज़ए मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा करते हैं जो अपनी नौइय्यत का अनोखा मोजिज़ा है।

ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए उहुद के दिन मुश्रिकीन के ह़म्लों से बचाव के लिये हुज़ूरे अकरम, रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे मुबारक एक पत्थर की त़रफ़ झुकाया तो पत्थर इस क़दर नर्म हो गया कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे मुबारक उस में दाख़िल हो गया। वोह पत्थर और उस का निशान अभी तक ज़ियारत गाहे ख़ासो आ़म है।[1]

हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस मोजिज़े को बयान कर के ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि लोहे में तो नर्म होने की कहीं न कहीं गुन्जाइश है कि वोह आग पर बिल आख़िर नर्म हो ही जाता है मगर पत्थर में तो नर्म होने की गुन्जाइश ही नहीं येह तो आग पर भी नहीं पिघलता मगर इस के बा वुजूद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ात़िर नर्म हो गया। लिहाज़ा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पत्थर नर्म होने का मोजिज़ा ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहा नर्म होने के मोजिज़े से ज़ियादा ह़ैरत अंगेज़ है।

यूंही ग़ारे मुर्सलात में भी एक पत्थर सरे अन्वर के लिये मोम हो गया था और उस पत्थर ने सरे मुबारक के निशानात अपने अन्दर मह़फ़ूज़ कर लिये थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

ग़ारे मुर्सलात मिना शरीफ़ की मस्जिदे ख़ैफ़ से शुमाल (North) की त़रफ़ पहाड़ पर वाक़ेअ़ है, येह पहाड़ अ़र्फ़ात शरीफ़ से मिना आते हुए सीधे हाथ की त़रफ़ पड़ेगा। सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इस मुबारक ग़ार में "सूरतुल मुर्सलात" नाज़िल हुई। कहा जाता है सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुबारक ग़ार में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो ऊपर के पथ्थर से सरे अन्वर मस (Touch) हुवा, पथ्थर नर्म हो गया और उस में सरे पाक का निशान बन गया। आ़शिक़ाने रसूल हुसूले बरकत के लिये इस निशाने मुबारक से अपना सर लगाते हैं।[2]

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पथ्थर का नर्म हो जाना यक़ीनन एक अ़ज़ीम मोजिज़ा है। इस से चन्द बातें मालूम होती हैं :

अल्लाह पाक ने मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जो अ़लाहिदा अ़लाहिदा मोजिज़े अ़त़ा फ़रमाए वोह सब के सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमा दिये यूं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात जामिउ़ल मोजिज़ात है।

जानी दुश्मन से जान बचाना कोई बुज़दिली नहीं बल्कि ह़िक्मते अ़मली है बहादुरी के मौक़अ़ पर बहादुरी और ह़िक्मते अ़मली के मौक़अ़ पर ह़िक्मते अ़मली का मुज़ाहरा करना चाहिये हमारे प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहादुरी के मौक़अ़ पर सब से ज़ियादा बहादुरी दिखाया करते थे येही वज्ह है कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों से बढ़ कर बहादुर थे।[3]

(1) دلائل النبوۃ لابی نعیم، ص 354 (2) دیکھئے: معالم مکۃ التاریخیۃ الاثریہ، ص276، عاشقانِ رسول کی 130 حکایات، ص237 (3) بخاری، 2/260، حدیث:2820۔

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुह़म्मद	अह़सन	वोह ज़ात जिस में अच्छी सिफ़ात जम्अ़ हों	रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	रफ़ीक़	बहुत ज़ियादा मेहरबानी फ़रमाने वाला	रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	अ़ली	बुलन्द	मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का बा बरकत नाम

बच्चियों के 3 नाम

फ़ातिमा	दोज़ख़ की आग से छुड़ाने वाली	रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी का बा बरकत नाम
लुबना	ख़ूबसूरत	सह़ाबिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बा बरकत नाम
राबिआ़	शफ़्क़त करने वाली	मश्हूर वलिय्या ख़ातून का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

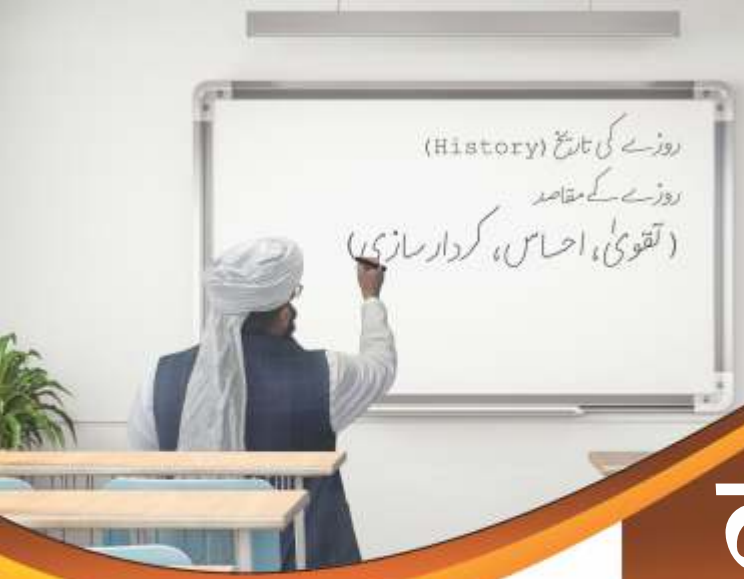

रोज़ा क्यूं रक्खें ?

गुज़श्ता कल की छुट्टी के बाद आज स्कूल खुला था तो पूरे स्कूल में ख़ामोशी के साथ साथ एक सुकून भी छाया हुवा दिखाई दे रहा था येह यक़ीनन माहे रमज़ानुल मुबारक की ही बरकतें थीं वरना जहां चन्द बच्चे हों वहां कैसे ख़ामोशी हो सकती है, बड़ी क्लासों के कुछ बच्चों ने टोपियां भी पहन रखी थीं, कुछ असातिज़ा के भी हाथों में तस्बीह काउन्टर दिखाई दे रहे थे यूं सारा माहौल ही तक़द्दुस व एह़तिराम से भरा हुवा था।

सर बिलाल क्लास में तशरीफ़ लाए तो सलाम व जवाब के बाद बच्चों से हल्की फुल्की इब्तिदाई गुफ़्तगू करने के साथ साथ वाइट बोर्ड पर आज के सबक़ के उ़न्वानात भी तह़रीर करते गए :

रोज़े की तारीख़ (History)

रोज़े के मक़ासिद

फिर दूसरे उ़न्वान के नीचे ब्रेकेट्स में मज़ीद उ़न्वानात लिख दिये : तक़्वा, एह़सास, किरदार साज़ी।

प्यारे बच्चो ! जैसा कि आप को पता ही है कि मुबारक महीना रमज़ान शरीफ़ शुरूअ़ हो चुका है और आज दूसरा रोज़ा भी है तो आज के सबक़ में हम اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل बोर्ड पर लिखे हुए इन्ही मौज़ूआ़त (Topics) के बारे में पढ़ेंगे, वाइट बोर्ड पर लिख चुकने के बाद सर ने बच्चों की त़रफ़ रुख़ मोड़ते हुए बा क़ाइदा सबक़ की इब्तिदा की।

बच्चो ! रोज़ा बहुत पुरानी इ़बादत है यहां तक कि उ़लमाए इस्लाम ने लिखा है कि अल्लाह पाक के नबी ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक तमाम उम्मतों पर रोज़ा फ़र्ज़ रहा है। अलबत्ता पिछली क़ौमों के रोज़ों के दिन हम से मुख़्तलिफ़ थे जब कि इस्लाम में हिजरत के दूसरे साल हुक्म नाज़िल हुवा कि मुसलमानों पर पूरे माहे रमज़ान के रोज़े रखना फ़र्ज़ हैं। (सिरातुल जिनान, 1 / 230)

उसैद रज़ा : तो सर क्या इस से पहले मुसलमान रोज़ा नहीं रखते थे।

नहीं नहीं बेटा ! इस से पहले मुसलमानों पर दस मुह़र्रम के दिन का सिर्फ़ एक रोज़ा ही फ़र्ज़ था। चलें जी अब हम चलते हैं आज के दूसरे मौज़ूअ़ (Topic) की त़रफ़ यानी रोज़े के मक़ासिद, तो सब से पहला और अहम मक़्सद रोज़े का है तक़्वा यानी परहेज़गारी का ह़ुसूल, और येह तो वोह अहम मक़्सद है जो ख़ुद रोज़े फ़र्ज़ करने वाली ज़ात यानी अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में बयान किया है, वोह फ़रमाता है : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे तुम से पहले

लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (پ2، البقرۃ:183)

मुआविया रज़ा : सर तक़्वा (परहेज़गारी) क्या है?

बेटा तक़्वा येह है कि ख़ुद को अ़ज़ाब का सबब बनने वाली चीज़ यानी हर छोटे बड़े गुनाह से बचाया जाए। तो अच्छे काम करना और बुरे कामों से बचना, येह है रोज़े का मक़्सद ऐसा न हो कि खाना पीना तो छोड़ दें हम, लेकिन गाली, चोरी और लड़ाई झगड़ा न छोड़ें ऐसे तो रोज़े का मक़्सद ह़ासिल नहीं होता ! तभी तो हमारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ऐसे शख़्स के भूके प्यासे रहने की अल्लाह पाक को कोई ज़रूरत नहीं है। तक़्वे की वज़ाह़त करने के बाद सर वाइट बोर्ड के पास आ खड़े हुए और एह़सास पर दाइरा लगाते हुए कहा : बच्चो रोज़े का दूसरा मक़्सद है एह़सास। यानी जब कोई शख़्स दिन भर भूका प्यासा रहेगा तो लाज़िमी सी बात है कि दिल में येह ख़याल आएगा कि मैं तो एक महीने में सब कुछ होते हुए भी खा पी नहीं सकता तो उन बे चारों की क्या ह़ालत होती होगी जो सारा साल ही ग़ुर्बत की वज्ह से हर रोज़ भूक बरदाश्त करते हैं, मैं तो सारा दिन भूका रह कर शाम में इफ़्तारी में मज़े की ग़िज़ाएं (Dishes) खाता हूं जब कि वोह तो भूके रहने के बाद भी मज़ीद भूक ही खाते हैं। तब दिल में ग़रीबों की मदद का एह़सास पैदा होगा और सदक़ा व ख़ैरात की त़रफ़ दिल माइल होगा और आप को पता है रमज़ान में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दीगर इबादात के साथ साथ सदक़ा व ख़ैरात का भी ख़ास एहतिमाम फ़रमाया करते थे तभी तो रमज़ानुल मुबारक में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत के मुतअ़ल्लिक़ आप के चचा के बेटे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا कहते हैं कि आप की सख़ावत की बरकात का मुक़ाबला तेज़ हवा न कर पाती। (بخاری، 1/10، حدیث:6)

सर ख़ामोश हुए तो कामरान ने पूछा : सर जी किरदार साज़ी से क्या मुराद है?

सर बिलाल : जी जी बेटा मैं उसी त़रफ़ आ रहा हूं, यानी पूरे एक माह के रोज़े जो हम पर फ़र्ज़ किये गए हैं उस का एक मक़्सद येह भी है कि रमज़ान की बरकत से जो हम ने नेकियां शुरूअ़ की हों वोह हमारी ज़िन्दगी का बा क़ाइदा ह़िस्सा बन जाएं यानी हमारा येह ज़ेहन हो कि रमज़ानुल मुबारक गुज़र जाने के बाद भी इसी त़रह़ इबादत करते रहना है। रमज़ान में तरावीह़ भी पढ़ते थे तो रमज़ान के बाद कम अज़ कम पांचों नमाज़ें पाबन्दी के साथ पढ़ते रहें, रमज़ान में रोज़ाना एक पारह पढ़ते थे तो रमज़ान के बाद कम अज़ कम रोज़ाना एक सफ़ह़ा ही क़ुरआने पाक का पढ़ते रहें, रमज़ान में रोज़ाना इफ़्तारी पड़ोस में भिजवाते थे तो रमज़ान के बाद कम अज़ कम हफ़्ते में एक बार कोई अच्छी चीज़ घर बने तो उस में से पड़ोस में भिजवा दी जाए, यूं मत़लब कि वोह सारे अच्छे काम जो रमज़ान में करते थे और वोह सारे बुरे काम जिन से रमज़ान में बचते थे पूरे साल बल्कि पूरी ज़िन्दगी का ह़िस्सा बना लें तब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या भी अच्छी और आख़िरत भी अच्छी होगी। सर ने लेक्चर ख़त्म करते हुए टेबल पर रखी अपनी चीज़ें समेटना शुरूअ़ कर दी थीं।

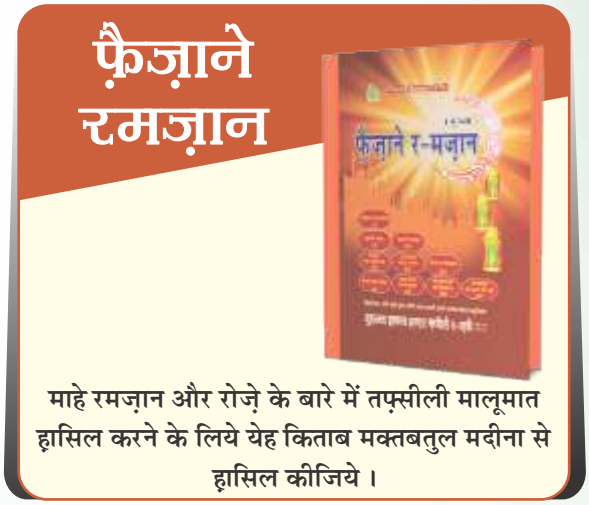

माहे रमज़ान और रोज़े के बारे में तफ़्सीली मालूमात ह़ासिल करने के लिये येह किताब मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिये।

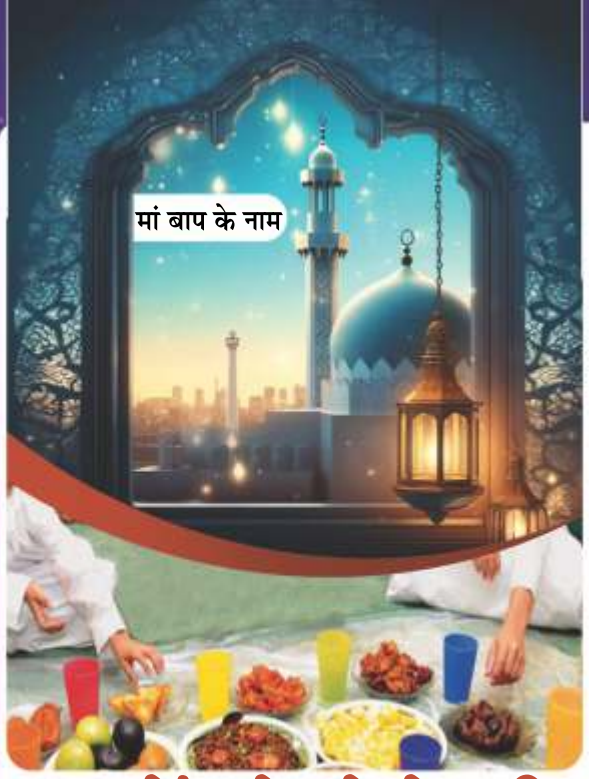

बच्चों को रोज़े की आ़दत कैसे डालें

वालिदैन की येह ख़्वाहिश होती है कि हमारे बच्चे क़ाबिल भी हों और नेक भी हों। यक़ीनन येह ख़्वाहिश क़ाबिले तारीफ़ है। ऐसी सोच और रवय्या ही क़ौमों की तामीर व तरक़्क़ी का ज़रीआ़ बनता है। जिस से एक ख़ूबसूरत और पाकीज़ा मुआ़शरा बनता है। हमारे बच्चे हमारी ज़ेरे निगरानी होते हैं लिहाज़ा उन के नफ़्अ़ व नुक़्सान के ज़िम्मेदार भी हम हैं। ज़ौक़े इ़बादत बच्चों में छोटी उ़म्र ही से उजागर किया जाए ताकि वक़्त के साथ साथ येह आ़दत पुख़्ता होती चली जाए और हमारे बच्चे दुन्या के साथ साथ आख़िरत की तय्यारी के मैदान में भी आगे बढ़ते चले जाएं।

रोज़ा एक बदनी इ़बादत है जिस के बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात और तिब्बी फ़वाइद भी हैं। हम भी चाहते हैं कि हमारे बच्चे की रोज़ा कुशाई हो हमारा बच्चा भी रोज़ेदार बन जाए तो उस के लिये हम छोटे बच्चों और बुलूग़त तक पहुंचने वाले बच्चों सभी के लिये वालिदैन को कुछ मुफ़ीद मश्वरे पेश कर रहे हैं। जिन की मदद से आप अपने बच्चों को रोज़ादार बनाने में मुआ़विन व मददगार बन सकते हैं। वोह क्या त़रीक़े और अन्दाज़ हैं आइये ! जानते हैं।

बच्चों को रोज़े की अहमिय्यत समझाएं

बच्चों को आसान और दिलचस्प अन्दाज़ में रोज़े की फ़ज़ीलत और मक़्सद बताएं। उन्हें समझाएं कि रोज़ा अल्लाह की रिज़ा और महब्बत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है। तरग़ीब के लिये क़ुरआने करीम की आयात और अह़ादीसे मुबारका सुनाएं।

तदरीजी तरबिय्यत दें

बहुत ही छोटा बच्चा है तो इब्तिदा में पूरा रोज़ा रखने पर ज़ोर न दें बल्कि "**निस्फ़ दिन**" या "**चन्द घन्टों**" का रोज़ा रखवाएं। बच्चे जब चन्द रोज़े रखने के आ़दी हो जाएं तो आहिस्ता आहिस्ता पूरे दिन के रोज़े की आ़दत डालें। रोज़े को महब्बत और ख़ुशी के साथ मुतआ़रिफ़ करवाएं। रोज़े को सख़्ती या बोझ के त़ौर पर पेश न करें। बच्चों को बताएं कि रोज़ा रखना एक एज़ाज़ है और अल्लाह पाक रोज़ादारों से महब्बत फ़रमाता है। उन्हें रमज़ान की फ़ज़ीलत के क़िस्से सुनाएं, जैसे "**जन्नत के दरवाज़े खुलने**" और "**शैत़ान के क़ैद होने**" का तज़्किरा।

सीरते नबवी ﷺ के वाक़िआ़त सुनाएं

नबिय्ये करीम ﷺ का रोज़ेदार बच्चों के साथ महब्बत भरा रवय्या बयान करें।

सह़री और इफ़्त़ारी को ख़ास बनाएं

बच्चों के लिये सह़री और इफ़्त़ार के वक़्त उन के पसन्दीदा खाने तय्यार करें ताकि वोह शौक़ से रोज़ा रखें। उन्हें सह़री के वक़्त उठने की तरग़ीब दें और इफ़्त़ारी के वक़्त दुआ़ मांगने की आ़दत डालें।

ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें

बच्चों के पहले रोज़े को "**रोज़ा कुशाई**" की सूरत में ख़ास बनाएं। उन की तारीफ़ करें और उन्हें इन्आ़म

दें, जैसे छोटे तोहफ़े या उन की पसन्दीदा सरगर्मी में शामिल करना। रोज़े रखने पर ख़ानदान के दीगर अफ़राद के सामने उन की हौसला अफ़्ज़ाई करें।

बच्चों को रमज़ान की इबादात में शामिल करें

बच्चों को तरावीह, तिलावते क़ुरआन और दुआ में शरीक करें ताकि उन्हें रमज़ान का माहौल महसूस हो। उन्हें नेकी के छोटे छोटे काम जैसे इफ़्तार का दस्तर ख़्वान लगाने, खजूर तक़्सीम करने या दुआएं याद करने की तरग़ीब दें।

बच्चों को सब्र और ख़ुद पर कन्ट्रोल सिखाएं

रोज़े का मक़्सद बच्चों को समझाएं कि येह सब्र, ज़िब्ते नफ़्स और अल्लाह के अहकाम की तामील का सबक़ देता है। उन्हें बताएं कि भूक और प्यास बरदाश्त करना अज्र का बाइस है।

कहानियों और क़िस्सों के ज़रीए तरबिय्यत

बच्चों को सहाबए किराम के बच्चों की रोज़ेदारी के क़िस्से सुनाएं। इस्लामी कहानियां सुनाएं जिन में सब्र, इबादत और अल्लाह की महब्बत की तालीम हो।

उन की सेहत का ख़याल रखें

छोटे बच्चों को रोज़ा रखने पर मजबूर न करें और उन की सेहत को नज़र अन्दाज़ न करें। उन्हें समझाएं कि रोज़ा रखना इबादत है लेकिन अगर सेहत ख़राब हो जाए तो रोज़ा छोड़ना भी शरीअत का हिस्सा है।

दुआ और नेक निय्यती की तरग़ीब दें

बच्चों को बताएं कि रोज़े में मांगी गई दुआएं क़बूल होती हैं। इफ़्तारी के वक़्त दुआ करने की आदत डालें और उन के दिल में अल्लाह की महब्बत पैदा करें।

अमली मिसाल बनें

बच्चे हमेशा अपने वालिदैन और बड़ों की नक़्ल करते हैं। ख़ुद भी ख़ुशी और महब्बत के साथ रोज़े रखें और नमाज़, तिलावत और दुआ का एहतिमाम करें ताकि बच्चे आप को देख कर सीखें।

भूक बरदाश्त करने का हौसला दें

बच्चों को समझाएं कि भूक और प्यास बरदाश्त करने का सिला अल्लाह पाक जन्नत की सूरत में देगा। उन्हें रोज़े के सवाब और रोज़ादारों के लिये जन्नत में "बाबुर्रय्यान" के बारे में बताएं कि इसी दरवाज़े से क़ियामत के दिन रोज़ादार जन्नत में दाख़िल होंगे।

मोहतरम क़ारिईन!

ब हैसिय्यते वालिदैन येह हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम अपनी औलाद की तालीमो तरबिय्यत में कोई कमी न छोड़ें, अपने हिस्से की पूरी कोशिश करें। आप उस वक़्त तक अपनी औलाद की अच्छी तरबिय्यत नहीं कर सकते जब तक आप ख़ुद अपनी शख़्सिय्यत में बेहतरी और अपनी इस्लाह की कोशिश नहीं करेंगे। अपने प्यारे बच्चों व बच्चियों को रोज़ादार बनाने से पहले आप ख़ुद मिसाल बनें। आप रोज़े के हवाले से येह बातें ज़ेहन नशीन कर लें।

रोज़ा क़ुर्बते इलाही की सीढ़ी है, जिस में भूक की तक्लीफ़, नेमतों की क़द्र सिखाती है। रोज़ा वोह ख़ामोश दुआ है जिस में बन्दा अपनी ज़बान बन्द कर लेता है, मगर उस का दिल सरापा बन्दगी बन जाता है। रोज़ेदार का भूका रहना दर अस्ल दिल को ईमान और सब्र से सैराब करने का ज़रीआ है।

रोज़ा येह पैग़ाम देता है कि ख़ुद पर क़ाबू पाना ही अस्ल आज़ादी है। रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो इन्सान को अपनी हुदूद में रहते हुए रब की अज़मत का एहसास दिलाती है। रोज़े का हर लम्हा एक तरबिय्यत है, जिस में भूक का कर्ब दूसरों की तक्लीफ़ का एहसास बन जाता है। रोज़ा अल्लाह से महब्बत की वोह अलामत है, जहां बन्दा अपनी ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर के अपने ख़ालिक़ की रिज़ा को तरजीह देता है। अल्लाह करीम हमें और हमारी नस्लों को इबादत गुज़ार बनाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बेटियों कि तरबिय्यत

ईवेन्ट्स और बेटियों के मामूलात

फ़ी ज़माना बहुत सी ऐसी मुस्लिम ख़वातीन जो मग़रिबी तहज़ीब से मुतअस्सिर हैं वोह शर्मो ह़या, पर्दादारी, रहन सहन और चाल चलन के मुतअ़द्दद मुआ़मलात में इस्लामी त़र्ज़े अ़मल अपनाने में शर्म व आ़र महसूस करती हैं मगर जिन ख़वातीन को इस्लामी शुऊ़र नसीब है और वोह इस्लामी मुआ़शरे में ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं या इस्लामी कुतुबो रसाइल से शग़फ़ (interest) रखती हैं उन्हें इस्लाम का हर पहलू शहद व शीर से ज़ियादा शीरीं (Sweeter than honey and milk) महसूस होता है।

ईमान और अल्लाह रसूल से महब्बत का तक़ाज़ा येह है कि इस्लाम के तमाम अह़काम समेत पर्दा व ह़या के इस्लामी अह़कामात पर भी उसी त़रह़ मज़बूती से अ़मल किया जाए जिस त़रह़ अवाइले इस्लाम की ख़वातीन ने अ़मल किया। वोह किस क़दर मुक़द्दस और अ़ज़ीम औ़रतें थीं जिन्हों ने इस दुन्या को बेहतरीन उ़लमा अ़त़ा किये। वोह माएं वोह बीवियां अ़ज़ीम होंगी जिन्हों ने अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात की इत़ाअ़त कर के ख़ुद को कामयाब बना लिया। क़ौम को अपनी नेक तरबिय्यत से नेक और बहादुर बेटे दिये। आज की औ़रत को अगर पर्दे की तल्क़ीन करें तो उन का जवाब होता है कि पर्दा आंखों का होता है। ऐसी औ़रतों को किस त़रह़ समझाएं कि पर्दा करेंगी तो आप फ़ितने से महफ़ूज़ रहेंगी।

बेटी को सह़ीह़ तरबिय्यत देने और उन्हें मुआ़शरे का सह़ीह़ किरदार अदा करने का सबक़ मां की गोद से ही मिलना चाहिये क्यूंकि बेटी अपनी मां की तरबिय्यत और बाप की निगहबानी से ही मुआ़शरे का अहम तरीन जुज़्व बनती है। इस्लाम ने औ़रत को पर्दे व ह़िजाब की सूरत में जो अ़ज़मत अ़त़ा की, अ़हदे रिसालत की बुलन्द हिम्मत औ़रतों ने उसे इस क़दर अपनाया कि ह़िजाब आज़ाद मुसलमान औ़रत की अ़लामत बन गया। पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और अल्लाह पाक की इत़ाअ़त की त़रफ़ माइल होगा।

अफ़्सोस ! आज कल ईवेन्ट्स में हमारी बेटियों का ओढ़ने पहनने, सज धज करने और नुमूदो नुमाइश वग़ैरा में जो अन्दाज़ है बाज़ नादान ख़ुद अपनी बेटियों को उन ईवेन्ट्स पर रस्मों के नाम पर ऐसा करने को कहते हैं और कहते हैं कि येही तो रौनक़ है, सारा साल बा पर्दा रहने वाली बेटी भी मुख़्तलिफ़ ईवेन्ट्स में बे पर्दा नज़र आती है, लिबास ऐसा होता है कि बदन के आज़ा ज़ाहिर होते हैं सर से दोपट्टा भी ग़ाइब होता है। अल्लाह रसूल के अह़कामात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के बिग़ैर भी तक़रीबात अन्जाम दी जा सकती हैं जैसा कि दीनी ज़ेहन रखने वाले मोह़तात़ लोग करते हैं कि ईवेन्ट्स में लेडीज़ के लिये अलग और जेन्ट्स के लिये अलग एहतिमाम किया जाता है, बेटियों के लिबास पर तवज्जोह

दी जाती है दोपट्टा सर पर रहते हुए अच्छा और बा पर्दा लिबास मुन्तख़ब किया जाता है। अच्छा और ब्रान्डेड लिबास पहनना मन्अ़ नहीं बल्कि हर जाइज़ ज़ीनत अपनाई जा सकती है मगर ज़रूरी येह है कि सिनफ़े नाज़ुक अपनी ज़ीनत ग़ैर मर्दों पर ज़ाहिर न करे।

अगर पर्दे और रस्मो रवाज के मुआ़मले में मुआ़शरती रुकावट आए तो हमें येह बात ज़ेहन नशीन रखनी चाहिये कि हम रस्मो रवाज के नहीं बल्कि क़ुरआनो ह़दीस के पाबन्द हैं। हमें अल्लाह व रसूल के अह़कामात मानने चाहिये और येह अह़कामात जानने के लिये हमें उ़लमाए किराम का दामन पकड़ना होगा। घर में ख़ुशी ग़मी की कोई भी तक़रीब हो उसे शरीअ़त के मुत़ाबिक़ करने के लिये किसी आ़शिक़े रसूल मुफ़्तिये इस्लाम से राहनुमाई ली जाए कि हमारे हां मंगनी या वलीमे की तक़रीब है उस में हमें क्या क्या एह़तियात़ें करनी चाहियें। मुआ़शरे को रस्मो रवाज छुड़ा कर शरीअ़त का पाबन्द बनाने के लिये दावते इस्लामी को परवान चढ़ाना होगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी से वाबस्ता अफ़राद का येह ज़ेहन बना होता है कि हमें शरई अह़कामात के मुत़ाबिक़ अपने मुआ़मलात अन्जाम देने हैं।

हमारे मुआ़शरे में मंगनी और शादी के ईवेन्ट्स पर मुख़्तलिफ़ रुसूमात अदा करने का बहुत ज़ियादा रवाज है। फिर हर अ़लाक़े, हर क़ौम और हर ख़ानदान की अपनी मख़्सूस रुसूम होती है। चूंकि येह रुसूम महज़ उ़र्फ़ की बुन्याद पर अदा की जाती हैं और कोई भी उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब तसव्वुर नहीं करता लिहाज़ा जब तक किसी रस्म में कोई शरई क़बाह़त न पाई जाए उसे ह़राम व नाजाइज़ नहीं कह सकते। अब देखना येह है कि मुख़्तलिफ़ ईवेन्ट्स में हमारी बेटियों के मामूलात क्या होते हैं? आया वोही ज़मानए जाहिलिय्यत वाली (रस्मों के नाम पर) बे पर्दगी, बे ह़याई और गुनाहों की भरमार या अ़क़्लो शुऊ़र रखते हुए शरई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ मामूलात होते हैं? फ़ी ज़माना रुसूमात के अपनाए जाने वाले कसीर त़ौर त़रीक़े नाजाइज़ हैं लेकिन ह़या व शर्म को नज़र अन्दाज़ कर के उन रुसूमात को ज़रूर पूरा किया जाता है। अक्सर घरों में रवाज है कि शादी के अय्याम में रिश्तेदार और मह़ल्ले की औ़रतें जम्अ़ हो कर ढोलक बजाती और गीत गाती हैं, उन में जवान कुंवारी लड़कियां भी शरीक होती हैं। इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया अश्आ़र पढ़ना या सुनना उन के अख़्लाक़ व आ़दात व जज़्बात पर क्या असर करेगा येह बात ऐसी नहीं जो समझ में न आ सके। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, 2 / 105) जवान लड़कियों का गाना बजाना ह़राम है। औ़रत की आवाज़ का भी ना महरमों से पर्दा होना ज़रूरी है। इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि अगर औ़रत नमाज़ पढ़ रही हो और कोई आगे से गुज़रना चाहे तो येह औ़रत سُبْحَانَ اللّٰه ! कह कर उस की इत्तिलाअ़ न दे बल्कि ताली से ख़बर दे यानी सीधे हाथ की उंगलियां उल्टे हाथ की पुश्त (back) पर मारे। (ردالمحتار علی الدر المختار، 2/486) जब आवाज़ की इस क़दर पर्दादारी है तो येह मुरवज्जह (Prevalent) गाने और बाजे का क्या पूछना।

इसी त़रह़ मेहंदी की रस्म है, रुख़्सती के मौक़अ़ पर दूध पिलाई और जूता छुपाई की रस्म अदा की जाती है जिस में ऐसी ऐसी ख़ुराफ़ात होती हैं कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ। बाज़ तो इतने बेबाक होते हैं कि अगर शादी में येह ह़राम काम न हों तो उसे ग़मी और जनाज़े से ताबीर करते हैं। येह ख़याल नहीं करते कि एक तो गुनाह और शरीअ़त की मुख़ालिफ़त है, दूसरे माल ज़ाएअ़ करना, तीसरे तमाम तमाशाइयों के गुनाह का येही सबब है और सब के मज्मूए़ के बराबर उस पर गुनाह का बोझ। मगर आह! एक वक़्ती ख़ुशी में येह सब कुछ कर लिया जाता है। गुनाह की लज़्ज़त थोड़ी देर की होती है मगर गुनाह नामए आमाल में हमेशा के लिये लिखा जाता है। ख़ुलासए कलाम येह कि ❁ एक तो हर काम से पहले शरई रहनुमाई लें। ❁ बा पर्दा रहें और लिबास दुरुस्त पहनें। ❁ ईवेन्ट की जगह मर्दों की आमदो रफ़्त न हो। ❁ किसी भी ग़ैर शरई काम में ह़िस्सा न लें। मुसलमान होने की हैसिय्यत से हम पर लाज़िम है कि अपने हर काम को शरीअ़त के मुत़ाबिक़ करें अल्लाह व रसूल की मुख़ालिफ़त से बचें इसी में दीनो दुन्या की भलाई है। ऐ काश! सब को चादरे ह़या नसीब हो जाए।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 स्टडी टूर के लिये शरई मसाफ़त तक बिग़ैर महरम जाना ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस बारे में कि मैं एक यूनीवर्सिटी में पढ़ती हूं। हमारी यूनीवर्सिटी से हर साल किसी न किसी अ़लाक़े में मुख़्तलिफ़ मक़ासिद (तफ़रीह, ग्रूप टास्क, तारीख़ी मक़ामात की मालूमात, तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों का निखार) के तह़त स्टडी टूर (Study Tour) जाते रहते हैं। इस साल हमारी यूनीवर्सिटी का टूर 92 किलो मीटर से ज़ाइद की दूरी पर एक शहर में जा रहा है। इस टूर में सिर्फ़ स्टूडन्टस (लड़के, लड़कियां) और असातिज़ा ही जा सकते हैं घर के किसी फ़र्द महरम वग़ैरा को साथ ले कर जाने की इजाज़त नहीं होती लेकिन यूनीवर्सिटी इन्तिज़ामिया का कहना है जो स्टूडन्टस हमारे साथ जाएंगी उन की मुकम्मल देख भाल की ज़िम्मेदारी इन्तिज़ामिया की होगी। तो रहनुमाई फ़रमाएं कि क्या मैं दीगर स्टूडन्टस और इन्तिज़ामिया के साथ स्टडी टूर पे जा सकती हूं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दरयाफ़्त कर्दा सूरत में आप का दीगर स्टूडन्टस और यूनीवर्सिटी इन्तिज़ामिया के साथ स्टडी टूर (Study Tour) पर जाना जाइज़ नहीं। क्यूंकि औ़रत का शौहर या महरम के बिग़ैर तीन दिन यानी 92 किलो मीटर की राह का सफ़र नाजाइज़ व ह़राम व गुनाह है। नीज़ हमारी प्यारी शरीअ़त में तो औ़रत को शौहर या महरम के बिग़ैर ह़ज या उ़मरे जैसे मुक़द्दस सफ़र पर जाने की इजाज़त नहीं तो स्टडी टूर पर जाने की इजाज़त कैसे होगी ?

नीज़ इस त़रह़ के स्टडी टूर में उ़मूमन मज़ीद क़बाह़तें भी पाई जाती हैं मसलन नौजवान मर्द व औ़रत इकठ्ठे जाते हैं तो रास्ते में या वहां पहुंच कर लड़के लड़कियां आपस में हंसी मज़ाक़ करते हैं और इकठ्ठे तसावीर वग़ैरा बनाते हैं ह़ालांकि अजनबी मर्द व औ़रत का आपस में हंसी मज़ाक़ करना, बे तकल्लुफ़ी के साथ मेल जोल रखना, ना महरम मर्दो औ़रत का बे पर्दगी की ह़ालत में एक दूसरे के सामने आना और एक दूसरे की तसावीर बनाना, सख़्त ना जाइज़ो गुनाह और ह़राम है कि हर मुसलमान जानता है कि इस्लाम शर्मो ह़या का दर्स देता है, रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "الحیاء من الایمان" यानी ह़या ईमान से है। (ترمذی،3/406،حدیث:2016)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

2 दौराने एतिकाफ़ ह़ैज़ आ जाए तो ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि रमज़ान के आख़िरी अ़शरे में मस्जिदे बैत में एतिकाफ़ के दौरान अगर औ़रत को ह़ैज़ आ जाए, तो क्या उस से एतिकाफ़ टूट जाएगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे के एतिकाफ़ के दौरान अगर औ़रत को ह़ैज़ आ जाए, तो उस का एतिकाफ़ टूट जाएगा, क्यूंकि सुन्नत एतिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त़ है और रोज़े के लिये ह़ैज़ व निफ़ास से पाक होना ज़रूरी है। नीज़ इस सूरत में ह़ैज़ से पाक होने के बाद रमज़ान में या रमज़ान के बाद रोज़े के साथ एक दिन के एतिकाफ़ की क़ज़ा करना वाजिब है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

रमज़ानुल मुबारक के चन्द अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये
पहली रमज़ानुल मुबारक 471 हि.	यौमे विलादत हुज़ूर ग़ौसुल आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 ता 1446 हि. और किताब "ग़ौसे पाक के ह़ालात"
3 रमज़ानुल मुबारक 11 हि.	यौमे विसाल ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हि. और किताब "शाने ख़ातूने जन्नत"
3 रमज़ानुल मुबारक 1391 हि.	यौमे विसाल ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. और "फ़ैज़ाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी"
6 रमज़ानुल मुबारक 253 हि.	यौमे विसाल वलिय्ये कामिल ह़ज़रते इमाम सर्री सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. और "फ़ैज़ाने सर्री सक़ती"
10 रमज़ानुल मुबारक 10 सिने नबवी	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, 1440 हि. और रिसाला "फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा"
15 रमज़ानुल मुबारक 3 हि.	यौमे विलादत नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, रबीउ़ल अव्वल 1441 हि. और रिसाला "इमामे ह़सन की 30 ह़िकायात"
16 रमज़ानुल मुबारक 1164 हि.	यौमे विसाल ह़ज़रते सय्यिद आले मुह़म्मद मारहरवी बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि.
17 रमज़ानुल मुबारक 2 हि.	यौमे बद्र व शुहदाए बद्र	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, 1439 हि. और किताब "सीरते मुस्त़फ़ा, सफ़ह़ा 209"
17 रमज़ानुल मुबारक 57 या 58 हि.	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हि. और किताब "फ़ैज़ाने आइशा सिद्दीक़ा"
19 रमज़ानुल मुबारक 2 हि.	यौमे विसाल शहज़ादिये रसूल, ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. और "सीरते मुस्त़फ़ा, सफ़ह़ा 694"
20 रमज़ानुल मुबारक 8 हि.	फ़त्ह़े मक्का	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1440 हि. मई 2021 ई. और किताब "सीरते मुस्त़फ़ा, सफ़ह़ा 411"
21 रमज़ानुल मुबारक 40 हि.	यौमे शहादत मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1445 हि. और रिसाला "करामाते शेरे ख़ुदा"
21 रमज़ानुल मुबारक 203 हि.	यौमे विसाल ह़ज़रते इमाम अबुल ह़सन अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि.
22 रमज़ानुल मुबारक 1326 हि.	यौमे विसाल बिरादरे आला ह़ज़रत, मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 और 1439 हि.
26 रमज़ानुल मुबारक 1369 हि.	यौमे विलादत अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"या रब करम कर" के नौ हुरूफ़ की निस्बत से कम्प्यूटर वग़ैरा इस्तिमाल करने वालों के लिये 9 मदनी फूल

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

1 कम्प्यूटर मोनीटर की जगह कम्प्यूटर एल सी डी (L.C.D) या एल ई डी (L.E.D) आंखों के लिए कम नुक़्सान देह है।

2 कम्प्यूटर स्क्रीन (Screen) की रौशनी ज़ियादा तेज़ न रखें और न ही सेवर या ट्यूब लाईट का अ़क्स उस पर पड़ने दें।

3 स्क्रीन पर तवज्जोह रखने की कोशिश पल्कें झपकाना कम कर देती है जिस की वज्ह से आंखों में तक्लीफ़ हो सकती है, लिहाज़ा ह़स्बे मामूल पल्कें झपकाते रहिये।

4 पंखे (Fan) वग़ैरा की हवा बराहे रास्त आंखों पर न पड़ने दीजिये।

5 आंखों और स्क्रीन का दरमियानी फ़ास्ला 2 से अढ़ाई फुट रखिये।

6 स्क्रीन को आंखों से 4 या 5 इंच (Inch) नीचे होना चाहिये।

7 अगर नज़र के ऐ़नक (Glasses) इस्तिमाल करते हैं तो कम्प्यूटर पर काम करते वक़्त भी उसे पहने रहिये

8 हर 19 मिनट बाद स्क्रीन से नज़रें हटा कर 19 फुट दूर रखी चीज़ को 19 सकन्ड देख लीजिये। मसलन सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का मॉडल (Model) रख लिया और हो भी मदीने के रुख़ पर।

9 ह़दीस शरीफ़ में है : तमाम सुर्मों में बेहतर सुर्मा इस्मिद है कि येह निगाह को रौशन करता और पल्कें उगाता है। (ابن ماجہ، 4/115، حدیث:349) हो सके तो सोते वक़्त रोज़ाना इस्मिद सुर्मा लगा लिया करें।

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.